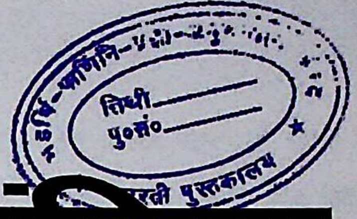








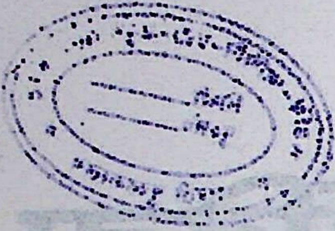
ओ३म्



सामवेद संहिता



दिव्य प्रकाशन
पतञ्जलि योगपीठ, दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट)
दिल्ली हरिद्वार रोड, बहादराबाद
हरिद्वार-२४९४०२



प्रकाशक : दिव्य प्रकाशन
पतञ्जलि योगपीठ, दिव्य योग मन्दिर (ट्रस्ट)
दिल्ली हरिद्वार रोड, बहादराबाद
हरिद्वार-249402, उत्तराखण्ड
ई-मेल : divyayoga@rediffmail.com
वैबसाइट : www.divyayoga.com
दूरभाष : (01334) 244107, 240008, 246737
संस्करण : 2009
मूल्य : 130.00
मुद्रक : आर्य प्रकाशन. दिल्ली
राधा प्रेस, कैलाशनगर, दिल्ली-३१

प्ररोचना

परमपिता परमात्मा ने सृष्टि रचना के प्रारम्भ में ही मानव मात्र के कल्याण के लिए अग्नि; वायु, आदित्य एवं अंगिरा नामक ऋषियों के पवित्र अन्तःकरणों में वेदों का पवित्र ज्ञान प्रकाशित किया था। वेदों की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए महर्षि मनु ने कहा था-'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्' अर्थात् समस्त धर्म का मूल वेद है। वेदों की सर्वज्ञानमयता प्रतिपादित करते हुए मनुस्मृति में कहा गया है-

यः कश्चित् कस्यचित् धर्मो मनुना प्रकीर्तितः।
स सर्वोऽभिहितो वेदे सर्वज्ञानमयो हि सः॥

इसी सत्य को महाभारतकार वेदव्यास ने इस प्रकार कहा-

आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः।

वेद के हजारों मन्त्रों में संसार का समस्त ज्ञान-विज्ञान समाहित है। न जाने कितने ऋषिमुनियों, वेदपाठी आचार्यो वेद कण्ठस्थ करने वाले ब्राह्मणों तथा याज्ञिकों ने अनेक कष्ट सहकर वेद-निधि की रक्षा की। वेदों का ज्ञान सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है। उसमें अध्यात्म, सांसारिकता के साथ-साथ मुक्ति का मार्ग प्रदर्शित करने वाला वैदिक-ज्ञान विश्व की अमूल्य निधि है। अनेक स्वनामधन्य वेद-भाष्यकारों ने वेदोदधि का मन्थन कर नाना प्रकार के अमूल्यरत्न विश्व को प्रदान किये हैं। वैदिक ज्ञान-गंगा ने न केवल भारतवासियों को अपितु सम्पूर्ण विश्व को आह्लादित किया है। लाखों, करोड़ों वर्षों बाद भी वेदमन्त्रों में एक अक्षर या मात्रा का कम अथवा अधिक न होना सिद्ध करता है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है और वेद पाठ करने वाले विप्रों ने सर्वात्मना इस ज्ञान की रक्षा की है।

कैसा था वह स्वर्णिय युग जब घर-घर में वेद की पावन ऋचाएँ गूँजती थी। शुद्ध पर्यावरण था। सर्वत्र प्रेम, सौहार्द, शान्ति का साम्राज्य था। ईश्वर विश्वासी, सत्य और सार्वभौमिक धर्म में आस्था रखने वाला, परोपकारी, देशभक्त, चरित्रवान्, वेदज्ञजनों से यह धरती स्वर्ग सम थी। किन्तु जैसे दिन के पश्चात् रात्रि और रात्रि के पश्चात् दिन, सुख के पश्चात् दुःख और दुःख के पश्चात् सुख यह सृष्टि का अनादि, अनन्त क्रम है, इसी क्रम से मध्यकाल में वेदों का अध्ययन- अध्यापन और श्रवण-श्रावण बाधित हो जाने से मानव, नाना प्रकार के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आत्मिक कष्टों से घिर गया, इन बहुविध दुःखों से छुटकारा पाने के लिए युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने पुनः वेद, यज्ञ और योग का मार्ग दिखाया। वर्तमान समय में योगऋषि पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज इस वेद, यज्ञ और योग की त्रिवेणी में स्नान करा कर असंख्य मानवों को सुख,

शान्ति, प्रेम एवं नवोल्लास प्रदान कर रहे हैं।

पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज के मार्गदर्शन में पतंजलि योगपीठ पुनः सम्पूर्ण विश्व का मार्गदर्शन करने हेतु कृतसंकल्प है। हम वेदालोक से विश्व को आलोकित करना चाहते हैं। वेदों की स्वतः प्रामाण्यता सर्वविदित है। चारों वेदों में अभिव्यक्त सार्वभौमिक सिद्धान्तों की प्रतिष्ठापना से संकुचित अवधारणाएं समाप्त होंगी, आध्यामित्क वातावरण का निर्माण होगा, परस्पर राग-द्वेष, शत्रुता, मनोमालिन्य का भाव समाप्त होगा।

ज्ञान पूर्वक श्रेष्ठ कर्म करने से जीवन में आनन्द गंगा प्रवाहित होने लगती है। जीने का अर्थ समझ में आता है। परमात्मा ने जिस उत्तम स्वरूप को प्राप्त करने के लिये मानव शरीर प्रदान किया, उसकी सार्थकता दृष्टिगोचर होती है। यही स्थिति वैदिक ज्ञान की है। ऋग्वेद के अध्ययन से जो शुद्ध ज्ञान प्राप्त किया, यजुर्वेद का अध्ययन कर यज्ञ, परोपकार, सेवा आदि श्रेष्ठ कर्मों से उस ज्ञान को सार्थक किया तो प्रभु के प्रेम की अपार वर्षा होने लगी। परमात्मा की आनन्दामृत की वर्षा से जब उपासक, अन्दर तक भीग गया तो वह भक्ति या उपासना के गीत गाने लगा। यही सामवेद है-उपासना का वेद। सामवेद की महिमा प्रतिपादित करते हुए योगेश्वर कृष्ण ने गीता में कहा था-

'वेदानां सामवेदोऽस्मि'

ज्ञान, कर्म, उपासना की त्रिवेणी में स्नान कर जीवन पवित्र होता है। सर्वत्र सामगान हो, प्रकृति भी हमारे साथ मिलकर सामगान करे, यही पतंजलि योगपीठ की कामना है।

अन्त में **सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।** तथा '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' का दिव्य सन्देश सर्वत्र गुंजायमान होगा। इसी भावना के साथ 'दिव्य प्रकाशन' के माध्यम से सामवेद संहिता आप वेदनिष्ठ श्रद्धालुओं के करकमलों में सस्नेह समर्पित है।

सादर

वेदानुरागी

आचार्य बालकृष्ण

(आचार्य बालकृष्ण)
महामन्त्री, पतंजलि योगपीठ
हरिद्वार (उत्तराखण्ड)

ओ३म्

सामवेद-संहिता

पूर्वार्चिकः

अथ आग्नेयं काण्डम्

अथ प्रथमोऽध्यायः

प्रथमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१, २, ४, ७, ९ भरद्वाजः; ३ मेधातिथिः; ५ उशनाः; ६ सुदीतिपुरुमीढौ तयोर्वान्यतरः; ८ वत्सः; १० वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री; २ शङ्कुमती पिपीलिकामध्या-गायत्री; ५ विराड्गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१. अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ १ ॥

२. त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः। देवेभिर्मानुषे जने ॥ २ ॥

३. अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ ३ ॥

४. अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया। समिद्धः शुक्र आहुतः ॥ ४ ॥

५. प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम्। अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ ५ ॥

६. त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातेः। उत द्विषो मर्त्यस्य ॥ ६ ॥

७. एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः। एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥ ७ ॥

८. आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित् सधस्थात्। अग्ने त्वां कामये गिरा ॥ ८ ॥

९. त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत। मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः ॥ ९ ॥

१०. अग्ने विवस्वदा भरास्मभ्यमूतये महे। देवो ह्यसि नो दृशे ॥ १० ॥

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१ आयुङ्क्ष्वाहिः; २ वामदेवः; ३, ८, ९ प्रयोगः; ४ मधुच्छन्दाः; ५, ७ शुनःशेपः; ६ मेधातिथिः; १० वत्सः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११. नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय ॥ १ ॥

१२. दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहममर्त्यम्। यजिष्ठमृञ्जसे गिरा ॥ २ ॥

१३. उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः। वायोरनीके अस्थिरन् ॥ ३ ॥

१४. उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि ॥ ४ ॥

१५. जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥ ५ ॥

१६. प्रति त्यं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे। मरुद्भिरग्न आ गहि ॥ ६ ॥

१७. अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः। सम्राजन्तमध्वराणाम् ॥ ७ ॥

१८. और्वभृगुवच्छुचिमप्रवानवदा हुवे। अग्निं समुद्रवाससम् ॥ ८ ॥

१९. अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः। अग्निमिन्धे विवस्वभिः ॥ ९ ॥

२०. आदित्प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिः पश्यन्ति वासरम्। परो यदिध्यते दिवि ॥ १० ॥

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१ प्रयोगः; २, ५ भरद्वाजः; ३, १० वामदेवः; ४, ६ वसिष्ठः; ७ विरूपः; ८ शुनःशेपः; ९ गोपवनः; ११ प्रस्कण्वः; १२ मेधातिथिः; १३ सिन्धुद्वीप आम्बरीषः, त्रित आप्त्यो वा; १४ उशनाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ विराड्गायत्री; २-१४ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

२१. अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥ १ ॥

२२. अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यंसद्विश्वं न्या३त्रिणम्। अग्निर्नो वंसते रयिम् ॥ २ ॥

२३. अग्ने मृड महाँ अस्यय आ देवयुं जनम्। इयेथ बर्हिरासदम् ॥ ३ ॥

२४. अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति स्म देव रीषतः। तपिष्ठैरजरो दह ॥ ४ ॥

२५. अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः। अरं वहन्त्याशवः ॥ ५ ॥

२६. नि त्वा नक्ष्य विश्पते द्युमन्तं धीमहे वयम्। सुवीरमग्न आहुत ॥ ६ ॥

२७. अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति ॥ ७ ॥

२८. इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम्। अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥८॥

२९. तं त्वा गोपवनो गिरा जनिष्ठदग्ने अङ्गिरः। स पावक श्रुधी हवम् ॥९॥

३०. परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे ॥१०॥

३१. उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥११॥

३२. कविमग्निमुप स्तुहि सत्यधर्माणमध्वरे। देवममीवचातनम् ॥१२॥

३३. शं नो देवीरभिष्टये शं नो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः ॥१३॥

३४. कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते। गोषाता यस्य ते गिरः ॥१४॥

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१, ३ शंयुः; २, ५, ८, ९ भर्गः; ४ वसिष्ठः; ६ प्रस्कण्वः; ७ तृणपाणिः;
१० सोभरिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३५. यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥१॥

३६. पाहि नो अग्न एकया पाह्यू३त द्वितीयया ।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो ॥२॥

३७. बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवत् पावक दीदिहि ॥३॥

३८. त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वं दयन्त गोनाम् ॥४॥

३९. अग्ने जरितर्विश्पतिस्तपानो देव रक्षसः ।
अप्रोषिवान् गृहपते महाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः ॥५॥

४०. अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥६॥

४१. त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः ॥७॥

४२. त्वमित् सप्रथा अस्यग्ने त्रातर्ऋतः कविः ।
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः ॥ ८ ॥

४३. आ नो अग्ने वयोवृधं रयिं पावक शंस्यम् ।
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती सुयशस्तरम् ॥ ९ ॥

४४. यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये ॥ १० ॥

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—१ वसिष्ठः; २ भर्गः; ३, ७ सोभरिः; ४ मनुः; ५ सुदीतिपुरुमीढौ; ६ प्रस्कण्वः; ८ मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च; ९ विश्वामित्रः; १० कण्वः ॥ देवता—१-७, ९, १० अग्निः; ८ इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

४५. एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे ।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥ १ ॥

४६. शेषे वनेषु मातृषु सं त्वा मर्तास इन्धते ।
अतन्द्रो हव्यं वहसि हविष्कृत आदिद्देवेषु राजसि ॥ २ ॥

४७. अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः ।
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः ॥ ३ ॥

४८. अग्निरुक्थे पुरोहितो ग्रावाणो बर्हिरध्वरे ।
ऋचा यामि मरुतो ब्रह्मणस्पते देवा अवो वरेण्यम् ॥ ४ ॥

४९. अग्निमीडिष्वावसे गाथाभिः शीरशोचिषम् ।
अग्निं राये पुरुमीढ श्रुतं नरोऽग्निः सुदीतये छर्दिः ॥ ५ ॥

५०. श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः ।
आ सीदतु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावभिरध्वरे ॥ ६ ॥

५१. प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना ।
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥ ७ ॥

५२. अध ज्मो अध वा दिवो बृहतो रोचनादधि ।
अया वर्धस्व तन्वा गिरा ममा जाता सुक्रतो पृण ॥८॥

५३. कायमानो वना त्वं यन्मातॄरजगन्नपः ।
न तत्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्निहाभुवः ॥९॥

५४. नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते ।
दीदेथ कण्व ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः ॥१०॥

इति प्रथमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ प्रथमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

षष्ठी दशतिः

ऋषिः—१, ७ वसिष्ठः; २, ३, ५ कण्वः; ४ सोभरिः; ६ उत्कीलः; ८ विश्वामित्रः ॥
देवता—१, ४-८ अग्निः; २ ब्रह्मणस्पतिः; ३ यूपः ॥ छन्दः—बृहती ॥
स्वरः—मध्यमः ॥

५५. देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम् ।
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद् वो देव ओहते ॥१॥

५६. प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता ।
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः ॥२॥

५७. ऊर्ध्व ऊ षु ण ऊतये तिष्ठा देवो न सविता ।
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे ॥३॥

५८. प्र यो राये निनीषति मर्तो यस्ते वसो दाशत् ।
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम् ॥४॥

५९. प्र वो यह्वं पुरूणां विशां देवयतीनाम् ।
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिर्वृणीमहे यं समिदन्य इन्धते ॥५॥

६०. अयमग्निः सुवीर्यस्येशे हि सौभगस्य ।
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम् ॥६॥

६१. त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे ।
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि यासि च वार्यम् ॥ ७ ॥

६२. सखायस्त्वा ववृमहे देवं मर्त्तास ऊतये ।
अपां नपातं सुभगं सुदंससं सुप्रतूर्तिमनेहसम् ॥ ८ ॥

सप्तमी दशतिः

ऋषिः—१ श्यावाश्ववामदेवौ; २ उपस्तुतो वार्ष्टिहव्यः; ३ बृहदुक्थः; ४ कुत्सः; ५, ६ भरद्वाजः; ७ वामदेवः; ८, १० वसिष्ठः; ९ त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१, ३, ५-९ त्रिष्टुप्; २, ४ जगती; १० त्रिपाद् विराड् गायत्री ॥ स्वरः—१, ३, ५-९ धैवतः; २, ४ निषादः; १० षड्जः ॥

६३. आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम् ।
इडस्पदे नमसा रातहव्यं सपर्यता यजतं पस्त्यानाम् ॥ १ ॥

६४. चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावन्वेति धातवे ।
अनूधा यदजीजनदधा चिदा ववक्षत्सद्यो महि दूत्यां३ चरन् ॥ २ ॥

६५. इदं त एकं पर ऊ त एकं तृतीयेन ज्योतिषा सं विशस्व ।
संवेशनस्तन्वे३ चारुरेधि प्रियो देवानां परमे जनित्रे ॥ ३ ॥

६६. इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ४ ॥

६७. मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् ।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥ ५ ॥

६८. वि त्वदापो न पर्वतस्य पृष्ठादुक्थेभिरग्ने जनयन्त देवाः ।
तं त्वा गिरः सुष्टुतयो वाजयन्त्याजिं न गिर्ववाहो जिग्युरश्वाः ॥ ६ ॥

६९. आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम् ॥ ७ ॥

७०. इन्धे राजा समर्यो नमोभिर्यस्य प्रतीकमाहुतं घृतेन ।
नरो हव्येभिरीडते सबाध आग्निरग्रमुषसामशोचि ॥ ८ ॥

७१. प्र केतुना बृहता यात्यग्निरा रोदसी वृषभो रोरवीति।
दिवश्चिदन्तादुपमामुदानडपामुपस्थे महिषो ववर्ध॥ ९॥

७२. अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम्।
दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम् ॥ १०॥

अष्टमी दशतिः

ऋषिः—१ बुधगविष्ठिरौ; २, ५ वत्सप्रीः; ३ भरद्वाजः; ४, ७ विश्वामित्रः; ६ वसिष्ठः; ८ पायुः॥ देवता—१, २, ४-८ अग्निः; ३ पूषा॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥
स्वरः—धैवतः॥

७३. अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्।
यह्वाइव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ॥ १॥

७४. प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरैरमूरं पुरां दर्माणम् ।
नयन्तं गीर्भिर्वना धियं धा हरिश्मश्रुं न वर्मणा धनर्चिम्॥ २॥

७५. शुक्रं ते अन्यद्यजतं ते अन्यद् विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि।
विश्वा हि माया अवसि स्वधावन्भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु॥ ३॥

७६. इडामग्ने पुरुदंसं सनिं गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥ ४॥

७७. प्र होता जातो महान्नभोविन्नृषद्मा सीददपां विवर्ते ।
दधद्यो धायी सुते वयांसि यन्ता वसूनि विधते तनूपाः॥ ५॥

७८. प्र सम्राजमसुरस्य प्रशस्तं पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य ।
इन्द्रस्येव प्र तवसस्कृतानि वन्दद्वारा वन्दमाना विवष्टु॥ ६॥

७९. अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भइवेत् सुभृतो गर्भिणीभिः।
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः ॥ ७॥

८०. सनादग्ने मृणसि यातुधानान्न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः।
अनु दह सहमूरान् कयादो मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः॥ ८॥

नवमी दशतिः

ऋषिः—१ गय आत्रेयः; २ वामदेवः; ३, ४ भरद्वाजः; ५ मृक्तवाहा द्वितः; ६ वसूयव आत्रेयः; ७, ९ गोपवनः; ८ पूरुरात्रेयः; १० वामदेवः, कश्यपो वा मारीचो मनुर्वा वैवस्वतः; उभौ वा॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

८१. अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमध्रिगो ।
प्र नो राये पनीयसे रत्सि वाजाय पन्थाम् ॥ १ ॥

८२. यदि वीरो अनु ष्यादग्निमिन्धीत मर्त्यः ।
आजुह्वद्धव्यमानुषक् शर्म भक्षीत दैव्यम् ॥ २ ॥

८३. त्वेषस्ते धूम ऋण्वति दिवि संच्छुक्र आततः ।
सूरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ॥ ३ ॥

८४. त्वं हि क्षैतवद् यशोऽग्ने मित्रो न पत्यसे ।
त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि ॥ ४ ॥

८५. प्रातरग्निः पुरुप्रियो विश स्तवेतातिथिः ।
विश्वे यस्मिन्नमर्त्ये हव्यं मर्तास इन्धते ॥ ५ ॥

८६. यद् वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो ।
महिषीव त्वद् रयिस्त्वद् वाजा उदीरते ॥ ६ ॥

८७. विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।
अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥ ७ ॥

८८. बृहद् वयो हि भानवेऽर्चा देवायाग्नये ।
यं मित्रं न प्रशस्तये मर्तासो दधिरे पुरः ॥ ८ ॥

८९. अगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् ।
यः स्म श्रुतर्वन्नार्क्षे बृहदनीक इध्यते ॥ ९ ॥

९०. जातः परेण धर्मणा यत् सवृद्भिः सहाभुवः ।
पिता यत्कश्यपस्याग्निः श्रद्धा माता मनुः कविः ॥ १० ॥

दशमी दशतिः

ऋषिः—१ अग्निस्तापसः; २ वामदेवः; ३ काश्यपोऽसितो देवलो वा; ४ सोमाहुतिर्भार्गवः; ५ पायुः; ६ प्रस्कण्वः ॥ देवता—१ विश्वेदेवाः; २ अङ्गिराः; ३-६ अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

९१. सोमं राजानं वरुणमग्निमन्वारभामहे ।
आदित्यं विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम् ॥ १ ॥

९२. इत एत उदारुहन् दिवः पृष्ठान्या रुहन् ।
प्र भूर्जयो यथा पथोद् द्यामङ्गिरसो ययुः ॥ २ ॥

९३. राये अग्ने महे त्वा दानाय समिधीमहि ।
ईडिष्वा हि महे वृषं द्यावा होत्राय पृथिवी ॥ ३ ॥

९४. दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्मेति वेरु तत् ।
परि विश्वानि काव्या नेमिश्चक्रमिवाभुवत् ॥ ४ ॥

९५. प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणाहि विश्वतस्परि ।
यातुधानस्य रक्षसो बलं न्युब्ज वीर्यम् ॥ ५ ॥

९६. त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत ।
यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् ॥ ६ ॥

इति प्रथमः प्रपाठकः समाप्तः ॥

अथ द्वितीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

एकादशी दशतिः

ऋषिः—१ दीर्घतमाः; २, ४ विश्वामित्रः; ३ गोतमः; ५ त्रितः; ६ इरिम्बिठिः; ७, ८, १० विश्वमना वैयश्वः; ९ ऋजिष्वा भारद्वाजः ॥ देवता—१-४, ७-१० अग्निः, ५ पवमानः; ६ अदितिः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

९७. पुरु त्वा दाशिवाँ वोचेऽरिरग्ने तव स्विदा ।
तोदस्येव शरण आ महस्य ॥ १ ॥

९८. प्र होत्रे पूर्व्यं वचोऽग्नये भरता बृहत् ।
विपां ज्योतींषि बिभ्रते न वेधसे ॥ २ ॥

९९. अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो ।
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः ॥ ३ ॥

१००. अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवां देवयते यज ।
होता मन्द्रो वि राजस्यति स्त्रिधः ॥ ४ ॥

१०१. जज्ञानः सप्त मातृभिर्मेधामाशासत श्रिये ।
अयं ध्रुवो रयीणां चिकेतदा ॥ ५ ॥

१०२. उत स्या नो दिवा मतिरदितिरूत्यागमत् ।
सा शन्ताता मयस्करदप स्त्रिधः ॥ ६ ॥

१०३. ईडिष्वा हि प्रतीव्यां३ यजस्व जातवेदसम् ।
चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम् ॥ ७ ॥

१०४. न तस्य मायया च न रिपुरीशीत मर्त्यः ।
यो अग्नये ददाश हव्यदातये ॥ ८ ॥

१०५. अप त्यं वृजिनं रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम् ।
दविष्ठमस्य सत्पते कृधी सुगम् ॥ ९ ॥

१०६. श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्पते ।
नि मायिनस्तपसा रक्षसो दह ॥ १० ॥

द्वादशी दशतिः

ऋषिः—१ प्रयोगो भार्गवः; २, ३, ५-७ सोभरिः; ४ प्रयोगो भार्गवः; सोभरिः काण्वो वा; ८ विश्वमनाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०७. प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे ।
उपस्तुतासो अग्नये ॥ १ ॥

१०८. प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः ।
यस्य त्वं सख्यमाविथ ॥ २ ॥

१०९. तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे ।
देवत्रा हव्यमूहिषे ॥ ३ ॥

११०. मा नो हृणीथा अतिथिं वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः ।
यः सुहोता स्वध्वरः ॥ ४ ॥

१११. भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः ।
भद्रा उत प्रशस्तयः ॥ ५ ॥

११२. यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होता रममर्त्यम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ ६ ॥

११३. तदग्ने द्युम्नमा भर यत्सासाहा सदने कं चिदत्रिणम् ।
मन्युं जनस्य दूढ्यम् ॥ ७ ॥

११४. यद्वा उ विश्पतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे ।
विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति ॥ ८ ॥

इति प्रथमोऽध्यायः ॥

इति सामवेदसंहितायामाग्नेयं काण्डम् ॥

अथ ऐन्द्रं काण्डम्

अथ द्वितीयोऽध्यायः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१ शंयुर्बार्हस्पत्यः; २, ४, ५ श्रुतकक्षः; ३ हर्यतः प्रागाथः; ६ इन्द्रमातरो देवजामयः; ७, ८ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ; ९, १० मेधातिथिराङ्गिरसः प्रियमेधः काण्वश्च ॥

देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११५. तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद्गवे न शाकिने ॥ १ ॥

११६. यस्ते नूनं शतक्रतविन्द्र द्युम्नितमो मदः। तेन नूनं मदे मदेः ॥ २ ॥

११७. गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया ॥ ३ ॥

११८. अरमश्वाय गायत श्रुतकक्षारं गवे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ ४ ॥

११९. तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत् ॥ ५ ॥

१२०. त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः। त्वं सन्वृषन्वृषेदसि ॥ ६ ॥

१२१. यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि ॥ ७ ॥

१२२. यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥ ८ ॥

१२३. पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय। सोमं वीराय शूराय ॥ ९ ॥

१२४. इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम्। अनाभयिन् ररिमा ते ॥ १० ॥

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१, २ सुकक्षश्रुतकक्षौ; ३ भरद्वाजः; ४ श्रुतकक्षः; ५, ६ मधुच्छन्दाः; ७, ९, १० त्रिशोकः; ८ वसिष्ठः। देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२५. उद् घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य ॥ १ ॥

१२६. यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्य। सर्वं तदिन्द्र ते वशे ॥ २ ॥

१२७. य आनयत् परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम्। इन्द्रः स नो युवा सखा ॥ ३ ॥

१२८. मा न इन्द्राभ्याऽऽ३दिशः सूरो अक्तुष्वा यमत्। त्वा युजा वनेम तत् ॥ ४ ॥

१२९. एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर॥ ५॥

१३०. इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे। युजं वृत्रेषु वज्रिणम् ॥ ६॥

१३१. अपिबत् कद्रुवः सुतमिन्द्रः सहस्रबाह्वे। तत्रादर्दिष्ट पौंस्यम् ॥ ७॥

१३२. वयमिन्द्र त्वायवोऽभि प्र नोनुमो वृषन्। विद्धी त्वा३स्य नो वसो॥ ८॥

१३३. आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ ९॥

१३४. भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः ।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥ १०॥

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१ कण्वो घौरः; २ त्रिशोकः; ३, ९ वत्सः काण्वः; ४ कुसीदी काण्वः;
५ मेधातिथिः; ६ श्रुतकक्षः; ७ श्यावाश्वः; ८ प्रगाथः काण्वः;
१० इरिम्बिठिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥
स्वरः—षड्जः॥

१३५. इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद्वदान्। नि यामं चित्रमृञ्जते॥ १॥

१३६. इम उ त्वा वि चक्षते सखाय इन्द्र सोमिनः। पुष्टावन्तो यथा पशुम्॥ २॥

१३७. समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः। समुद्रायेव सिन्धवः॥ ३॥

१३८. देवानामिदवो महत्तदा वृणीमहे वयम्। वृष्णामस्मभ्यमूतये॥ ४॥

१३९. सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवन्तं य औशिजः॥ ५॥

१४०. बोधन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूर्यासुतिः। शृणोतु शक्र आशिषम्॥ ६॥

१४१. अद्या नो देव सवितः प्रजावत्सावीः सौभगम्। परा दुःष्वप्न्यं सुव॥ ७॥

१४२. क्वा३स्य वृषभो युवा तुविग्रीवो अनानतः। ब्रह्मा कस्तं सपर्यति॥ ८॥

१४३. उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत॥ ९॥

१४४. प्र सम्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः। नरं नृषाहं मंहिष्ठम्॥ १०॥

इति द्वितीयः प्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः॥

अथ द्वितीयप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१ श्रुतकक्षः; २ मेधातिथिः; ३ गोतमः; ४ भरद्वाजः; ५ बिन्दुः पूतदक्षो वा; ६, ७ श्रुतकक्षः सुकक्षो वा; ८ वत्सः काण्वः; ९ शुनःशेपः; १० शुनःशेपो वामदेवो वा ॥ देवता—इन्द्रः; ५ मरुतः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४५. अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः। इन्दोरिन्द्रो यवाशिरः ॥ १ ॥

१४६. इमा उ त्वा पुरूवसोऽभि प्र नोनुवुर्गिरः। गावो वत्सं न धेनवः ॥ २ ॥

१४७. अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ ३ ॥

१४८. यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः। तत्र पूषाभुवत् सचा ॥ ४ ॥

१४९. गौर्धयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम्। युक्ता वह्नी रथानाम् ॥ ५ ॥

१५०. उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ६ ॥

१५१. इष्टा होत्रा असृक्षतेन्द्रं वृधन्तो अध्वरे। अच्छावभृथमोजसा ॥ ७ ॥

१५२. अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह। अहं सूर्यइवाजनि ॥ ८ ॥

१५३. रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः। क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥ ९ ॥

१५४. सोमः पूषा च चेततुर्विश्वासां सुक्षितीनाम्। देवत्रा रथ्योर्हिता ॥ १० ॥

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—१, ४ श्रुतकक्षः; २ वसिष्ठः; ३ मेधातिथिप्रियमेधौ; ५ इरिम्बिठिः; ६, १० मधुच्छन्दाः; ७ त्रिशोकः; ८ कुसीदी; ९ शुनःशेपः ॥ देवता—इन्द्रः; ६ प्रजापतिः ॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; गायत्री ॥ स्वरः—१ गान्धारः; षड्जः ॥

१५५. पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत ।
विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥ १ ॥

१५६. प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत ।
सखायः सोमपाव्ने ॥ २ ॥

१५७. वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः ।
कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥ ३ ॥

१५८. इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः॥ ४॥

१५९. अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि। एहीमस्य द्रवा पिब॥ ५॥

१६०. सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे। जुहूमसि द्यविद्यवि ॥ ६॥

१६१. अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये। तृम्पा व्यश्नुही मदम्॥ ७॥

१६२. य इन्द्र चमसेष्वा सोमश्चमूषु ते सुतः। पिबेदस्य त्वमीशिषे ॥ ८॥

१६३. योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे। सखाय इन्द्रमूतये ॥ ९॥

१६४. आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत। सखायः स्तोमवाहसः॥ १०॥

षष्ठी दशतिः

ऋषिः—१ विश्वामित्रः; २ मधुच्छन्दाः; ३ कुसीदी काण्वः; ४ प्रियमेधः; ५, ८ वामदेवः; ६, ९ श्रुतकक्षः; ७ मेधातिथिः; १० बिन्दुः पूतदक्षो वा॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१६५. इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते ।
पिबा त्वा३स्य गिर्वणः ॥ १॥

१६६. महाँ इन्द्रः पुरश्च नो महित्वमस्तु वज्रिणे ।
द्यौर्न प्रथिना शवः ॥ २॥

१६७. आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय ।
महाहस्ती दक्षिणेन ॥ ३॥

१६८. अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे ।
सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥ ४॥

१६९. कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा ।
कया शचिष्ठया वृता ॥ ५॥

१७०. त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम् ।
आ च्यावयस्यूतये ॥ ६॥

१७१. सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
सनिं मेधामयासिषम् ॥ ७॥

१७२. ये ते पन्था अधो दिवो येभिर्व्यश्वमैरयः ।
उत श्रोषन्तु नो भुवः ॥ ८ ॥

१७३. भद्रंभद्रं न आ भरेषमूर्जं शतक्रतो ।
यदिन्द्र मृडयासि नः ॥ ९ ॥

१७४. अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः ।
उत स्वराजो अश्विना ॥ १० ॥

सप्तमी दशतिः

ऋषिः—१ इन्द्रमातरो देवजामयः; २ गोधा; ३ दध्यङ्ङाथर्वणः; ४ प्रस्कण्वः; ५ गोतमः; ६ मधुच्छन्दाः; ७ वामदेवः; ८ वत्सः; ९ शुनःशेपः; १० वातायन उलः ॥
देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७५. ईङ्खयन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते। वन्वानासः सुवीर्यम् ॥ १ ॥
१७६. न कि देवा इनीमसि न क्या योपयामसि। मन्त्रश्रुत्यं चरामसि ॥ २ ॥
१७७. दोषो आगाद् बृहद्गाय द्युमद्गामन्नाथर्वण। स्तुहि देवं सवितारम् ॥ ३ ॥
१७८. एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः। स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥ ४ ॥
१७९. इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघान नवतीर्नव ॥ ५ ॥
१८०. इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः। महाँ अभिष्टिरोजसा ॥ ६ ॥
१८१. आ तू न इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि। महान्महीभिरूतिभिः ॥ ७ ॥
१८२. ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत्। इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥ ८ ॥
१८३. अयमु ते समतसि कपोतइव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥ ९ ॥
१८४. वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूंषि तारिषत् ॥ १० ॥

अष्टमी दशतिः

ऋषिः—१ कण्वः; २, ३, ९ वत्सः; ४ श्रुतकक्षः; ५ मधुच्छन्दाः; ६ वामदेवः; ७ इरिम्बिठिः; ८ वारुणिः सत्यधृतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

१८५. यं रक्षन्ति प्रचेतसो वरुणो मित्रो अर्यमा। न किः स दभ्यते जनः ॥ १ ॥

१८६. गव्यो षु णो यथा पुराश्वयोत रथया। वरिवस्या महोनाम्॥ २॥

१८७. इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं दुहत आशिरम्। एनामृतस्य पिप्युषीः॥ ३॥

१८८. अया धिया च गव्यया पुरुणामन्पुरुष्टुत। यत् सोमेसोम आभुवः॥ ४॥

१८९. पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः॥ ५॥

१९०. क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात्। स नो वसून्या भरात्॥ ६॥

१९१. आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम॥ ७॥

१९२. महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः। दुराधर्षं वरुणस्य॥ ८॥

१९३. त्वावतः पुरूवसो वयमिन्द्र प्रणेतः। स्मसि स्थातर्हरीणाम् ॥ ९॥

इति द्वितीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

अथ तृतीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

नवमी दशतिः

ऋषिः—१ प्रगाथः; २ विश्वामित्र; ३, १० वामदेवः; ४, ६ श्रुतकक्षः;
५ मधुच्छन्दाः; ७ गृत्समदः; ८, ९ भरद्वाजः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१९४. उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि॥ १॥

१९५. गिर्वणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे। इन्द्र त्वादातमिद्यशः॥ २॥

१९६. सदा व इन्द्रश्चर्कृषदा उपो नु स सपर्यन्। न देवो वृतः शूर इन्द्रः॥ ३॥

१९७. आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः। न त्वामिन्द्राति रिच्यते॥ ४॥

१९८. इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ ५॥

१९९. इन्द्र इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम्। वाजी ददातु वाजिनम्॥ ६॥

२००. इन्द्रो अङ्ग महद्भयमभी षदप चुच्यवत्। स हि स्थिरो विचर्षणिः॥ ७॥

२०१. इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः। गावो वत्सं न धेनवः॥ ८॥

२०२. इन्द्रा नु पूषणा वयं सख्याय स्वस्तये। हुवेम वाजसातये॥ ९॥

२०३. न कि इन्द्र त्वदुत्तरं न ज्यायो अस्ति वृत्रहन्। न क्येवं यथा त्वम्॥ १०॥

दशमी दशतिः

ऋषिः—१, ४ त्रिशोकः; २ मधुच्छन्दाः; ३ वत्सः; ५ सुकक्षः; ६, ९ वामदेवः;
७ विश्वामित्रः; ८ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ; १० श्रुतकक्षः सुकक्षो वा॥
देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२०४. तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः। समानमु प्र शंसिषम्॥ १॥
२०५. असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत। सजोषा वृषभं पतिम्॥ २॥
२०६. सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा। मित्रास्पान्त्यद्रुहः॥ ३॥
२०७. यद्वीडाविन्द्र यत्स्थिरे यत्पर्शाने पराभृतम्। वसु स्पार्हं तदा भर॥ ४॥
२०८. श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम्। आशिषे राधसे महे॥ ५॥
२०९. अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः। अरं शक्र परेमणि॥ ६॥
२१०. धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्। इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः॥ ७॥
२११. अपां फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः। विश्वा यदजय स्पृधः॥ ८॥
२१२. इमे त इन्द्र सोमाः सुतासो ये च सोत्वाः। तेषां मत्स्व प्रभूवसो॥ ९॥
२१३. तुभ्यं सुतासः सोमाः स्तीर्णं बर्हिर्विभावसो। स्तोतृभ्य इन्द्र मृडय॥ १०॥

एकादशी दशतिः

ऋषिः—१ शुनःशेपः; २ श्रुतकक्षः; ३ त्रिशोकः; ४, ९ मेधातिथिः; ५ गोतमः;
६ ब्रह्मातिथिः; ७ विश्वामित्रो जमदग्निर्वा; ८ प्रस्कण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२१४. आ व इन्द्रं कृविं यथा वाजयन्तः शतक्रतुम्। मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः॥ १॥
२१५. अतश्चिदिन्द्र न उपा याहि शतवाजया। इषा सहस्रवाजया॥ २॥
२१६. आ बुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छाद्वि मातरम्। क उग्राः के ह शृण्विरे॥ ३॥
२१७. बृबदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये। साधः कृण्वन्तमवसे॥ ४॥
२१८. ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयति विद्वान्। अर्यमा देवैः सजोषाः॥ ५॥
२१९. दूरादिहेव यत्सतोऽरुणप्सुरशिश्वितत्। वि भानुं विश्वथातनत्॥ ६॥

२२०. आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू॥ ७॥

२२१. उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा यज्ञेष्वत्नत। वाश्रा अभिज्ञु यातवे॥ ८॥

२२२. इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाँसुले॥ ९॥

द्वादशी दशतिः

ऋषिः—१, ७, ८ मेधातिथिः; २ वामदेवः; ३, ५ मेधातिथिप्रियमेधौ; ४ विश्वामित्रः; ६ कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा; ९ विश्वामित्रो गाथिनोऽभीपाद उदलो वा; १० श्रुतकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

२२३. अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपेरय। अस्य रातौ सुतं पिब॥ १॥

२२४. कदु प्रचेतसे महे वचो देवाय शस्यते। तदिद्ध्यस्य वर्धनम्॥ २॥

२२५. उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत। न गायत्रं गीयमानम्॥ ३॥

२२६. इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो वाजानां च वाजपतिः। हरिवान्त्सुतानां सखा॥ ४॥

२२७. आ याह्युप नः सुतं वाजेभिर्मा हृणीयथाः। महाँइव युवजानिः॥ ५॥

२२८. कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आ अव श्मशा रुधद्वाः।
दीर्घं सुतं वाताप्याय॥ ६॥

२२९. ब्राह्मणादिन्द्र राधसः पिबा सोममृतूँरनु। तवेदं सख्यमस्तृतम्॥ ७॥

२३०. वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः। त्वं नो जिन्व सोमपाः॥ ८॥

२३१. एन्द्र पृक्षु कासु चिन्नृम्णं तनूषु धेहि नः। सत्राजिदुग्र पौंस्यम्॥ ९॥

२३२. एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः। एवा ते राध्यं मनः॥ १०॥

इति द्वितीयोऽध्यायः॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१, ६, ९ वसिष्ठः; २ भरद्वाजः; ३ बालखिल्याः; ४ नोधाः; ५ कलिः प्रागाथः; ७ मेधातिथिः; ८ भर्गः; १० प्रगाथः काण्वः ॥ देवता—१-८, १० इन्द्रः; ९ मरुतः ॥

छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२३३. अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाइव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥ १ ॥

२३४. त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥ २ ॥

२३५. अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे ।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥ ३ ॥

२३६. तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥ ४ ॥

२३७. तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये ।
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥ ५ ॥

२३८. तरणिरित् सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा ।
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् ॥ ६ ॥

२३९. पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः ।
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३ऽस्माँ अवन्तु ते धियः ॥ ७ ॥

२४०. त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये ।
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥ ८ ॥

२४१. न हि वश्चरमं च न वसिष्ठः परिमंसते ।
अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबन्तु कामिनः ॥ ९ ॥

२४२. मा चिदन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।
इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत ॥ १० ॥

इति तृतीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ तृतीयप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१ आङ्गिरसः पुरुहन्मा; २, ३, ७-९ मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च; ४ विश्वामित्रः; ५ गोतमः; ६ नृमेधपुरुमेधौ; १० देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥

छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२४३. न किष्टं कर्मणा नशद् यश्चकार सदावृधम् ।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा ॥ १ ॥

२४४. य ऋते चिदभिश्रिषः पुरा जत्रुभ्य आतृदः ।
सन्धाता सन्धिं मघवा पुरूवसुर्निष्कर्ता विह्रुतं पुनः ॥ २ ॥

२४५. आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥ ३ ॥

२४६. आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।
मा त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥ ४ ॥

२४७. त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥ ५ ॥

२४८. त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः ।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इत् पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः ॥ ६ ॥

२४९. इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥ ७ ॥

२५०. इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥ ८ ॥

२५१. उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमास ईरते ।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथाइव ॥ ९ ॥

२५२. यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब ॥ १० ॥

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१ भर्गः; २ रेभः काश्यपः; ३ जमदग्निः; ४, ९ मेधातिथिः; ५, ६ नृमेधपुरुमेधौ; ७ वसिष्ठः; ८ रेभः; १० भरद्वाजः ॥ देवता—१, २, ४-१० इन्द्रः; ३ आदित्याः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२५३. शग्ध्यू३षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥ १ ॥

२५४. या इन्द्र भुज आभरः स्ववाँ असुरेभ्यः ।
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः ॥ २ ॥

२५५. प्र मित्राय प्रार्यम्णे सचथ्यमृतावसो ।
वरूथ्ये३ वरुणे छन्द्यं वचः स्तोत्रं राजसु गायत ॥ ३ ॥

२५६. अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥ ४ ॥

२५७. प्र व इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत ।
वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ॥ ५ ॥

२५८. बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम् ।
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि ॥ ६ ॥

२५९. इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन्पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ ७ ॥

२६०. मा न इन्द्र परा वृणग्भवा नः सधमाद्ये ।
त्वं न ऊती त्वमिन्न आप्यं मा न इन्द्र परावृणक् ॥ ८ ॥

२६१. वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते ॥ ९ ॥

२६२. यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु ।
यद्वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौंस्या ॥ १० ॥

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१ मेधातिथिः; २ रेभः; ३ वत्सः; ४ भरद्वाजः; ५ नृमेधः; ६ पुरुहन्मा; ७ नृमेधपुरुमेधौ; ८ वसिष्ठः; ९ मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च; १० कलिः ॥

देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२६३. सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽविता ।
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः ॥ १ ॥

२६४. यच्छक्रासि परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।
अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति ॥ २ ॥

२६५. अभि वो वीरमन्धसो मदेषु गाय गिरा महा विचेतसम् ।
इन्द्रं नाम श्रुत्यं शाकिनं वचो यथा ॥ ३ ॥

२६६. इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथं स्वस्तये ।
छर्दिर्यच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युमेभ्यः ॥ ४ ॥

२६७. श्रायन्तइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः ॥ ५ ॥

२६८. न सीमदेव आप तदिषं दीर्घायो मर्त्यः ।
एतग्वा चिद्य एतशो युयोजत इन्द्रो हरी युयोजते ॥ ६ ॥

२६९. आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत ।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥ ७ ॥

२७०. तवेदिन्द्रावमं वसु त्वं पुष्यसि मध्यमम् ।
सत्रा विश्वस्य परमस्य राजसि न किष्ट्वा गोषु वृण्वते ॥ ८ ॥

२७१. क्वेयथ क्वेदसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः ।
अलर्षि युध्म खजकृत् पुरन्दर प्र गायत्रा अगासिषुः ॥ ९ ॥

२७२. वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम् ।
तस्मा उ अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥ १० ॥

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—१, ६ पुरुहन्मा; २ भर्गः; ३ इरिम्बिठिः; ४ जमदग्निः; ५, ७ देवातिथिः; ८ वसिष्ठः; ९ भरद्वाजः; १० बालखिल्याः ॥ देवता—१-३, ५-८, १० इन्द्रः; ४ सूर्यः; ९ इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२७३. यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे ॥ १ ॥

२७४. यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि ॥ २ ॥

२७५. वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणांसत्रं सोम्यानाम् ।
द्रप्सः पुरां भेत्ता शश्वतीनामिन्द्रो मुनीनां सखा ॥ ३ ॥

२७६. बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि ।
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि ॥ ४ ॥

२७७. अश्वी रथी सुरूप इद्गोमाँ यदिन्द्र ते सखा ।
श्वात्रभाजा वयसा सचते सदा चन्द्रैर्याति सभामुप ॥ ५ ॥

२७८. यद् द्याव इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी ॥ ६ ॥

२७९. यदिन्द्र प्रागपागुदग्न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥ ७ ॥

२८०. कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति ।
श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥ ८ ॥

२८१. इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः ।
हित्वा शिरो जिह्वया रारपच्चरत् त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत् ॥ ९ ॥

२८२. इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरूतिभिः ।
आ शन्तम शन्तमाभिरभिष्टिभिरा स्वापे स्वापिभिः ॥ १० ॥

षष्ठी दशतिः

ऋषिः—१ नृमेधः; २, ३ वसिष्ठः; ४ भरद्वाजः; ५ पुरुच्छेपः; ६ वामदेवः; ७ मेध्यातिथिः; ८ भर्गः; ९, १० मेधातिथिर्मेध्यातिथिश्च ॥ देवता—१-४, ७-१० इन्द्रः; ५ अश्विनौ; ६ वरुणः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२८३. इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम् ।
आशुं जेतारं हेतारं रथीतममतूर्तं तुग्रियावृधम् ॥ १ ॥

२८४. मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन् ।
आरात्ताद्वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥ २ ॥

२८५. सुनोता सोमपाव्ने सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
पचता पक्तीरवसे कृणुध्वमित् पृणन्नित् पृणते मयः ॥ ३ ॥

२८६. यः सत्राहा विचर्षणिरिन्द्रं तं हूमहे वयम् ।
सहस्रमन्यो तुविनृम्ण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे ॥ ४ ॥

२८७. शचीभिर्नः शचीवसू दिवानक्तं दिशस्यतम् ।
मा वां रातिरुप दसत्कदा च नास्मद्रातिः कदा च न ॥ ५ ॥

२८८. यदा कदा च मीढुषे स्तोता जरेत मर्त्यः ।
आदिद् वन्देत वरुणं विपा गिरा धर्तारं विव्रतानाम् ॥ ६ ॥

२८९. पाहि गा अन्धसो मद इन्द्राय मेध्यातिथे ।
यः सम्मिश्लो हर्योर्यो हिरण्यय इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ७ ॥

२९०. उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।
सत्राच्या मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥ ८ ॥

२९१. महे च न त्वाद्रिवः परा शुल्काय दीयसे ।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ ॥ ९ ॥

२९२. वस्याँ इन्द्रासि मे पितुरुत भ्रातुरभुञ्जतः ।
माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ॥ १० ॥

इति तृतीयः प्रपाठकः समाप्तः ॥

अथ चतुर्थप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

सप्तमी दशतिः

ऋषिः—१ वसिष्ठः; २, ६, ७ वामदेवः; ३ मेधातिथिमेध्यातिथी; विश्वामित्र इत्येके; ४ नोधाः; ५ मेधातिथिः; ८ बालखिल्याः; ९ मेध्यातिथिः; १० नृमेधः ॥ देवता—१-६, ८-१० इन्द्रः; ७ बहवः-(पर्जन्यब्रह्मणस्पत्यदितयो विश्वेदेवाः)॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

२९३. इम इन्द्राय सुन्विरे सोमासो दध्याशिरः ।
ताँ आ मदाय वज्रहस्त पीतये हरिभ्यां याह्योक आ ॥ १ ॥

२९४. इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः ।
मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः ॥ २ ॥

२९५. आ त्वा३ऽद्य सबर्दुघां हुवे गायत्रवेपसम् ।
इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्यामिषमुरुधारामरङ्कृतम् ॥ ३ ॥

२९६. न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीडवः ।
यच्छिक्षसि स्तुवते मावते वसु न किष्टदा मिनाति ते ॥ ४ ॥

२९७. क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्त्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः ॥ ५ ॥

२९८. यदिन्द्र शासो अव्रतं च्यावया सदसस्परि ।
अस्माकमंशुं मघवन् पुरुस्पृहं वसव्ये अधि बर्हय ॥ ६ ॥

२९९. त्वष्टा नो दैव्यं वचः पर्जन्यो ब्रह्मणस्पतिः ।
पुत्रैर्भ्रातृभिरदितिर्नु पातु नो दुष्टरं त्रामणं वचः ॥ ७ ॥

३००. कदा च न स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे ।
उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते ॥ ८ ॥

३०१. युङ्क्ष्वा हि वृत्रहन्तम हरी इन्द्र परावतः ।
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋष्वेभिरा गहि ॥ ९ ॥

३०२. त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि ॥ १० ॥

अष्टमी दशतिः

ऋषिः—१, २, ७, ८ वसिष्ठः; ३ पौर आत्रेयः; ४ प्रस्कण्वः; ५ मेधातिथिमेध्यातिथी; ६ देवातिथिः; ९ नृमेधः; १० नोधाः ॥ देवता—१ उषा; २, ३ अश्विनौ; ४-१० इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

३०३. प्रत्यु अदर्श्यायत्यू३च्छन्ती दुहिता दिवः ।
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ॥ १ ॥

३०४. इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना ।
अयं वामह्वेऽ वसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः ॥ २ ॥

३०५. कुष्ठः को वामश्विना तपानो देवा मर्त्यः ।
घ्नता वामश्नया क्षपमाणोंऽ शुनेत्थमु आद्वन्यथा ॥ ३ ॥

३०६. अयं वां मधुमत्तमः सुतः सोमो दिविष्टिषु ।
तमश्विना पिबतं तिरोअह्न्यं धत्तं रत्नानि दाशुषे ॥ ४ ॥

३०७. आ त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं ज्या ।
भूर्णिं मृगं न सवनेषु चुक्रुधं क ईशानं न याचिषत् ॥ ५ ॥

३०८. अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।
उपो नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा ॥ ६ ॥

३०९. अभीषतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः ।
पुरूवसुर्हि मघवन् बभूविथ भरेभरे च हव्यः ॥ ७ ॥

३१०. यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्दधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम् ॥ ८ ॥

३११. त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः ।
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ ९ ॥

३१२. प्र यो रिरिक्ष ओजसा दिवः सदोभ्यस्परि ।
न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिवमति विश्वं ववक्षिथ ॥ १० ॥

नवमी दशतिः

ऋषिः—१, २, ६ वसिष्ठः; ३ गातुः; ४ पृथुवैन्यः; ५ सप्तगुः; ७ गौरिवीतिः; ८ वेनो भार्गवः; ९ बृहस्पतिर्नकुलो वा; १० सुहोत्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३१३. असावि देवं गोऋजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच ।
बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञैर्बोधा न स्तोममन्धसो मदेषु ॥ १ ॥

३१४. योनिष्ट इन्द्र सदने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि ।
असो यथा नोऽविता वृधश्चिद्ददो वसूनि ममदश्च सोमैः ॥ २ ॥

३१५. अदर्दरुत् समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्बधानाँ अरम्णाः ।
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजद्धारा अव यद्दानवान् हन् ॥ ३ ॥

३१६. सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा सनिष्यन्तश्चित्तुविनृम्ण वाजम् ।
आ नो भर सुवितं यस्य कोना तना त्मना सह्याम त्वोताः ॥ ४ ॥

३१७. जगृह्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम् ।
विद्मा हि त्वा गोपतिं शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः ॥ ५ ॥

३१८. इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥ ६ ॥

३१९. वयः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः ।
अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्द्धि चक्षुर्मुमुग्ध्या३स्मान्निधयेव बद्धान् ॥ ७ ॥

३२०. नाके सुपर्णमुप यत् पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा ।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥ ८ ॥

३२१. ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ९ ॥

३२२. अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय ।
विरप्शिने वज्रिणे शन्तमानि वचांस्यस्मै स्थविराय तक्षुः ॥ १० ॥

दशमी दशतिः

ऋषिः—१, २, ४ द्युतानः; ३ बृहदुक्थः; ५ वामदेवः; ६, ८ वसिष्ठः; ७ विश्वामित्रः; ९ गौरिवीतिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-५, ७-९ त्रिष्टुप्; ६ त्रिपदा विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-५, ७-९ धैवतः; ६ गान्धारः ॥

३२३. अव द्रप्सो अंशुमतीमतिष्ठदीयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः ।
आवत्तमिन्द्रः शच्या धमन्तमप स्नीहितिं नृमणा अधद्राः ॥१॥

३२४. वृत्रस्य त्वा श्वसथादीषमाणा विश्वे देवा अजहुर्ये सखायः ।
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्वथेमा विश्वाः पृतना जयासि ॥२॥

३२५. विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार ।
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान ॥३॥

३२६. त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानोऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र ।
गूढे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः ॥४॥

३२७. मेडिं न त्वा वज्रिणं भृष्टिमन्तं पुरुधस्मानं वृषभं स्थिरप्स्नुम् ।
करोष्यर्यस्तरुषीर्दुवस्युरिन्द्र द्युक्षं वृत्रहणं गृणीषे ॥५॥

३२८. प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् ।
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः ॥६॥

३२९. शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि सञ्जितं धनानि ॥७॥

३३०. उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्येन्द्रं समर्ये महया वसिष्ठ ।
आ यो विश्वानि श्रवसा ततानोपश्रोता म ईवतो वचांसि ॥८॥

३३१. चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्तमुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात् ।
पृथिव्यामतिषितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु ॥९॥

एकादशी दशतिः

ऋषिः—१ अरिष्टनेमिस्ताक्ष्र्यः; २ भरद्वाजः; ३ वसुक्रो विमदो वा; ४-६, ७ विश्वामित्रः; ८ रेणुः; ९ वामदेवः; १० गोतमः ॥ देवता—१ ताक्ष्र्यः; २-६, ८-१० इन्द्रः; ७ इन्द्रापर्वतौ ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

३३२. त्यमू षु वाजिनं देवजूतं सहोवानं तरुतारं रथानाम् ।
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुं स्वस्तये ताक्ष्र्यमिहा हुवेम ॥ १ ॥

३३३. त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।
हुवे नु शक्रं पुरुहूतमिन्द्रमिदं हविर्मघवा वेत्विन्द्रः ॥ २ ॥

३३४. यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यां३ विव्रतानाम् ।
प्र श्मश्रुभिर्दोधुवदूर्ध्वधा भुवद्वि सेनाभिर्भयमानो वि राधसा ॥ ३ ॥

३३५. सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम् ।
हन्ता यो वृत्रं सनितोत वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः ॥ ४ ॥

३३६. यो नो वनुष्यन्नभिदाति मर्त्त उगणा वा मन्यमानस्तुरो वा ।
क्षिधी युधा शवसा वा तमिन्द्राभी ष्याम वृषमणस्त्वोताः ॥ ५ ॥

३३७. यं वृत्रेषु क्षितयः स्पर्धमाना यं युक्तेषु तुरयन्तो हवन्ते ।
यं शूरसातौ यमपामुपज्मन् यं विप्रासो वाजयन्ते स इन्द्रः ॥ ६ ॥

३३८. इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः ।
वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिडया मदन्ता ॥ ७ ॥

३३९. इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रैरयत् सगरस्य बुध्नात् ।
यो अक्षेणेव चक्रियौ शचीभिर्विष्वक्तस्तम्भ पृथिवीमुत द्याम् ॥ ८ ॥

३४०. आ त्वा सखायः सख्या ववृत्युस्तिरः पुरू चिदर्णवां जगम्याः ।
पितुर्नपातमा दधीत वेधा अस्मिन् क्षये प्रतरां दीद्यानः ॥ ९ ॥

३४१. को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हृणायून् ।
आसन्नेषामप्सुवाहो मयोभून्य एषां भृत्यामृणधत्स जीवात् ॥ १० ॥

इति चतुर्थप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ चतुर्थप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

द्वादशी दशतिः

ऋषिः—१ मधुच्छन्दाः; २ जेता माधुच्छन्दसः; ३, ६ गोतमः; ४ अत्रिः; ५, ८, ९ तिरश्चीः; ७ काण्वो नीपातिथिः; १० शंयुर्बार्हस्पत्यः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—अनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

३४२. गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥१॥

३४३. इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥२॥

३४४. इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् ।
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥३॥

३४५. यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः ।
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर ॥४॥

३४६. श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ॥५॥

३४७. असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि ।
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥६॥

३४८. एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥७॥

३४९. आ त्वा गिरो रथीरिवास्थुः सुतेषु गिर्वणः ।
अभि त्वा समनूषत गावो वत्सं न धेनवः ॥८॥

३५०. एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना ।
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु ॥९॥

३५१. यो रयिं वो रयिन्तमो यो द्युम्नैर्द्युम्नवत्तमः ।
सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति स्वधापते मदः ॥१०॥

इति तृतीयोऽध्यायः॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१ भरद्वाजः; २ वामदेवः शाकपूतो वा; ३ प्रियमेधः; ४ प्रगाथः; ५ श्यावाश्व आत्रेयः; ६ शंयुः; ७ वामदेवः; ८ जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—१-४, ६, ८ इन्द्रः; ५ मरुतः; ७ दधिक्रावा अग्निः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३५२. प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर ।
अरङ्गमाय जग्मयेऽपश्चादध्वने नरः ॥ १ ॥

३५३. आ नो वयो वयःशयं महान्तं गह्वरेष्ठाम् ।
महान्तं पूर्विनेष्ठामुग्रं वचो अपावधीः ॥ २ ॥

३५४. आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि ।
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥ ३ ॥

३५५. स पूर्व्यो महोनां वेनः क्रतुभिरानजे ।
यस्य द्वारा मनुः पिता देवेषु धिय आनजे ॥ ४ ॥

३५६. यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना रथेष्वा ।
पिबन्तो मदिरं मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ॥ ५ ॥

३५७. त्यमु वो अप्रहणं गृणीषे शवसस्पतिम् ।
इन्द्रं विश्वासाहं नरं शचिष्ठं विश्ववेदसम् ॥ ६ ॥

३५८. दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत् प्र न आयूँषि तारिषत् ॥ ७ ॥

३५९. पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ ८ ॥

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१, ३, ५ प्रियमेधः; २, १० वामदेवः; ४ मधुच्छन्दाः; ६ भरद्वाजः; ७ अत्रिः; ८ प्रस्कण्वः; ९ आप्त्यस्त्रितः ॥ देवता—१-७ इन्द्रः; ८ उषाः; ९ विश्वेदेवाः; १० ऋक्सामौ ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

३६०. प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं वन्दद्वीरायेन्दवे ।
धिया वो मेधसातये पुरन्ध्या विवासति ॥ १ ॥

३६१. कश्यपस्य स्वर्विदो यावाहुः सयुजाविति ।
ययोर्विश्वमपि व्रतं यज्ञं धीरा निचाय्य ॥ २ ॥

३६२. अर्चत प्रार्चता नरः प्रियमेधासो अर्चत ।
अर्चन्तु पुत्रका उत पुरमिद् धृष्ण्वर्चत ॥ ३ ॥

३६३. उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिष्षिधे ।
शक्रो यथा सुतेषु नो रारणत् सख्येषु च ॥ ४ ॥

३६४. विश्वानरस्य वस्पतिमनानतस्य शवसः ।
एवैश्च चर्षणीनामूती हुवे रथानाम् ॥ ५ ॥

३६५. स घा यस्ते दिवो नरो धिया मर्तस्य शमतः ।
ऊती स बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति ॥ ६ ॥

३६६. विभोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो ।
अथा नो विश्वचर्षणे द्युम्नं सुदत्र मंहय ॥ ७ ॥

३६७. वयश्चित्ते पतत्रिणो द्विपाच्चतुष्पादर्जुनि ।
उषः प्रारन्नृतूँरनु दिवो अन्तेभ्यस्परि ॥ ८ ॥

३६८. अमी ये देवा स्थन मध्य आ रोचने दिवः ।
कद्व ऋतं कदमृतं का प्रत्ना व आहुतिः ॥ ९ ॥

३६९. ऋचं साम यजामहे याभ्यां कर्माणि कृण्वते ।
वि ते सदसि राजतो यज्ञं देवेषु वक्षतः ॥ १० ॥

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१ रेभः; २ सुवेदाः शैलूषिः; ३ वामदेवः; ४, ७, ८ सव्य आङ्गिरसः; ५ विश्वामित्रः; ६ कृष्ण आङ्गिरसः; ९ भरद्वाजः; १० मेधातिथिः; ११ कुत्सः ॥ देवता—१-८, १०, ११ इन्द्रः; ९ द्यावापृथिवी ॥ छन्दः—१-९, ११ जगती; १० महापङ्क्तिः ॥
स्वरः—१-९, ११ निषादः; १० पञ्चमः ॥

३७०. विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।
क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम् ॥ १ ॥

३७१. श्रत्ते दधामि प्रथमाय मन्यवेऽहन् यद् दस्युं नर्यं विवेरपः ।
उभे यत्त्वा रोदसी धावतामनु भ्यसात्ते शुष्मात् पृथिवी चिदद्रिवः ॥ २ ॥

३७२. समेत विश्वा ओजसा पतिं दिवो य एक इद् भूरतिथिर्जनानाम् ।
स पूर्व्यो नूतनमाजिगीषं तं वर्त्तनीरनु वावृत एक इत् ॥ ३ ॥

३७३. इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो ।
न हि त्वदन्यो गिर्वणो गिरः सघत्क्षोणीरिव प्रति तद्धर्य नो वचः ॥ ४ ॥

३७४. चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्या३मिन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत ।
वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभिरमर्त्यं जरमाणं दिवेदिवे ॥ ५ ॥

३७५. अच्छा व इन्द्रं मतयः स्वर्युवः सध्रीचीर्विश्वा उशतीरनूषत ।
परि ष्वजन्त जनयो यथा पतिं मर्यं न शुन्ध्युं मघवानमूतये ॥ ६ ॥

३७६. अभि त्यं मेषं पुरुहूतमृग्मियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् ।
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषं भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत ॥ ७ ॥

३७७. त्यं सु मेषं महया स्वर्विदं शतं यस्य सुभुवः साकमीरते ।
अत्यं न वाजं हवनस्यदं रथमिन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः ॥ ८ ॥

३७८. घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा ।
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा ॥ ९ ॥

३७९. उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषाइव ।
महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् ।
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ १० ॥

३८०. प्र मन्दिने पितुमदर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिश्वना ।
अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हुवेमहि ॥ ११ ॥

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१ नारदः; २, ३ गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ; ४ पर्वतः; ५-७, १० विश्वमना वैयश्वः; ८ नृमेधः; ९ गोतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३८१. इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम् ।
विदे वृधस्य दक्षस्य महाँ हि षः ॥१॥

३८२. तमु अभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतम् ।
इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत ॥२॥

३८३. तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम् ।
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥३॥

३८४. यत्सोममिन्द्र विष्णवि यद्वा घ त्रित आप्त्ये ।
यद्वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः ॥४॥

३८५. एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः ।
एवा हि वीर स्तवते सदावृधः ॥५॥

३८६. एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु ।
प्र राधांसि चोदयते महित्वना ॥६॥

३८७. एतो न्विन्द्रं स्तवाम सखाय स्तोम्यं नरम् ।
कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत् ॥७॥

३८८. इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् ।
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥८॥

३८९. य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे ।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥९॥

३९०. सखाय आ शिषामहे ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे ।
स्तुष ऊ षु वो नृतमाय धृष्णवे ॥१०॥

इति चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः ॥

अथ पञ्चमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—१ प्रगाथः; २ भरद्वाजः; ३ नृमेधः; ४ पर्वतः; ५, ७ इरिम्बिठिः; ६ विश्वमनाः; ८ वसिष्ठः ॥ देवता—१-४, ६, ८ इन्द्रः; ५, ७ आदित्याः ॥ छन्दः—१-७ उष्णिक्; ८ त्रिपदा विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-७ ऋषभः; ८ गान्धारः ॥

३९१. गृणे तदिन्द्र ते शव उपमां देवतातये ।
यद्धंसि वृत्रमोजसा शचीपते ॥ १ ॥

३९२. यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयन् ।
अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ॥ २ ॥

३९३. एन्द्र नो गधि प्रिय सत्राजिदगोह्य ।
गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः ॥ ३ ॥

३९४. य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति ।
येना हंसि न्या३त्रिणं तमीमहे ॥ ४ ॥

३९५. तुचे तुनाय तत्सु नो द्राघीय आयुर्जीवसे ।
आदित्यासः समहसः कृणोतन ॥ ५ ॥

३९६. वेत्था हि निर्ऋतीनां वज्रहस्त परिवृजम् ।
अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव ॥ ६ ॥

३९७. अपामीवामप स्त्रिधमप सेधत दुर्मतिम् ।
आदित्यासो युयोतना नो अंहसः ॥ ७ ॥

३९८. पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः ।
सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥ ८ ॥

षष्ठी दशतिः

ऋषिः—१-६, ९, १० सोभरिः; ७, ८ नृमेधः ॥ देवता—१, २, ४, ५, ७-१० इन्द्रः; ३, ६ मरुतः ॥ छन्दः—ककुबुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

३९९. अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि ।
युधेदापित्वमिच्छसे ॥ १ ॥

४००. यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु व स्तुषे ।
सखाय इन्द्रमूतये ॥२॥

४०१. आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो माप स्थात समन्यवः ।
दृढा चिद्यमयिष्णवः ॥३॥

४०२. आ याह्ययमिन्दवेऽश्वपते गोपत उर्वरापते ।
सोमं सोमपते पिब ॥४॥

४०३. त्वया ह स्विद्युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ ब्रुवीमहि ।
संस्थे जनस्य गोमतः ॥५॥

४०४. गावश्चिद्धा समन्यवः सजात्येन मरुतः सबन्धवः ।
रिहते ककुभो मिथः ॥६॥

४०५. त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे ।
आ वीरं पृतनासहम् ॥७॥

४०६. अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे ।
उदेव ग्मन्त उदभिः ॥८॥

४०७. सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मदिरे विवक्षणे ।
अभि त्वामिन्द्र नोनुमः ॥९॥

४०८. वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः ।
वज्रिञ्चित्रं हवामहे ॥१०॥

सप्तमी दशतिः

ऋषिः—१-८ गोतमः; ९ त्रितः; १० अवस्युः ॥ देवता—१-८ इन्द्रः;
९ विश्वेदेवाः; १० अश्विनौ ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

४०९. स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः ।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वी रनु स्वराज्यम् ॥१॥

४१०. इत्था हि सोम इन्मदो ब्रह्म चकार वर्धनम् ।
शविष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहिमर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ २ ॥

४११. इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् ॥ ३ ॥

४१२. इन्द्र तुभ्यमिदद्रिवोऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम् ।
यद्ध त्यं मायिनं मृगं तव त्यन्माययावधीरर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ४ ॥

४१३. प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते ।
इन्द्र नृम्णं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपोऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ॥ ५ ॥

४१४. यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम् ।
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ॥ ६ ॥

४१५. अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ ७ ॥

४१६. उपो षु शृणुही गिरो मघवन्मातथाइव ।
कदा नः सूनृतावतः कर इदर्थयास इद्योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ ८ ॥

४१७. चन्द्रमा अप्स्वा३ऽन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।
न वो हिरण्यनेमयः पदं विन्दन्ति विद्युतो वित्तं मे अस्य रोदसी ॥ ९ ॥

४१८. प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।
स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ १० ॥

अष्टमी दशतिः

ऋषिः—१, ७ वसुश्रुतः; २, ४ विमदः; ३ सत्यश्रवाः; ५, ६ गोतमः; ८ अंहोमुग्वामदेव्यः ॥ देवता—१, २, ७ अग्निः; ३ उषाः; ४ सोमः; ५, ६ इन्द्रः; ८ विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—१-७ पङ्क्तिः; ८ उपरिष्टाद् बृहती ॥ स्वरः—१-७ पञ्चमः; ८ मध्यमः ॥

४१९. आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥

४२०. अग्निं न स्ववृक्तिभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
शीरं पावकशोचिषं वि वो मदे यज्ञेषु स्तीर्णबर्हिषं विवक्षसे ॥ २ ॥

४२१. महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती ।
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ ३ ॥

४२२. भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम् ।
अथा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणा गावो न यवसे विवक्षसे ॥ ४ ॥

४२३. क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ वावृते शवः ।
श्रिय ऋष्व उपाकयोर्नि शिप्री हरिवां दधे हस्तयोर्वज्रमायसम् ॥ ५ ॥

४२४. स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविदम् ।
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्रा चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ ६ ॥

४२५. अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः ।
अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ७ ॥

४२६. न तमंहो न दुरितं देवासो अष्ट मर्त्यम् ।
सजोषसो यमर्यमा मित्रो नयति वरुणो अति द्विषः ॥ ८ ॥

नवमी दशतिः

ऋषिः—१, ३-५, १० धिष्ण्या ऐश्वरयोऽग्नयः; २, ६ त्र्यरुणत्रसदस्यू; ७ वसिष्ठः; ८, ९ वामदेवः ॥ देवता—१-६, १० पवमानः; ७ मरुतः; ८ अग्निः; ९ वाजिनां स्तुतिः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ५, ७, १० द्विपदा पङ्क्तिः; २, ६ त्रिपदा पिपीलिकामध्यानुष्टुप्; ८ पदंपङ्क्तिः; ९ पुरउष्णिक् ॥ स्वरः—१, ३-५, ७, ८, १० पञ्चमः; २, ६ गान्धारः; ९ ऋषभः ॥

४२७. परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥ १ ॥

४२८. पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे ॥ २ ॥

४२९. पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥ ३ ॥

४३०. पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥ ४ ॥

४३१. इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे कविर्भगाय ॥५॥

४३२. अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये ।
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे ॥६॥

४३३. क ईं व्यक्ता नरः सनीडा रुद्रस्य मर्या अथा स्वश्वाः ॥७॥

४३४. अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् ।
ऋध्यामा त ओहैः ॥८॥

४३५. आविर्मर्या आ वाजं वाजिनो अग्मं देवस्य सवितुः सवम् ।
स्वर्गाँ अर्वन्तो जयत ॥९॥

४३६. पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो महाँ अवीनामनुपूर्व्यः ॥१०॥

इति पञ्चमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ पञ्चमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

दशमी दशतिः

ऋषिः—१, २, ५, ६, ८–१० वामदेवः; ३, ४ अवस्युः; ७ संवर्तः ॥ देवता—१–५, ८–१० इन्द्रः; ६ विश्वेदेवाः; ७ उषाः ॥ छन्दः—द्विपदाविराट्पङ्क्तिः ॥
स्वरः—पञ्चमः ॥

४३७. विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर यं त्वा शविष्ठमीमहे ॥१॥

४३८. एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ॥२॥

४३९. ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ ॥३॥

४४०. अनवस्ते रथमश्वाय तक्षुस्त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् ॥४॥

४४१. शं पदं मघं रयीषिणे न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम् ॥५॥

४४२. सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः ॥६॥

४४३. आ याहि वनसा सह गावः सचन्त वर्तनिं यदूधभिः ॥७॥

४४४. उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र ॥८॥

४४५. अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः ॥९॥

४४६. प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते ॥१०॥

एकादशी दशतिः

ऋषिः १, ३, ४, ७, ९, १० वामदेवः; २ बन्धुः; ५ संवर्त्तः; ६ भुवन आप्त्यः; ८ भरद्वाजः॥
देवता—१, २, ३ अग्निः; ४, ८, १० इन्द्रः; ५ उषाः; ६, ७, ९ विश्वेदेवाः॥
छन्दः—१, ३, ४, ७ द्विपदा गायत्री; २, ५, ६ द्विपदा पङ्क्तिः; ८, ९ द्विपदा त्रिष्टुप्; १० एकपदा गायत्री॥ स्वरः—१, ३, ४, ७, १० षड्जः; २, ५, ६ पञ्चमः; ८, ९ धैवतः॥

४४७. अचेत्यग्निश्चिकितिर्हव्यवाड् न सुमद्रथः ॥१॥

४४८. अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥२॥

४४९. भगो न चित्रो अग्निर्महोनां दधाति रत्नम् ॥३॥

४५०. विश्वस्य प्र स्तोभ पुरो वा सन् यदि वेह नूनम् ॥४॥

४५१. उषा अप स्वसुष्टमः सं वर्तयति वर्तनिं सुजातता ॥५॥

४५२. इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥६॥

४५३. वि स्रुतयो यथा पथ इन्द्र त्वद्यन्तु रातयः ॥७॥

४५४. अया वाजं देवहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः ॥८॥

४५५. ऊर्जा मित्रो वरुणः पिन्वतेडाः पीवरीमिषं कृणुही न इन्द्र ॥९॥

४५६. इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥१०॥

द्वादशी दशतिः

ऋषिः—१, १० गृत्समदः; २ गौराङ्गिरसः; ३, ५, ९ परुच्छेपः; ४ रेभः; ६ एवयामरुत्; ७ अनानतः पारुच्छेपिः; ८ नकुलः॥ देवता—१, ३, ४, १० इन्द्रः; २ सूर्यः; ५ विश्वेदेवाः; ६ मरुतः; ७ पवमानः; ८ सविता; ९ अग्निः॥ छन्दः—१, १० अष्टिः; २, ४, ६ जगती; ३, ५, ७, ९ अत्यष्टिः; ८, १० अतिशक्वरी॥ स्वरः—१, १० मध्यमः; २, ४, ६ निषादः; ३, ५, ७, ९ गान्धारः; ८, १० पञ्चमः॥

४५७. त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत्सोममपिबद्-
विष्णुना सुतं यथावशम्। स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे
महामुरुं सैनं सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥१॥

४५८. अयं सहस्रमानवो दृशः कवीनां मतिर्ज्योतिर्विधर्म ।
ब्रध्नः समीचीरुषसः समैरयदरेपसः सचेतसः स्वसरे
मन्युमन्तश्चिता गोः ॥२॥

४५९. एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव
सत्पतिरस्ता राजेव सत्पतिः। हवामहे त्वा प्रयस्वन्तः
सुतेष्वा पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये ॥३॥
४६०. तमिन्द्रं जोहवीमि मघवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कुतं
श्रवांसि भूरि। मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्त राये
नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री ॥४॥
४६१. अस्तु श्रौषट् पुरो अग्निं धिया दध आ नु त्यच्छर्द्धो
दिव्यं वृणीमह इन्द्रवायू वृणीमहे ।
यद्ध क्राणा विवस्वते नाभा सन्दाय नव्यसे ।
अध प्र नूनमुप यन्ति धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ॥५॥
४६२. प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वते गिरिजा
एवयामरुत्। प्र शर्धाय प्र यज्यवे सुखादये तवसे
भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शवसे ॥६॥
४६३. अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति सयुग्वभिः
सूरो न सयुग्वभिः। धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो
हरिः। विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥७॥
४६४. अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवं
रत्नधामभि प्रियं मतिम्। ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्
सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः ॥८॥
४६५. अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं
न जातवेदसम्। य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा ।
घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः ॥९॥
४६६. तव त्यन्नर्यं नृतोऽप इन्द्र प्रथमं पूर्व्यं दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।
यो देवस्य शवसा प्रारिणा असु रिणन्नपः ।
भुवो विश्वमभ्यदेवमोजसा विदेदूर्जं शतक्रतुर्विदेदिषम् ॥१०॥

इति सामवेदसंहितायामेन्द्रं काण्डम्॥

अथ पवमानं काण्डम्

अथ पञ्चमोऽध्यायः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१, ४ अमहीयुः; २ मधुच्छन्दाः; ३ भृगुर्वारुणिः; ५ त्रितः; ६ कश्यपः; ७ जमदग्निः; ८ दृढच्युत आगस्त्यः; ९, १० काश्यपोऽसितः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

४६७. उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रं शर्म महि श्रवः॥ १॥

४६८. स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः॥ २॥

४६९. वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा॥ ३॥

४७०. यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा। देवावीरघशंसहा॥ ४॥

४७१. तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः। हरिरेति कनिक्रदत्॥ ५॥

४७२. इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः। अर्कस्य योनिमासदम्॥ ६॥

४७३. असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः। श्येनो न योनिमासदत्॥ ७॥

४७४. पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे। मरुद्भ्यो वायवे मदः॥ ८॥

४७५. परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत्। मदेषु सर्वधा असि॥ ९॥

४७६. परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः। स्वानैर्याति कविक्रतुः॥ १०॥

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१ श्यावाश्वः; २ त्रितः; ३, ८ अमहीयुः; ४ भृगुः; ५, ६ कश्यपः; ७ निध्रुविः काश्यपः; ९, १० काश्यपोऽसितः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

४७७. प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम्। सुता विदथे अक्रमुः॥ १॥

४७८. प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः। वनानि महिषाइव॥ २॥

४७९. पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने।
विश्वा अप द्विषो जहि॥ ३॥

४८०. वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे।
पवमान स्वर्दृशम्॥ ४॥

४८१. इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मतिः ।
सृजदश्वं रथीरिव ॥५॥

४८२. असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया ।
शुक्रासो वीरयाशवः ॥६॥

४८३. पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः ।
वायुमा रोह धर्मणा ॥७॥

४८४. पवमानो अजीजनद् दिवश्चित्रं न तन्यतुम् ।
ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥८॥

४८५. परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा ।
मधो अर्षन्ति धारया ॥९॥

४८६. परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः ।
कारुं बिभ्रत् पुरुस्पृहम् ॥१०॥

इति पञ्चमः प्रपाठकः समाप्तः ॥

अथ षष्ठप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१, ८, ९ अमहीयुः; २ बृहन्मतिराङ्गिरसः; ३ जमदग्निः; ४ प्रभूवसुः; ५ मेध्यातिथिः; ६, ७ निध्रुविः काश्यपः; १० उचथ्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

४८७. उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् ।
इन्दुं देवा अयासिषुः ॥१॥

४८८. पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः ।
शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥२॥

४८९. आविशन् कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः ।
इन्दुरिन्द्राय धीयते ॥३॥

४९०. असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः । कार्ष्मन् वाजी न्यक्रमीत् ॥४॥

४९१. प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः । घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥५॥

४९२. अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम् ॥६॥

४९३. अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः । हिन्वानो मानुषीरपः ॥७॥

४९४. स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे । वव्रिवांसं महीरपः ॥८॥

४९५. अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा । अवाहन्नवतीर्नव ॥९॥

४९६. परि द्युक्षं सनद्रयिं भरद्वाजं नो अन्धसा । स्वानो अर्ष पवित्र आ ॥१०॥

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१ मेधातिथिः; २, ७ भृगुः; ३ उचथ्यः; ४ अवत्सारः; ५ निध्रुविः काश्यपः; ६, १० असितः; ८, ९ कश्यपो मारीचः; ११ कविः; १२ जमदग्निः; १३ अयास्य आङ्गिरसः; १४ अमहीयुः। देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

४९७. अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान् मित्रो न दर्शतः। सं सूर्येण दिद्युते॥१॥

४९८. आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे। पान्तमा पुरुस्पृहम्॥२॥

४९९. अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय। पुनाहीन्द्राय पातवे॥३॥

५००. तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः। तरत् स मन्दी धावति॥४॥

५०१. आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्य्यम्। अस्मे श्रवांसि धारय॥५॥

५०२. अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः। रुचे जनन्त सूर्यम्॥६॥

५०३. अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत्। सीदन् योनौ वनेष्वा॥७॥

५०४. वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः। वृषा धर्माणि दध्रिषे॥ ८॥

५०५. इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः। इन्दो रुचाभि गा इहि॥ ९॥

५०६. मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः। अव्या वारेभिरस्मयुः॥ १०॥

५०७. अया सोम सुकृत्यया महान्त्सन्नभ्यवर्धथाः। मन्दान इद् वृषायसे॥ ११॥

५०८. अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति। हिन्वान आप्यं बृहत्॥ १२॥

५०९. प्र न इन्दो महे तु न ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि। अभि देवाँ अयास्यः॥ १३॥

५१०. अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्॥ १४॥

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—भरद्वाजः कश्यपो गोतमोऽत्रिर्विश्वामित्रो जमदग्निर्वसिष्ठः॥
देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

५११. पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि।
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः॥ १॥

५१२. परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः।
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वाऽन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः॥ २॥

५१३. आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो व्राराण्यव्यया।
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दध्रिषे॥ ३॥

५१४. प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम्॥ ४॥

५१५. सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम्।
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया॥ ५॥

५१६. तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीँरति ताँ इहि॥ ६॥

५१७. मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि॥ ७॥

५१८. अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।
समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः ॥ ८ ॥

५१९. पुनानः सोम जागृविरव्या वारैः परि प्रियः ।
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तम मध्वा यज्ञं मिमिक्ष णः ॥ ९ ॥

५२०. इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः ।
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः ॥ १० ॥

५२१. पवस्व वाजसातमोऽभि विश्वानि वार्या ।
त्वं समुद्रः प्रथमे विधर्मं देवेभ्यः सोम मत्सरः ॥ ११ ॥

५२२. पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया ।
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयांसि च ॥ १२ ॥

षष्ठी दशतिः

ऋषिः—१, ९ उशनाः काव्यः; २ वृषगणो वासिष्ठः; ३, ७ पराशरः शाक्त्यः; ४, ६ वसिष्ठो मैत्रावरुणः; ५, १० प्रतर्दनो दैवोदासिः; ८ प्रस्कण्वः काण्वः ॥
देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

५२३. प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष ।
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति ॥ १ ॥

५२४. प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥ २ ॥

५२५. तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥ ३ ॥

५२६. अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म पशुमन्ति होता ॥ ४ ॥

५२७. सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥ ५ ॥

५२८. अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशन्त वाणीः।
वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि॥ ६॥

५२९. अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मं जनयन्प्रजा भुवनस्य गोपाः।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः॥ ७॥

५३०. कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन् वनस्य जठरे पुनानः।
नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गामतो मतिं जनयत स्वधाभिः॥ ८॥

५३१. एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णः परि पवित्रे अक्षाः।
सहस्त्रदाः शतदा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात्॥ ९॥

५३२. पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये।
अव द्रोणानि घृतवन्ति रोह मदिन्तमो मत्सरः इन्द्रपानः॥ १०॥

सप्तमी दशतिः

ऋषिः—१ प्रतर्दनः; २, १० पराशरः शाक्त्यः; ३ इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः; ४ वसिष्ठो मैत्रावरुणः; ५ मृडीको वासिष्ठः; ६ नोधा गोतमः; ७ कण्वो घौरः; ८ मन्युर्वासिष्ठः; ९ कुत्स आङ्गिरसः; ११ कश्यपो मारीचः; १२ प्रस्कण्वः काण्वः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

५३३. प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।
भद्रान्कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥ १॥

५३४. प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन् वारं यत्पूतो अत्येष्यव्यम् ।
पवमान पवसे धाम गोनां जनयन्त्सूर्यमपिन्वो अर्कैः ॥ २॥

५३५. प्र गायताभ्यर्चाम देवान्त्सोमं हिनोत महते धनाय ।
स्वादुः पवतामति वारमव्यमा सीदतु कलशं देव इन्दुः ॥ ३॥

५३६. प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिषन्नयासीत् ।
इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः ॥ ४॥

५३७. तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य धर्मं द्युक्षोरनीके ।
आदीमायन् वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम् ॥ ५॥

५३८. साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः ।
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी ॥६॥

५३९. अधि यदस्मिन् वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूरे न विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयान् व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ॥७॥

५४०. इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय ।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥८॥

५४१. अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व ।
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात् ॥९॥

५४२. महत् तत् सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽवृणीत देवान् ।
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥१०॥

५४३. असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमा मनीषा ।
दश स्वसारो अधि सानो अव्ये मृजन्ति वह्निं सदनेष्वच्छ ॥११॥

५४४. अपामिवेदूर्मयस्तर्त्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ ।
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चाच विशन्त्युशतीरुशन्तम् ॥१२॥

इति षष्ठप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ षष्ठप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

अष्टमी दशतिः

ऋषिः—१ अन्धीगुः श्यावाश्विः; २ नहुषो मानवः; ३ ययातिर्नाहुषः; ४ मनुः सांवरणः; ५, ८ ऋजिष्वाम्बरीषौ; ६, ७ रेभसूनू काश्यपौ; ९ प्रजापतिर्वाच्यो वा॥

देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१-६, ८, ९ अनुष्टुप्; ७ बृहती॥

स्वरः—१-६, ८, ९ गान्धारः; ७ मध्यमः॥

५४५. पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥१॥

५४६. अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ।
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥२॥

५४७. सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः ॥ ३ ॥

५४८. सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ ४ ॥

५४९. अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम् ।
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥ ५ ॥

५५०. अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः ॥ ६ ॥

५५१. आ हर्यताय धृष्णवे धनुष्टन्वन्ति पौंस्यम् ।
शुक्रा वि यन्त्यसुराय निर्णिजे विपामग्रे महीयुवः ॥ ७ ॥

५५२. परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
यो देवान्विश्वाँ इत्परि मदेन सह गच्छति ॥ ८ ॥

५५३. प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः ।
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥ ९ ॥

नवमी दशतिः

ऋषिः—१-३, ५ कविर्भार्गवः; ४, ६ ऋषिगणः; ७ रेणुर्वैश्वामित्रः; ८ वेनो भार्गवः; ९ वसुर्भारद्वाजः; १० वत्सप्रीः; ११ अत्रिर्भौमः; १२ पवित्र आङ्गिरसः ॥
देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

५५४. अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते ।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद् विचक्षणः ॥ १ ॥

५५५. अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र स्वानासो बृहद् देवेषु हरयः ।
वि चिदश्नाना इषयो अरातयोऽर्यो नः सन्तु सनिषन्तु नो धियः ॥ २ ॥

५५६. एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टमः ।
अभ्यृ३तस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसा च धेनवः ॥ ३ ॥

५५७. प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम्।
मर्यइव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा॥ ४॥
५५८. धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः।
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा॥ ५॥
५५९. वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः।
प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः॥ ६॥
५६०. त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे व्योमनि।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत॥ ७॥
५६१. इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु रक्षसा सह।
मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः॥ ८॥
५६२. असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारमत्येष्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्॥ ९॥
५६३. प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवोऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः।
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्त्रिया निर्णिजं धिरे॥ १०॥
५६४. अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते।
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते॥ ११॥
५६५. पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद् वहन्तः सं तदाशत॥ १२॥

दशमी दशतिः

ऋषिः—१, ७, ११ अग्निश्चाक्षुषः; २ चक्षुर्मानवः; ३, ४, ९, १० पर्वतनारदौ;
५ त्रित आप्त्यः; ६ मनुराप्सवः; ८, १२ द्वित आप्त्यः॥ देवता—इन्द्रः॥
छन्दः—उष्णिक्॥ स्वरः—ऋषभः॥

५६६. इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः।
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः॥ १॥

५६७. प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्त्रव ।
द्युमन्तं शुष्ममा भर स्वर्विदम् ॥२॥

५६८. सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत ।
शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥३॥

५६९. तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत ।
शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥४॥

५७०. प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् ।
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥५॥

५७१. पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा ।
आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ॥६॥

५७२. सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति ।
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥७॥

५७३. प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उच्यते ।
भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते ॥८॥

५७४. गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिव ।
शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय ॥९॥

५७५. अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत ।
गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ॥१०॥

५७६. पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या ।
अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥११॥

५७७. परि कोशं मधुश्चुतं सोमः पुनानो अर्षति ।
अभि वाणीर्ऋषीणां सप्ता नूषत ॥१२॥

एकादशी दशतिः

ऋषिः—१ गौरिवीतिः शाक्त्यः; २ ऊर्ध्वसद्मा आङ्गिरसः; ३ ऋजिश्वा भरद्वाजः; ४ कृतयशा आङ्गिरसः; ५ ऋणञ्चयः; ६ शक्तिर्वासिष्ठः; ७, ८ उरुराङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-४, ६ ककुबुष्णिक्; ५ यवमध्या गायत्री; ७, ८ काकुभः प्रगाथः (७ ककुबुष्णिक्; ८ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१-४, ६ ऋषभः; ५ षड्जः; ७, ८ मध्यमः ॥

५७८. पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः।
महि द्युक्षतमो मदः ॥ १ ॥

५७९. अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहिं देव देवयुम्।
वि कोशं मध्यमं युव ॥ २ ॥

५८०. आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम्।
वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥ ३ ॥

५८१. एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवोदुहम्।
विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥ ४ ॥

५८२. स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम्।
सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥ ५ ॥

५८३. त्वं ह्या३ङ्ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः।
अमृतत्वाय घोषयन् ॥ ६ ॥

५८४. एष स्य धारया सुतोऽव्या वारेभिः पवते मदिन्तमः।
क्रीडन्नूर्मिरपामिव ॥ ७ ॥

५८५. य उस्रिया अपि या अन्तरश्मनि निर्गा अकृन्तदोजसा।
अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णवा रुज।
ओ३म् वर्मीव धृष्णवा रुज ॥ ८ ॥

इति षष्ठप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः ॥

इति पञ्चमोऽध्यायः ॥

इति पवमानं काण्डम् ॥

अथ आरण्यं काण्डम्

अथ षष्ठोऽध्यायः

अथ षष्ठप्रपाठकस्य तृतीयोऽर्धः

प्रथमा दशतिः

ऋषिः—१ भरद्वाजः; २ वसिष्ठः; ३, ६ वामदेवः; ४ शुनःशेपः; ५ गृत्समदः; ७, ८ अमहीयुः; ९ आत्मा॥ देवता—१-३ इन्द्रः; ४ वरुणः; ५, ७, ८ पवमानः सोमः; ६ विश्वेदेवाः; ९ अन्नम्॥ छन्दः—१ बृहती; २, ४, ५, ९ त्रिष्टुप्; ३, ७, ८ गायत्री; ६ एकपदा त्रिष्टुप्॥ स्वरः—१ मध्यमः; २, ४-६, ९ धैवतः; ३, ७, ८ षड्जः॥

५८६. इन्द्र ज्येष्ठं न आ भर ओजिष्ठं पुपुरि श्रवः।
यद्दिधृक्षेम वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र पप्राः॥ १॥

५८७. इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधिक्षमा विश्वरूपं यदस्य।
ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद्राध उपस्तुतं चिदर्वाक्॥ २॥

५८८. यस्येदमा रजोयुजस्तुजे जने वनं स्वः। इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत्॥ ३॥

५८९. उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय।
अथादित्य व्रते वयं तवानागसो अदितये स्याम॥ ४॥

५९०. त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥ ५॥

५९१. इमं वृषणं कृणुतैकमिन्माम् ॥ ६॥

५९२. स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
वरिवोवित् परि स्रव ॥ ७॥

५९३. एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम् ।
सिषासन्तो वनामहे ॥ ८॥

५९४. अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम।
यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्नमन्नमदन्तमद्मि ॥ ९॥

द्वितीया दशतिः

ऋषिः—१ श्रुतकक्षः; २ पवित्रः; ३, ४ मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः; ५ प्रथः; ६ गृत्समदः;
७ नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—१, ३, ४, ७ इन्द्रः; २ पवमानः; ५ विश्वेदेवाः;
६ वायुः ॥ छन्दः—१, ३, ४, ६ गायत्री; २ जगती; ५ त्रिष्टुप्;
७ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१, ३, ४, ६ षड्जः; २ निषादः;
५ धैवतः; ७ गान्धारः ॥

५९५. त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च। परुष्णीषु रुशत् पयः ॥ १ ॥

५९६. अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमादधुः ॥ २ ॥

५९७. इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा ।
इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ ३ ॥

५९८. इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥ ४ ॥

५९९. प्रथश्च यस्य सप्रथश्च नामानुष्टुभस्य हविषो हविर्यत् ।
धातुर्द्युतानात् सवितुश्च विष्णो रथन्तरमा जभारा वसिष्ठः ॥ ५ ॥

६००. नियुत्वान् वायवा गह्ययं शुक्रो अयामि ते ।
गन्तासि सुन्वतो गृहम् ॥ ६ ॥

६०१. यज्जायथा अपूर्व्य मघवन्वृत्रहत्याय ।
तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम् ॥ ७ ॥

तृतीया दशतिः

ऋषिः—१, ५, ७, १० वामदेवः; २, ३ गोतमः; ४ मधुच्छन्दाः; ६ गृत्समदः; ८, ९ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः; ११ हिरण्यस्तूपः; १२, १३ विश्वामित्रः ॥ देवता—१ प्रजापतिः; २, ३ पवमानः सोमः; ४–६, १३ अग्निः; ७ रात्रिः; ८ वैश्वानरः; ९ विश्वेदेवाः; १० लिङ्गोक्ताः; ११ इन्द्रः; १२ आत्मा ॥ छन्दः—१, ७ अनुष्टुप्; २, ३, ५, ६, ९, ११–१३ त्रिष्टुप्; ४ गायत्री;
८ जगती; १० महापङ्क्तिः ॥ स्वरः—१, ७ गान्धारः; २, ३, ५, ६, ९,
११–१३ धैवतः; ४ षड्जः; ८ निषादः; १० पञ्चमः ॥

६०२. मयि वर्चो अथो यशोऽथो यज्ञस्य यत्पयः ।
परमेष्ठी प्रजापतिर्दिवि द्यामिव दृंहतु ॥ १ ॥

६०३. सं ते पयांसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः ।
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व ॥ २ ॥

६०४. त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः ।
त्वमातनोरुर्वा३न्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ ॥ ३ ॥

६०५. अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ॥ ४ ॥

६०६. ते मन्वत प्रथमं नाम गोनां त्रिः सप्त परमं नाम जानन् ।
ता जानती रभ्यनूषत क्षा आविर्भुवन्नरुणीर्यशसा गावः ॥ ५ ॥

६०७. समन्या यन्त्युपयन्त्यन्याः समानमूर्वं नद्यस्पृणन्ति ।
तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसमपान्नपातमुप यन्त्यापः ॥ ६ ॥

६०८. आ प्रागाद्भद्रा युवतिरह्नः केतून्त्समीर्त्सति ।
अभूद्भद्रा निवेशनी विश्वस्य जगतो रात्री ॥ ७ ॥

६०९. प्रक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः प्र नो वचो विदथा जातवेदसे ।
वैश्वानराय मतिर्नव्यसे शुचिः सोमइव पवते चारुरग्नये ॥ ८ ॥

६१०. विश्वे देवा मम शृण्वन्तु यज्ञमुभे रोदसी अपां नपाच्च मन्म ।
मा वो वचांसि परिचक्ष्याणि वोचं सुम्नेष्विद्वो अन्तमा मदेम ॥ ९ ॥

६११. यशो मा द्यावापृथिवी यशो मेन्द्रबृहस्पती ।
यशो भगस्य विन्दतु यशो मा प्रतिमुच्यताम् ।
यशस्व्या३स्याः संसदोऽहं प्रवदिता स्याम् ॥ १० ॥

६१२. इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम् ॥ ११ ॥

६१३. अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् ।
त्रिधातुरर्को रजसो विमानोऽजस्रं ज्योतिर्हविरस्मि सर्वम् ॥ १२ ॥

६१४. पात्यग्निर्विपो अग्रं पदं वेः पाति यह्वश्चरणं सूर्य्यस्य ।
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः ॥ १३ ॥

चतुर्थी दशतिः

ऋषिः—१, २, ८-१२ वामदेवः; ३-७ नारायणः ॥ देवता—१ अग्निः; २ ऋतुः;
३-७ पुरुषः; ८ द्यावापृथिवी; ९, ११ इन्द्रः; १० आत्मन आशीः; १२ गौः ॥
छन्दः—१, २ पङ्क्तिः; ३—७, ९, १० अनुष्टुप्; ८, ११, १२ त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—१, २ पञ्चमः; ३-७, ९, १० गान्धारः;
८, ११, १२ धैवतः ॥

६१५. भ्राजन्त्यग्ने समिधान दीदिवो जिह्वा चरत्यन्तरासनि ।
स त्वं नो अग्ने पयसा वसुविद्रयिं वर्चो दृशेऽदाः ॥ १ ॥

६१६. वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः ।
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिरः इन्नु रन्त्यः ॥ २ ॥

६१७. सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमिं सर्वतो वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ ३ ॥

६१८. त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ।
तथा विष्वङ् व्यक्रामदशनानशने अभि ॥ ४ ॥

६१९. पुरुष एवेदं सर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम् ।
पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ५ ॥

६२०. तावानस्य महिमा ततो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥ ६ ॥

६२१. ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥ ७ ॥

६२२. मन्ये वां द्यावापृथिवी सुभोजसौ ये अप्रथेथाममितमभि योजनम् ।
द्यावापृथिवी भवतं स्योने ते नो मुञ्चतमंहसः ॥ ८ ॥

६२३. हरी त इन्द्र श्मश्रूण्युतो ते हरितौ हरी ।
तं त्वा स्तुवन्ति कवयः पुरुषासो वनर्गवः ॥ ९ ॥

६२४. यद्वर्च्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत ।
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा सं सृजामसि ॥ १० ॥

६२५. सहस्तन्न इन्द्र दद्ध्योज ईशे ह्यस्य महतो विरप्शिन् ।
क्रतुं न नृम्णं स्थविरं च वाजं वृत्रेषु शत्रून्त्सुहना कृधी नः ॥ ११ ॥

६२६. सहर्षभाः सहवत्सा उदेत विश्वा रूपाणि बिभ्रतीर्द्व्यूध्नीः ।
उरुः पृथुरयं वो अस्तु लोक इमा आपः सुप्रपाणा इह स्त ॥ १२ ॥

पञ्चमी दशतिः

ऋषिः—१ शतं वैखानसाः; २ विभ्राट् सौर्यः; ३ कुत्सः; ४-६ सार्पराज्ञी;
७-१४ प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—१ अग्निः पवमानः; २-१४ सूर्यः ॥
छन्दः—१, ४-१४ गायत्री; २ जगती; ३ त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१,
४-१४ षड्जः; २ निषादः; ३ धैवतः ॥

६२७. अग्न आयूँषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ १ ॥

६२८. विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् ।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति ॥ २ ॥

६२९. चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः ।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ३ ॥

६३०. आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पितरं च प्रयन्त्स्वः ॥ ४ ॥

६३१. अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती । व्यख्यन्महिषो दिवम् ॥ ५ ॥

६३२. त्रिंशद्धाम वि राजति वाक् पतङ्गाय धीयते । प्रति वस्तोरह द्युभिः ॥ ६ ॥

६३३. अप त्ये तायवो यथा नक्षत्रा यन्त्यक्तुभिः । सूराय विश्वचक्षसे ॥ ७ ॥

६३४. अदृश्रन्नस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ अनु । भ्राजन्तो अग्नयो यथा ॥ ८ ॥

६३५. तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य । विश्वमाभासि रोचनम् ॥ ९ ॥

६३६. प्रत्यङ्देवानां विशः प्रत्यङ्ङुदेषि मानुषान् ।
प्रत्यङ्विश्वं स्वर्दृशे ॥१०॥

६३७. येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ अनु ।
त्वं वरुण पश्यसि ॥११॥

६३८. उद् द्यामेषि रजः पृथ्वहा मिमानो अक्तुभिः ।
पश्यञ्जन्मानि सूर्य ॥१२॥

६३९. अयुक्त सप्त शुन्ध्युवः सूरो रथस्य नप्त्र्यः ।
ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः ॥१३॥

६४०. सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य ।
शोचिष्केशं विचक्षण ॥१४॥

इत्यारण्यं काण्डम्॥

इति षष्ठप्रपाठकः षष्ठोऽध्यायश्च समाप्तः॥

इति सामवेद–संहितायां पूर्वार्चिकः॥

अथ महानाम्न्यार्चिकः

ऋषिः—१-१० इन्द्रो वा प्रजापतिर्वा विष्णुर्वा विश्वामित्रो वा ॥ देवता—१-९ इन्द्रः; १० लिङ्गोक्ताः ॥
छन्दः—१-९ विराट्; १० पदपङ्क्तिः ॥ स्वरः—१-९ गान्धारः; १० पञ्चमः ॥

६४१. विदा मघवन् विदा गातुमनुशंसिषो दिशः ।
शिक्षा शचीनां पते पूर्वीणां पुरूवसो ॥ १ ॥

६४२. आभिष्ट्वमभिष्टिभिः स्वा३ऽ न्नांशुः ।
प्रचेतन प्रचेतयेन्द्र द्युम्नाय न इषे ॥ २ ॥

६४३. एवा हि शक्रो राये वाजाय वज्रिवः ।
शविष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जस आ याहि पिब मत्स्व ॥ ३ ॥

६४४. विदा राये सुवीर्यं भुवो वाजानां पतिर्वशाँ अनु
मंहिष्ठ वज्रिन्नृञ्जसे यः शविष्ठः शूराणाम् ॥ ४ ॥

६४५. यो मंहिष्ठो मघोनामंशुर्न शोचिः ।
चिकित्वो अभि नो नयेन्द्रो विदे तमु स्तुहि ॥ ५ ॥

६४६. ईशे हि शक्रस्तमूतये हवामहे जेतारमपराजितम् ।
स नः स्वर्षदति द्विषः क्रतुश्छन्द ऋतं बृहत् ॥ ६ ॥

६४७. इन्द्रं धनस्य सातये हवामहे जेतारमपराजितम् ।
स नः स्वर्षदति द्विषः स नः स्वर्षदति द्विषः ॥ ७ ॥

६४८. पूर्वस्य यत्ते अद्रिवोंऽशुर्मदाय ।
सुम्न आ धेहि नो वसो पूर्तिः शविष्ठ शस्यते ।
वशी हि शक्रो नूनं तन्नव्यं संन्यसे ॥ ८ ॥

६४९. प्रभो जनस्य वृत्रहन्त्समर्येषु ब्रवावहै ।
शूरो यो गोषु गच्छति सखा सुशेवो अद्वयुः ॥ ९ ॥

६५०. एवा ह्येवऽ३ऽ३ऽ३व । एवा ह्यग्ने । एवा हीन्द्र ।
एवा हि पूषन् । एवा हि देवाः । ओं एवा हि देवाः ॥ १० ॥

इति महानाम्न्यार्चिकः समाप्तः ॥

उत्तरार्चिकः

अथ प्रथमोऽध्यायः

प्रथमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥

छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

६५१. उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ इयक्षते ॥ १ ॥

६५२. अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः। देवं देवाय देवयु ॥ २ ॥

६५३. स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—कश्यपो मारीचः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

६५४. दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा। सोमाः शुक्रा गवाशिरः ॥ १ ॥

६५५. हिन्वानो हेतृभिर्हित आ वाजं वाज्यक्रमीत्। सीदन्तो वनुषो यथा ॥ २ ॥

६५६. ऋधक्सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवा कवे। पवस्व सूर्यो दृशे ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—शतं वैखानसाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

६५७. पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत। अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥ १ ॥

६५८. अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये। अवावशन्त धीतयः ॥ २ ॥

६५९. अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः। अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

६६०. अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥ १ ॥

६६१. तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य ॥ २ ॥

६६२. स नः पृथु श्रवाय्यमच्छा देव विवाससि। बृहदग्ने सुवीर्यम् ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—विश्वामित्रो जमदग्निर्वा ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

६६३. आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्। मध्वा रजांसि सुक्रतू ॥ १ ॥

६६४. उरुशंसा नमोवृधा मह्ना दक्षस्य राजथः। द्राघिष्ठाभिः शुचिव्रता ॥ २ ॥

६६५. गृणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्। पातं सोममृतावृधा ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—इरिम्बिठिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

६६६. आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्। एदं बर्हिः सदो मम ॥ १ ॥

६६७. आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना। उप ब्रह्माणि नः शृणु ॥ २ ॥

६६८. ब्रह्माणस्त्वा युजा वयं सोमपामिन्द्र सोमिनः। सुतावन्तो हवामहे ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—विश्वामित्रो गाथिनः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

६६९. इन्द्राग्नी आ गतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्। अस्य पातं धियेषिता ॥ १ ॥

६७०. इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः। अया पातमिमं सुतम् ॥ २ ॥

६७१. इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे। ता सोमस्येह तृम्पताम् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—अमहीयुराङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

६७२. उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रं शर्म महि श्रवः ॥ १ ॥

६७३. स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः। वरिवोवित् परि स्रव ॥ २ ॥

६७४. एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम्। सिषासन्तो वनामहे ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ बार्हतः प्रगाथः,
२ सतोबृहती ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

६७५. पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः ॥ १ ॥

६७६. दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थमासदत् ।
आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षसि नृभिर्धौतो विचक्षणः ॥ २ ॥

(१०)

ऋषिः—उशना: काव्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

६७७. प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष ।
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्हीं रशनाभिर्नयन्ति ॥ १ ॥

६७८. स्वायुधः पवते देव इन्दुरशस्तिहा वृजना रक्षमाणः ।
पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः ॥ २ ॥

६७९. ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन ।
स चिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यां३ गुह्यं नाम गोनाम् ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ बार्हतः प्रगाथः, २ सतोबृहती ॥
स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

६८०. अभि त्वा शूर नोनुमोऽदुग्धाइव धेनवः ।
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः ॥ १ ॥

६८१. न त्वावाँ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे ॥ २ ॥

(१२)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

६८२. कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥ १ ॥

६८३. कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः । दृढा चिदारुजे वसु ॥ २ ॥

६८४. अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम् । शतं भवास्यूतये ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—नोधा गौतमः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ बार्हतः प्रगाथः,
२ सतोबृहती ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

६८५. तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ॥ १ ॥

६८६. द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।
क्षुमन्तं वाजं शतिनं सहस्त्रिणं मक्षू गोमन्तमीमहे ॥२॥

(१४)

ऋषिः—कलिः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ बार्हतः प्रगाथः,
२ सतोबृहती ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

६८७. तरोभिर्वो विदद्वसुमिन्द्रं सबाध ऊतये ।
बृहद्गायन्तः सुतसोमे अध्वरे हुवे भरं न कारिणम् ॥१॥

६८८. न यं दुध्रा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदेषु शिप्रमन्धसः ।
य आदृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम् ॥२॥

(१५)

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

६८९. स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतः ॥१॥

६९०. रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते । द्रोणे सधस्थमासदत् ॥२॥

६९१. वरिवोधातमो भुवो मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः । पर्षि राधो मघोनाम् ॥३॥

(१६)

ऋषिः—गौरिवीतिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः
(१ ककुप्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः, २ पञ्चमः ॥

६९२. पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः ।
महि द्युक्षतमो मदः ॥१॥

६९३. यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायतेऽस्य पीत्वा स्वर्विदः ।
स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीदिषोऽच्छा वाजं नैतशः ॥२॥

(१७)

ऋषिः—अग्निश्चाक्षुषः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

६९४. इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः ।
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥१॥

६९५. अयं भराय सानसिरिन्द्राय पवते सुतः ।
सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे ॥२॥

६९६. अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णाति सानसिम् ।
वज्रं च वृषणं भरत् समप्सुजित् ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—अन्धीगुः श्यावाश्विः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—आनुष्टुभः प्रगाथः
(१ अनुष्टुप्, २-३ गायत्री) ॥ स्वरः—१ गान्धारः, २-३ षड्जः ॥

६९७. पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥ १ ॥

६९८. यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः । इन्दुरश्वो न कृत्व्यः ॥ २ ॥

६९९. तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया । यज्ञाय सन्त्वद्रयः ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—कविर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

७००. अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते ।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः ॥ १ ॥

७०१. ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यां३ नाम तृतीयमधि रोचनं दिवः ॥ २ ॥

७०२. अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन्नृभिर्येमाणः कोश आ हिरण्यये ।
अभी ऋतस्य दोहना अनूषताधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजसि ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ बार्हतः प्रगाथः,
२ सतोबृहती ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

७०३. यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् ॥ १ ॥

७०४. ऊर्जो नपातं स हिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये ।
भुवद्वाजेष्वविता भुवद् वृध उत त्राता तनूनाम् ॥ २ ॥

(२१)

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७०५. एह्यू षु ब्रवाणि तेऽग्न इत्थेतरा गिरः । एभिर्वर्धास इन्दुभिः ॥ १ ॥

७०६. यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम्। तत्र योनिं कृणवसे ॥ २ ॥

७०७. न हि ते पूर्तमक्षिपद् भुवन्नेमानां पते। अथा दुवो वनवसे ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—सोभरिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुप्, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ ऋषभः, २ पञ्चमः ॥

७०८. वयमु त्वामपूर्व्य स्थूरं न कच्चिद्भरन्तोऽवस्यवः ।
वज्रिञ्चित्रं हवामहे ॥ १ ॥

७०९. उप त्वा कर्मन्नूतये स नो युवोग्रश्चक्राम यो धृषत् ।
त्वामिध्यवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम् ॥ २ ॥

(२३)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ ककुबुष्णिक्, २ उष्णिक्, ३ पुरउष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

७१०. अधा हीन्द्र गिर्वण उप त्वा काम ईमहे ससृग्महे ।
उदेव ग्मन्त उदभिः ॥ १ ॥

७११. वार्ण त्वा यव्याभिर्वर्धन्ति शूर ब्रह्माणि ।
वावृध्वांसं चिदद्रिवो दिवेदिवे ॥ २ ॥

७१२. युञ्जन्ति हरी इषिरस्य गाथयोरौ रथ उरुयुगे वचोयुजा ।
इन्द्रवाहा स्वर्विदा ॥ ३ ॥

इति प्रथमोऽध्यायः, प्रथमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

प्रथमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—श्रुतकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—१ अनुष्टुप्; २-३ गायत्री॥
स्वरः—१ गान्धारः; २-३ षड्जः॥

७१३. पान्तमा वो अन्धस इन्द्रमभि प्र गायत ।
विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् ॥१॥

७१४. पुरुहूतं पुरुष्टुतं गाथान्या३ सनश्रुतम्। इन्द्र इति ब्रवीतन ॥२॥

७१५. इन्द्र इन्नो महोनां दाता वाजानां नृतुः। महाँ अभिज्ञ्वा यमत् ॥३॥

(२)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

७१६. प्र व इन्द्राय मादनं हर्यश्वाय गायत। सखायः सोमपाव्ने ॥१॥

७१७. शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः। चकृमा सत्यराधसे ॥२॥

७१८. त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो। त्वं हिरण्ययुर्वसो ॥३॥

(३)

ऋषिः—मेधातिथिप्रियमेधौ॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

७१९. वयमु त्वा तदिदर्था इन्द्र त्वायन्तः सखायः। कण्वा उक्थेभिर्जरन्ते ॥१॥

७२०. न घेमन्यदा पपन वज्रिन्नपसो नविष्टौ। तवेदु स्तोमैश्चिकेत ॥२॥

७२१. इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं न स्वप्नाय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः ॥३॥

(४)

ऋषिः—श्रुतकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

७२२. इन्द्राय मद्वने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः। अर्कमर्चन्तु कारवः ॥१॥

७२३. यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः। इन्द्रं सुते हवामहे ॥२॥

७२४. त्रिकद्रुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमत्नत। तमिद्वर्धन्तु नो गिरः ॥३॥

(५)

ऋषिः—इरिम्बिठिः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

७२५. अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि ।
एहीमस्य द्रवा पिब ॥१॥

७२६. शचिगो शचिपूजनायं रणाय ते सुतः ।
आखण्डल प्र हूयसे ॥ २ ॥

७२७. यस्ते शृङ्गवृषो णपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः ।
न्यस्मिन् दध्र आ मनः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—कुसीदी काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७२८. आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय ।
महाहस्ती दक्षिणेन ॥ १ ॥

७२९. विद्मा हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम् ।
तुविमात्रमवोभिः ॥ २ ॥

७३०. न हि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम् ।
भीमं न गां वारयन्ते ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—त्रिशोकः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७३१. अभि त्वा वृषभा सुते सुतं सृजामि पीतये ।
तृम्पा व्यश्नुही मदम् ॥ १ ॥

७३२. मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन् ।
मा कीं ब्रह्मद्विषं वनः ॥ २ ॥

७३३. इह त्वा गोपरीणसं महे मन्दन्तु राधसे ।
सरो गौरो यथा पिब ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—मेधातिथिप्रियमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७३४. इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् ।
अनाभयिन् ररिमा ते ॥ १ ॥

७३५. नृभिर्धौतः सुतो अश्नैरव्या वारैः परिपूतः ।
अश्वो न निक्तो नदीषु ॥ २ ॥

७३६. तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुमकर्म श्रीणन्तः ।
इन्द्र त्वास्मिन्त्सधमादे ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७३७. इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते ।
पिबा त्वा३स्य गिर्वणः ॥ १ ॥

७३८. यस्ते अनु स्वधामसत् सुते नि यच्छ तन्वम् ।
स त्वा ममत्तु सोम्य ॥ २ ॥

७३९. प्र ते अश्नोतु कुक्ष्योः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः ।
प्र बाहू शूर राधसा ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—मधुच्छन्दाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७४०. आ त्वेता नि षीदतेन्द्रमभि प्र गायत ।
सखाय स्तोमवाहसः ॥ १ ॥

७४१. पुरूतमं पुरूणामीशानं वार्याणाम् ।
इन्द्रं सोमे सचा सुते ॥ २ ॥

७४२. स घा नो योग आ भुवत् स राये स पुरन्ध्या ।
गमद् वाजेभिरा स नः ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—शुनःशेपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७४३. योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे ।
सखाय इन्द्रमूतये ॥ १ ॥

७४४. अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् ।
यं ते पूर्वं पिता हुवे ॥ २ ॥

७४५. आ घा गमद्यदि श्रवत्सहस्त्रिणीभिरूतिभिः ।
वाजेभिरुप नो हवम् ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—नारदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

७४६. इन्द्र सुतेषु सोमेषु क्रतुं पुनीष उक्थ्यम् ।
विदे वृधस्य दक्षस्य महाँ हि षः ॥ १ ॥

७४७. स प्रथमे व्योमनि देवानां सदने वृधः ।
सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित् ॥ २ ॥

७४८. तमु हुवे वाजसातय इन्द्रं भराय शुष्मिणम् ।
भवा नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

७४९. एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे ।
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥ १ ॥

७५०. स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत् स्वाहुतः ।
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देवं राधो जनानाम् ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

७५१. प्रत्यु अदर्श्यायत्यू३च्छन्ती दुहिता दिवः ।
अपो मही वृणुते चक्षुषा तमो ज्योतिष्कृणोति सूनरी ॥ १ ॥

७५२. उदुस्त्रियाः सृजते सूर्यः सचा उद्यन्नक्षत्रमर्चिवत् ।
तवेदुषो व्युषि सूर्यस्य च सं भक्तेन गमेमहि ॥ २ ॥

(१५)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

७५३. इमा उ वां दिविष्टय उस्रा हवन्ते अश्विना ।
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशं हि गच्छथः ॥ १ ॥

७५४. युवं चित्रं ददथुर्भोजनं नरा चोदेथां सूनृतावते ।
अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतं पिबतं सोम्यं मधु ॥ २ ॥

(१६)

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

७५५. अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः । पयः सहस्रसामृषिम् ॥ १ ॥
७५६. अयं सूर्यइवोपदृगयं सरांसि धावति । सप्त प्रवत आ दिवम् ॥ २ ॥
७५७. अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि । सोमो देवो न सूर्यः ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—१ शुनःशेपः; २-३ मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७५८. एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । हरिः पवित्रे अर्षति ॥ १ ॥
७५९. एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि । कविर्विप्रेण वावृधे ॥ २ ॥
७६०. दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यसे । क्रन्दं देवाँ अजीजनः ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—१, ३ असितः काश्यपो देवलो वा; २ अमहीयुराङ्गिरसः ॥
देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७६१. उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रवे । पवमान विदा रयिम् ॥ १ ॥
७६२. उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् । इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ २ ॥
७६३. उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँ इयक्षते ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—त्रित आप्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

७६४. प्र सोमासो विपश्चितोऽपो नयन्त ऊर्मयः । वनानि महिषाइव ॥ १ ॥
७६५. अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥ २ ॥
७६६. सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—भरद्वाजादयः सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः
(१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

७६७. प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥ १ ॥

७६८. आ हर्यतो अर्जुनो अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः ।
तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः ॥ २ ॥

(२१)

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७६९. प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनाम् ।
सुता विदथे अक्रमुः ॥ १ ॥

७७०. आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम् ।
अत्यो न गोभिरज्यते ॥ २ ॥

७७१. आदीं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—१-२ अग्निश्चाक्षुषः; ३ प्रजापतिर्वैश्वामित्रो वाच्यो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—१-२ उष्णिक्; ३ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१-२ ऋषभः; ३ गान्धारः ॥

७७२. अया पवस्व देवयू रेभन् पवित्रं पर्येषि विश्वतः ।
मधोर्धारा असृक्षत ॥ १ ॥

७७३. पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या ।
अभ्यर्ष स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥ २ ॥

७७४. प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः ।
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥ ३ ॥

इति द्वितीयोऽध्यायः, प्रथमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ तृतीयोऽध्यायः

द्वितीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७७५. पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः ।
अभि विश्वानि काव्या ॥ १ ॥

७७६. त्वं समुद्रिया अपोऽग्रियो वाच ईरयन् ।
पवस्व विश्वचर्षणे ॥ २ ॥

७७७. तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे ।
तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७७८. पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने ।
विश्वा अप द्विषो जहि ॥ १ ॥

७७९. यस्य ते सख्ये वयं सासह्याम पृतन्यतः ।
तवेन्दो द्युम्न उत्तमे ॥ २ ॥

७८०. या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे ।
रक्षा समस्य नो निदः ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७८१. वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः ।
वृषा धर्माणि दध्रिषे ॥ १ ॥

७८२. वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो वृषा वनं वृषा सुतः ।
स त्वं वृषन्वृषेदसि ॥ २ ॥

७८३. अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः ।
वि नो राये दुरो वृधि ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७८४. वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे। पवमान स्वर्दृशम् ॥ १ ॥

७८५. यदद्भिः परिषिच्यसे मर्मृज्यमान आयुभिः। द्रोणे सधस्थमश्नुषे ॥ २ ॥

७८६. आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध। इहो ष्विन्दवा गहि ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७८७. पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः। सखित्वमा वृणीमहे ॥ १ ॥

७८८. ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया। तेभिर्नः सोम मृडय ॥ २ ॥

७८९. स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम्। ईशानः सोम विश्वतः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७९०. अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥

७९१. अग्निमग्निं हवीमभिः सदा हवन्त विश्पतिम्। हव्यवाहं पुरुप्रियम् ॥ २ ॥

७९२. अग्ने देवाँ इहा वह जज्ञानो वृक्तबर्हिषे। असि होता न ईड्यः ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७९३. मित्रं वयं हवामहे वरुणं सोमपीतये। या जाता पूतदक्षसा ॥ १ ॥

७९४. ऋतेन यावृतावृधावृतस्य ज्योतिषस्पती। ता मित्रावरुणा हुवे ॥ २ ॥

७९५. वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः। करतां नः सुराधसः ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

७९६. इन्द्रमिद्गाथिनो बृहदिन्द्रमर्केभिरर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत ॥ १ ॥

७९७. इन्द्र इद्धर्योः सचा सम्मिश्ल आ वचोयुजा। इन्द्रो वज्री हिरण्ययः ॥ २ ॥

७९८. इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च। उग्र उग्राभिरूतिभिः ॥ ३ ॥

७९९. इन्द्रो दीर्घाय चक्षस आ सूर्यं रोहयद्दिवि। वि गोभिरद्रिमैरयत् ॥ ४ ॥

(९)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८००. इन्द्रे अग्ना नमो बृहत् सुवृक्तिमेरयामहे। धिया धेना अवस्यवः ॥ १ ॥

८०१. ता हि शश्वन्त ईडत इत्था विप्रास ऊतये। सबाधो वाजसातये ॥ २ ॥

८०२. ता वां गीर्भिर्विपन्युवः प्रयस्वन्तो हवामहे। मेधसाता सनिष्यवः ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

८०३. वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः। विश्वा दधान ओजसा ॥ १ ॥

८०४. तं त्वा धर्त्तारमोण्यो३ः पवमान स्वर्दृशम्। हिन्वे वाजेषु वाजिनम् ॥ २ ॥

८०५. अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया। युजं वाजेषु चोदय ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—उपमन्युर्वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

८०६. वृषा शोणो अभिकनिक्रदद् गा नदयन्नेषि पृथिवीमुत द्याम् ।
इन्द्रस्येव वग्नुरा शृण्व आजौ प्रचोदयन्नर्षसि वाचमेमाम् ॥ १ ॥

८०७. रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम् ।
पवमान सन्तनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः ॥ २ ॥

८०८. एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन् वधस्नुम् ।
परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥
स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

८०९. त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः ।
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः ॥ १ ॥

८१०. स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया मह स्तवानो अद्रिवः ।
गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

८११. अभि प्र वः सुराधसमिन्द्रमर्च यथा विदे ।
यो जरितृभ्यो मघवा पुरूवसुः सहस्रेणेव शिक्षति ॥ १ ॥

८१२. शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि दाशुषे ।
गिरेरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

८१३. त्वामिदा ह्यो नरोऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।
स इन्द्र स्तोमवाहस इह श्रुध्युप स्वसरमा गहि ॥ १ ॥

८१४. मत्स्वा सुशिप्रिन् हरिवस्तमीमहे त्वया भूषन्ति वेधसः ।
तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्य सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ॥ २ ॥

(१५)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८१५. यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा। देवावीरघशंसहा ॥ १ ॥

८१६. जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे। गोषातिरश्वसा असि ॥ २ ॥

८१७. सम्मिश्लो अरुषो भुवः सूपस्थाभिर्न धेनुभिः। सीदं च्छ्येनो न योनिमा ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—नहुषो मानवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८१८. अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ।
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥ १ ॥

८१९. समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः ।
सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः ॥ २ ॥

८२०. यं ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम् ।
यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहे ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—१-२ सिकतानिवावरी, ३ पृश्नयोऽजाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

८२१. वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नां प्रतरीतोषसां दिवः ।
प्राणा सिन्धूनां कलशाँ अचिक्रददिन्द्रस्य हार्द्यांविशन्मनीषिभिः ॥ १ ॥

८२२. मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशाँ असिष्यदत् ।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन् ॥ २ ॥

८२३. अयं पुनान उषसो अरोचयदयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत् ।
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८२४. एवा ह्यसि वीरयुरेवा शूर उत स्थिरः ।
एवा ते राध्यं मनः ॥ १ ॥

८२५. एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातृभिः ।
अधा चिदिन्द्र नः सचा ॥ २ ॥

८२६. मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयुर्भुवो वाजानां पते ।
मत्स्वा सुतस्य गोमतः ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८२७. इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः ।
रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् ॥ १ ॥

८२८. सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते ।
त्वामभि प्र णोनुमो जेतारमपराजितम् ॥ २ ॥

८२९. पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्यूतयः ।
यदा वाजस्य गोमत स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ॥ ३ ॥

इति तृतीयोऽध्यायः, द्वितीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ चतुर्थोऽध्यायः

द्वितीयप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८३०. एत असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः ।
विश्वान्यभि सौभगा ॥ १ ॥

८३१. विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः ।
त्मना कृण्वन्तो अर्वतः ॥ २ ॥

८३२. कृण्वन्तो वरिवो गवेऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
इडामस्मभ्यं संयतम् ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८३३. राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे ॥ १ ॥

८३४. आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर। सुष्वाणो देववीतये ॥ २ ॥

८३५. आ न इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम्। वहा भगत्तिमूतये ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—कविर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८३६. तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः। चारुं सुकृत्ययेमहे ॥ १ ॥

८३७. संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम्। शतं पुरो रुरुक्षणिम् ॥ २ ॥

८३८. अतस्त्वा रयिं रभ्ययद्राजानं सुक्रतो दिवः। सुपर्णो अव्यथी भरत् ॥ ३ ॥

८३९. अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे। अभिष्टिकृद्विचर्षणिः ॥ ४ ॥

८४०. विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणं रजस्तुरम्। गोपामृतस्य विर्भरत् ॥ ५ ॥

(४)

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८४१. इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः। इन्दो रुचाभि गा इहि ॥ १ ॥

८४२. पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः। हरे सृजान आशिरम् ॥ २ ॥

८४३. पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम्। द्युतानो वाजिभिर्हितः ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८४४. अग्निनाग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा। हव्यवाड् जुह्वास्यः ॥ १ ॥

८४५. यस्त्वामग्ने हविष्पतिर्दूतं देव सपर्यति। तस्य स्म प्राविता भव ॥ २ ॥

८४६. यो अग्निं देववीतये हविष्माँ आविवासति। तस्मै पावक मृडय ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८४७. मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्। धियं घृताचीं साधन्ता ॥ १ ॥

८४८. ऋतेन मित्रावरुणावृतावृधावृतस्पृशा। क्रतुं बृहन्तमाशाथे ॥ २ ॥

८४९. कवी नो मित्रावरुणा तुविजाता उरुक्षया। दक्षं दधाते अपसम् ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—मरुत इन्द्रश्च ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८५०. इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अबिभ्युषा। मन्दू समानवर्चसा ॥ १ ॥

८५१. आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे। दधाना नाम यज्ञियम् ॥ २ ॥

८५२. वीडु चिदारुजत्नुभिर्गुहा चिदिन्द्र वह्निभिः। अविन्द उस्त्रिया अनु ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८५३. ता हुवे ययोरिदं पप्ने विश्वं पुरा कृतम्। इन्द्राग्नी न मर्धतः ॥ १ ॥

८५४. उग्रा विघनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे। ता नो मृडात ईदृशे ॥ २ ॥

८५५. हथो वृत्राण्यार्या हथो दासानि सत्पती। हथो विश्वा अप द्विषः ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती); ३ द्विपदाविराट् ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २-३ पञ्चमः ॥

८५६. अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।
समुद्रस्याधि विष्टपे मनीषिणो मत्सरासो मदच्युतः ॥ १ ॥

८५७. तरत्समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत्।
अर्षा मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत्॥ २॥
८५८. नृभिर्येमाणो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्र्यः॥ ३॥

(१०)

ऋषिः—पराशरः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

८५९. तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम्।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः॥ १॥
८६०. सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः।
सोमः सुत ऋच्यते पूयमानः सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते॥ २॥
८६१. एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति।
इन्द्रमा विश बृहता मदेन वर्धया वाचं जनया पुरन्धिम्॥ ३॥

(११)

ऋषिः—पुरुहन्मा॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः॥

८६२. यद् द्याव इन्द्र ते शतंशतं भूमीरुत स्युः।
न त्वा वज्रिन्त्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी॥ १॥
८६३. आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा।
अस्माँ अव मघवन् गोमति व्रजे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः॥ २॥

(१२)

ऋषिः—मेध्यातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

८६४. वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः।
पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते॥ १॥
८६५. स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः।
कदा सुतं तृषाण ओक आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः॥ २॥
८६६. कण्वेभिर्धृष्णवा धृषद्वाजं दर्षि सहस्रिणम्।
पिशङ्गरूपं मघवन्विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे॥ ३॥

(१३)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

८६७. तरणिरित्सिषासति वाजं पुरन्ध्या युजा ।
आ व इन्द्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्रुवम् ॥ १ ॥

८६८. न दुष्टुतिर्द्रविणोदेषु शस्यते न स्रेधन्तं रयिर्नशत् ।
सुशक्तिरिन् मघवन् तुभ्यं मावते देष्णं यत्पार्ये दिवि ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८६९. तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः । हरिरेति कनिक्रदत् ॥ १ ॥

८७०. अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः । मर्जयन्तीर्दिवः शिशुम् ॥ २ ॥

८७१. रायः समुद्रांश्चतुरोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणः ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—ययातिर्नाहुषः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८७२. सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
पवित्रवन्तो अक्षरं देवान् गच्छन्तु वो मदाः ॥ १ ॥

८७३. इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् ।
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसः ॥ २ ॥

८७४. सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः ।
सोमस्पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—पवित्रः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

८७५. पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तः सं तदाशत ॥ १ ॥

८७६. तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदेऽर्चन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन् ।
अवन्त्यस्य पवितारमाशवो दिवः पृष्ठमधि रोहन्ति तेजसा ॥ २ ॥

८७७. अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा मिमेति भुवनेषु वाजयुः ।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

८७८. प्र मंहिष्ठाय गायत ऋताव्ने बृहते शुक्रशोचिषे ।
उपस्तुतासो अग्नये ॥ १ ॥

८७९. आ वंसते मघवा वीरवद्यशः समिद्धो द्युम्न्याहुतः ।
कुविन्नो अस्य सुमतिर्भवीयस्यच्छा वाजेभिरागमत् ॥ २ ॥

(१८)

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

८८०. तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पृक्षु सासहिम् ।
उ लोककृत्नुमद्रिवो हरिश्रियम् ॥ १ ॥

८८१. येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ ।
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ॥ २ ॥

८८२. तदद्या चित्त उक्थिनोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ।
वृषपत्नीरपो जया दिवेदिवे ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—तिरश्चीः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

८८३. श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।
सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ॥ १ ॥

८८४. यस्त इन्द्र नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत् ।
चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम् ॥ २ ॥

८८५. तमु ष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थ्यानि वावृधुः ।
पुरूण्यस्य पौंस्या सिषासन्तो वनामहे ॥ ३ ॥

इति चतुर्थोऽध्यायः, द्वितीयप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ पञ्चमोऽध्यायः

तृतीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—अकृष्टीं माषाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

८८६. प्र त आश्विनीः पवमान धेनवो दिव्या असृग्रन् पयसा धरीमणि ।
प्रान्तरिक्षात् स्थाविरीस्ते असृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः ॥ १ ॥

८८७. उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः ।
यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योनौ कलशेषु सीदति ॥ २ ॥

८८८. विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोष्टे सतः परि यन्ति केतवः ।
व्यानशी पवसे सोम धर्मणा पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८८९. पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम्। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥ १ ॥
८९०. पवमान रसस्तव मदो राजन्नदुच्छुनः। वि वारमव्यमर्षति ॥ २ ॥
८९१. पवमानस्य ते रसो दक्षो वि राजति द्युमान्। ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—मेध्यातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८९२. प्र यद्गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः ।
घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥ १ ॥

८९३. सुवितस्य वनामहेऽति सेतुं दुराय्यम् ।
साह्याम दस्युमव्रतम् ॥ २ ॥

८९४. शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः ।
चरन्ति विद्युतो दिवि ॥ ३ ॥

८९५. आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत् ।
अश्ववत् सोम वीरवत् ॥ ४ ॥

८९६. पवस्व विश्वचर्षण आ मही रोदसी पृण ।
उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥५॥

८९७. परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः ।
सरा रसेव विष्टपम् ॥६॥

(४)

ऋषिः—बृहन्मतिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

८९८. आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना ।
यत्रा देवा इति ब्रुवन् ॥१॥

८९९. परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः ।
वृष्टिं दिवः परि स्रव ॥२॥

९००. अयं स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ ।
सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत् ॥३॥

९०१. सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा ।
विचक्षाणो विरोचयन् ॥४॥

९०२. आविवासन् परावतो अथो अर्वावतः सुतः ।
इन्द्राय सिच्यते मधु ॥५॥

९०३. समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥६॥

(५)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९०४. हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम् ।
महामिन्दुं महीयुवः ॥१॥

९०५. पवमान रुचारुचा देव देवेभ्यः सुतः ।
विश्वा वसून्या विश ॥२॥

९०६. आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः ।
इषे पवस्व संयतम् ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

९०७. जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे ।
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्वि भाति भरतेभ्यः शुचिः ॥ १ ॥

९०८. त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वनेवने ।
स जायसे मथ्यमानः सहो महत्त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः ॥ २ ॥

९०९. यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समिन्धते ।
इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन् नि होता यजथाय सुक्रतुः ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९१०. अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऋतावृधा । ममेदिह श्रुतं हवम् ॥ १ ॥

९११. राजानावनभिद्रुहा ध्रुवे सदस्युत्तमे । सहस्रस्थूण आशाते ॥ २ ॥

९१२. ता सम्राजा घृतासुती आदित्या दानुनस्पती । सचेते अनवह्वरम् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९१३. इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः । जघान नवतीर्नव ॥ १ ॥

९१४. इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम् । तद्विदच्छर्यणावति ॥ २ ॥

९१५. अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् । इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९१६. इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः । अभ्राद् वृष्टिरिवाजनि ॥ १ ॥

९१७. शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः । ईशाना पिप्यतं धियः ॥ २ ॥

९१८. मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिशस्तये । मा नो रीरधतं निदे ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—दृढच्युत आगस्त्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

९१९. पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे । मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥ १ ॥

९२०. सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः । पवमानो अदाभ्यः ॥ २ ॥

९२१. पवमान धिया हितो३ऽभि योनिं कनिक्रदत् । धर्मणा वायुमारुहः ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

९२२. तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे ।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीँरति ताँ इहि ॥ १ ॥

९२३. तवाहं नक्तमुत सोम ते दिवा दुहानो बभ्र ऊधनि ।
घृणा तपन्तमति सूर्यं परः शकुनाइव पप्तिम ॥ २ ॥

(१२)

ऋषिः—बृहन्मतिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

९२४. पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः ।
शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥ १ ॥

९२५. आ योनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रो वृषा सुतम् ।
ध्रुवे सदसि सीदतु ॥ २ ॥

९२६. नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः ।
आ पवस्व सहस्त्रिणम् ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—विराडनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

९२७. पिबा सोममिन्द्र मन्दतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः ।
सोतुर्बाहुभ्यां सुयतो नार्वा ॥ १ ॥

९२८. यस्ते मदो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्व हंसि ।
स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु ॥ २ ॥

९२९. बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् ।
इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—रेभः काश्यपः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ अतिजगती; २-३ उपरिष्टाद् बृहती ॥ स्वरः—निषादः ॥

९३०. विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरः सजूस्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।
क्रत्वे वरे स्थेमन्यामुरीमुतोग्रमोजिष्ठं तरसं तरस्विनम् ॥ १ ॥

९३१. नेमिं नमन्ति चक्षसा मेषं विप्रा अभिस्वरे ।
सुदीतयो वो अद्रुहोऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्वभिः ॥ २ ॥

९३२. समु रेभासो अस्वरन्निन्द्रं सोमस्य पीतये ।
स्वःपतिर्यदी वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—पुरुहन्मा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

९३३. यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरध्रिगुः ।
विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठं यो वृत्रहा गृणे ॥ १ ॥

९३४. इन्द्रं तं शुम्भ पुरुहन्मन्नवसे यस्य द्विता विधर्त्तरि ।
हस्तेन वज्रः प्रति धायि दर्शतो महान्देवो न सूर्यः ॥ २ ॥

(१६)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९३५. परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः । स्वानैर्याति कविक्रतुः ॥ १ ॥

९३६. स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत् । महान्मही ऋतावृधा ॥ २ ॥

९३७. प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहः । वीत्यर्ष पनिष्टये ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—१ शक्तिः; २ उरुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः
(१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः;
२ पञ्चमः ॥

९३८. त्वं ह्या३ङ्ग दैव्य पवमान जनिमानि द्युमत्तमः। अमृतत्वाय घोषयन्॥ १ ॥

९३९. येना नवग्वा दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास आपिरे ।
देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन श्रवांस्याशत ॥ २ ॥

(१८)

ऋषिः—अग्निश्चाक्षुषः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥
स्वरः—ऋषभः ॥

९४०. सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति ।
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥ १ ॥

९४१. धीभिर्मृजन्ति वाजिनं वने क्रीडन्तमत्यविम् ।
अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ॥ २ ॥

९४२. असर्जि कलशाँ अभि मीढ्वान्त्सप्तिर्न वाजयुः ।
पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

९४३. सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः॥ १ ॥

९४४. ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम्।
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्॥ २ ॥

९४५. प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुर्गिर स्तोमान् पवमानो मनीषाः।
अन्तः पश्यन् वृजनेमावराण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन्॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—प्रयोगो भार्गव अग्निर्वा पावको बार्हस्पत्यः; गृहपतियविष्ठौ सहसः सुतौ तयोर्वान्यतरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९४६. अग्निं वो वृधन्तमध्वराणां पुरूतमम्। अच्छा नप्त्रे सहस्वते ॥ १ ॥

९४७. अयं यथा न आभुवत् त्वष्टा रूपेव तक्ष्या। अस्य क्रत्वा यशस्वतः ॥ २ ॥

९४८. अयं विश्वा अभि श्रियोऽग्निर्देवेषु पत्यते। आ वाजैरुप नो गमत् ॥ ३ ॥

(२१)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

९४९. इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् ।
शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सादने ॥ १ ॥

९५०. न किष्ट्वद्रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे ।
न किष्ट्वानु मज्मना न किः स्वश्व आनशे ॥ २ ॥

९५१. इन्द्राय नूनमर्चतोक्थानि च ब्रवीतन ।
सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—भृगुः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

९५२. इन्द्र जुषस्व प्र वहा याहि शूर हरिह ।
पिबा सुतस्य मतिर्न मधोश्चकानश्चारुर्मदाय ॥ १ ॥

९५३. इन्द्र जठरं नव्यं न पृणस्व मधोर्दिवो न ।
अस्य सुतस्य स्वा३र्नोप त्वा मदाः सुवाचो अस्थुः ॥ २ ॥

९५४. इन्द्रस्तुराषाण्मित्रो न जघान वृत्रं यतिर्न ।
बिभेद वलं भृगुर्न ससाहे शत्रून् मदे सोमस्य ॥ ३ ॥

इति पञ्चमोऽध्यायः, तृतीयप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः

तृतीयप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—अकृष्टा माषाः, सिकतानिवावरी, पृश्नयोऽजाश्च ऋषिगणाः ॥

देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

९५५. गोवित्पवस्व वसुविद्धिरण्यविद्रेतोधा इन्दो भुवनेष्वर्पितः ।
त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित्तं त्वा नर उप गिरेम आसते ॥ १ ॥

९५६. त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता वि धावसि ।
स नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद्वयं स्याम भुवनेषु जीवसे ॥ २ ॥

९५७. ईशान इमा भुवनानि ईयसे युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः ।
तास्ते क्षरन्तु मधुमद् घृतं पयस्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९५८. पवमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा असृक्षत। सूर्यस्येव न रश्मयः ॥ १ ॥

९५९. केतुं कृण्वन्दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि। समुद्रः सोम पिन्वसे ॥ २ ॥

९६०. जज्ञानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि। क्रन्दन् देवो न सूर्यः ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥

छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९६१. प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः। श्रीणाना अप्सु वृञ्जते ॥ १ ॥

९६२. अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः। पुनाना इन्द्रमाशत ॥ २ ॥

९६३. प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय मादनः। नृभिर्यतो वि नीयते ॥ ३ ॥

९६४. इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिदीयसे। अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥ ४ ॥

९६५. त्वं सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीधृतिः। सस्निर्यो अनुमाद्यः ॥ ५ ॥

९६६. पवस्व वृत्रहन्तम उक्थेभिरनुमाद्यः। शुचिः पावको अद्भुतः ॥ ६ ॥

९६७. शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतः स मधुमान्। देवावीरघशंसहा ॥ ७ ॥

(४)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥

छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९६८. प्र कविर्देववीतयेऽव्या वारेभिरव्यत। साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः ॥१॥

९६९. स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति। पवमानः सहस्त्रिणम् ॥२॥

९७०. परि विश्वानि चेतसा मृज्यसे पवसे मती। स नः सोम श्रवो विदः ॥३॥

९७१. अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिम्। इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥४॥

९७२. त्वं राजेव सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिथ। पुनानो वह्ने अद्भुत ॥५॥

९७३. स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः। सोमश्चमूषु सीदति ॥६॥

९७४. क्रीडुर्मखो न मंहयुः पवित्रं सोम गच्छसि। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥७॥

(५)

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥

स्वरः—षड्जः ॥

९७५. यवंयवं नो अन्धसा पुष्टंपुष्टं परि स्त्रव। विश्वा च सोम सौभगा ॥१॥

९७६. इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः। नि बर्हिषि प्रिये सदः ॥२॥

९७७. उत नो गोविदश्ववित् पवस्व सोमान्धसा। मक्षूतमेभिरहभिः ॥३॥

९७८. यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य। स पवस्व सहस्त्रजित् ॥४॥

(६)

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९७९. यास्ते धारा मधुश्चुतोऽसृग्रमिन्द ऊतये। ताभिः पवित्रमासदः ॥१॥

९८०. सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो वाराण्यव्यया। सीदन्नृतस्य योनिमा ॥२॥

९८१. त्वं सोम परि स्त्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः। वरिवोविद् घृतं पयः ॥३॥

(७)

ऋषिः—अरुणो वैतहव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

९८२. तव श्रियो वर्ष्यस्येव विद्युतोऽग्नेश्चिकित्र उषसामिवेतयः ।
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च परि स्वयं चिनुषे अन्नमासनि ॥१॥

९८३. वातोपजूत इषितो वशाँ अनु तृषु यदन्ना वेविषद्वितिष्ठसे ।
आ ते यतन्ते रथ्यो३ यथा पृथक् शर्धांस्यग्ने अजरस्य धक्षतः ॥ २ ॥

९८४. मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनमग्निं होतारं परिभूतरं मतिम् ।
त्वामर्भस्य हविषः समानमित् त्वां महो वृणते नान्यं त्वत् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—उरुचक्रिरात्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९८५. पुरूरुणा चिद्ध्यस्त्यवो नूनं वां वरुण । मित्र वंसि वां सुमतिम् ॥ १ ॥

९८६. ता वां सम्यगद्रुह्वाणेषमश्याम धाम च । वयं वां मित्रा स्याम ॥ २ ॥

९८७. पातं नो मित्रा पायुभिरुत त्रायेथां सुत्रात्रा । साह्याम दस्यून् तनूभिः ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—कुरुसुतिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९८८. उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वा शिप्रे अवेपयः । सोममिन्द्र चमूसुतम् ॥ १ ॥

९८९. अनु त्वा रोदसी उभे स्पर्धमानमददेताम् । इन्द्र यद्दस्युहाभवः ॥ २ ॥

९९०. वाचमष्टापदीमहं नवस्रक्तिमृतावृधम् । इन्द्रात् परि तन्वं ममे ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

९९१. इन्द्राग्नी युवामिमे३ऽभि स्तोमा अनूषत । पिबतं शम्भुवा सुतम् ॥ १ ॥

९९२. या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा । इन्द्राग्नी ताभिरा गतम् ॥ २ ॥

९९३. ताभिरा गच्छतं नरोपेदं सवनं सुतम् । इन्द्राग्नी सोमपीतये ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

९९४. अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत् । सीदन्योनौ वनेष्वा ॥ १ ॥

९९५. अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमा अर्षन्तु विष्णवे ॥ २ ॥

९९६. इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणम् ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—सप्तर्षयः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

९९७. सोम उ ष्वाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम् ।
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥ १ ॥

९९८. अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।
समुद्रं न संवरणान्यग्मन् मन्दी मदाय तोशते ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

९९९. यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु। तन्नः पुनान आ भर ॥ १ ॥

१०००. वृषा पुनान आयूंषि स्तनयन्नधि बर्हिषि। हरिः सन्योनिमासदः ॥ २ ॥

१००१. युवं हि स्थः स्वःपती इन्द्रश्च सोम गोपती। ईशाना पिप्यतं धियः ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

१००२. इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।
तमिन्महत्स्वाजिषूतिमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् ॥ १ ॥

१००३. असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि परादादिः ।
असि दभ्रस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु ॥ २ ॥

१००४. यदुदीरत आजयो धृष्णवे धीयते धनम् ।
युङ्क्ष्वा मदच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधोऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—पङ्क्तिः॥ स्वरः—पञ्चमः॥

१००५. स्वादोरित्था विषूवतो मधोः पिबन्ति गौर्यः ।
या इन्द्रेण सयावरीर्वृष्णा मदन्ति शोभथा वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ १ ॥

१००६. ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ २ ॥

१ २ ३ १२ ३ १२ ३२ ३ १ २
१००७. ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।
३ १ २ ३१ २ ३१ २ ३ २ ३१२ ३ १ २
व्रतान्यस्य सश्चिरे पुरूणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम् ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

१ २ ३ १ २र ३ १ ३र ३ २
१००८. असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।
३ २उ ३ १ २
श्येनो न योनिमासदत् ॥ १ ॥
३ १ ३र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
१००९. शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धौतं नृभिः सुतम् ।
१ २ ३ २ ३ १ २
स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥ २ ॥
२ ३ २ ३ १ २र३ १ २ ३ १ २
१०१०. आदीमश्वं न हेतारमशूशुभन्नमृताय ।
२ ३ १ २ ३ १ २
मधो रसं सधमादे ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—१ ऊर्ध्वसद्मा, २ कृतयशाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥
स्वरः—१ ऋषभः, २ पञ्चमः ॥

३ २ ३ ३ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
१०११. अभि द्युम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुम् ।
१ २र ३ १ २
वि कोशं मध्यमं युव ॥ १ ॥
१ २ ३क २र ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
१०१२. आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर्न विश्पतिः ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपो जिन्वन् गविष्टये धियः ॥ २ ॥

(१८)

ऋषिः—त्रितः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥
स्वरः—ऋषभः ॥

३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
१०१३. प्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥ १ ॥
१ २ ३ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २र ३ २
१०१४. उप त्रितस्य पाष्यो३रभक्त यद् गुहा पदम् ।
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम् ॥ २ ॥

१०१५. त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वैरयद्रयिम् ।
मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—रेभसूनू काश्यपौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

१०१६. पवस्व वाजसातये पवित्रे धारया सुतः ।
इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तरः ॥ १ ॥

१०१७. त्वां रिहन्ति धीतयो हरिं पवित्रे अद्रुहः ।
वत्सं जातं न मातरः पवमान विधर्मणि ॥ २ ॥

१०१८. त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे ।
प्रति द्रापिममुञ्चथाः पवमान महित्वना ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—मन्युर्वासिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥
स्वरः—धैवतः ॥

१०१९. इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय ।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातिं वरिवस्कृण्वन् वृजनस्य राजा ॥ १ ॥

१०२०. अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोम पवते अद्रिदुग्धः ।
इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ॥ २ ॥

१०२१. अभि व्रतानि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन् ।
इन्दुर्धर्माण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये ॥ ३ ॥

(२१)

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥
स्वरः—पञ्चमः ॥

१०२२. आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।
यद्ध स्या ते पनीयसी समिद्दीदयति द्यवीषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥

१०२३. आ ते अग्न ऋचा हविः शुक्रस्य ज्योतिषस्पते ।
सुश्चन्द्र दस्म विश्पते हव्यवाट् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ २ ॥

१०२४. ओभे सुश्चन्द्र विश्पते दर्वी श्रीणीष आसनि ।
उतो न उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०२५. इन्द्राय साम गायत विप्राय बृहते बृहत् ।
ब्रह्मकृते विपश्चिते पनस्यवे ॥ १ ॥

१०२६. त्वमिन्द्राभिभूरसि त्वं सूर्यमरोचयः ।
विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि ॥ २ ॥

१०२७. विभ्राजं ज्योतिषा स्वा३रगच्छो रोचनं दिवः ।
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ॥ ३ ॥

(२३)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥
स्वरः—गान्धारः ॥

१०२८. असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि ।
आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रश्मिभिः ॥ १ ॥

१०२९. आ तिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी ।
अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना ॥ २ ॥

१०३०. इन्द्रमिद्धरी वहतोऽप्रतिधृष्टशवसम् ।
ऋषीणां सुष्टुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम् ॥ ३ ॥

इति षष्ठोऽध्यायः, तृतीयप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ सप्तमोऽध्यायः

चतुर्थप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—अकृष्टा माषाः, सिकतानिवावरी, पृश्नयोऽजाश्च ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

१०३१. ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः।
दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः ॥ १ ॥

१०३२. अभिक्रन्दन् कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः।
हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा ॥ २ ॥

१०३३. अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्षस्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छसि।
अग्रे वाजस्य भजसे महद् धनं स्वायुधः सोतृभिः सोम सूयसे ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०३४. असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया।
शुक्रासो वीरयाशवः ॥ १ ॥

१०३५. शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः।
पवन्ते वारे अव्यये ॥ २ ॥

१०३६. ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा।
पवन्तामान्तरिक्ष्या ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०३७. पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या।
इन्द्रमिन्दो वृषा विश ॥ १ ॥

१०३८. आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः।
आ योनिं धर्णसिः सदः ॥ २ ॥

१०३९. अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः ।
अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥३॥

१०४०. महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः ।
यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥४॥

१०४१. समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः ।
सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥५॥

१०४२. अचिक्रदद् वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः ।
सं सूर्येण दिद्युते ॥६॥

१०४३. गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।
याभिर्मदाय शुम्भसे ॥७॥

१०४४. तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे ।
तव प्रशस्तये महे ॥८॥

१०४५. गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत ।
आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः ॥९॥

१०४६. अस्मभ्यमिन्दविन्द्रियं मधोः पवस्व धारया ।
पर्जन्यो वृष्टिमाँइव ॥१०॥

(४)

ऋषिः—हिरण्यस्तूपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०४७. सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥१॥

१०४८. सना ज्योतिः सना स्वा३र्विश्वा च सोम सौभगा ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥२॥

१०४९. सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥३॥

१०५०. पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥४॥

१०५१. त्वं सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥५॥

१०५२. तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक् पश्येम सूर्यम् ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥६॥

१०५३. अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम् ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥७॥

१०५४. अभ्या३र्षानपच्युतो वाजिन्त्समत्सु सासहिः ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥८॥

१०५५. त्वां यज्ञैरवीवृधन् पवमान विधर्मणि ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥९॥

१०५६. रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥१०॥

(५)

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०५७. तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः । तरत्स मन्दी धावति ॥१॥

१०५८. उस्रा वेद वसूनां मर्त्तस्य देव्यवसः । तरत्स मन्दी धावति ॥२॥

१०५९. ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे । तरत्स मन्दी धावति ॥३॥

१०६०. आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे । तरत्स मन्दी धावति ॥४॥

(६)

ऋषिः—जमदग्निः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०६१. एते सोमा असृक्षत गृणानाः शवसे महे । मदिन्तमस्य धारया ॥१॥

१०६२. अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि । सनद्वाजः परि स्रव ॥२॥

१०६३. उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः। गृणानो जमदग्निना ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥
स्वरः—निषादः ॥

१०६४. इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसद्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ १ ॥

१०६५. भरामेध्मं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् ।
जीवातवे प्रतरां साधया धियोऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ २ ॥

१०६६. शकेम त्वा समिधं साधया धियस्त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।
त्वमादित्याँ आ वह तान् ह्यू३श्मस्यग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आदित्यः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

१०६७. प्रति वां सूर उदिते मित्रं गृणीषे वरुणम्। अर्यमणं रिशादसम् ॥ १ ॥

१०६८. राया हिरण्यया मतिरियमवृकाय शवसे। इयं विप्रा मेधसातये ॥ २ ॥

१०६९. ते स्याम देव वरुण ते मित्र सूरिभिः सह। इषं स्वश्च धीमहि ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—त्रिशोकः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

१०७०. भिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः ।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥ १ ॥

१०७१. यस्य ते विश्वमानुषग्भूरेर्दत्तस्य वेदति ।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥ २ ॥

१०७२. यद्वीडाविन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शाने पराभृतम् ।
वसु स्पार्हं तदा भर ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—श्यावाश्वः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०७३. यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु ।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ १ ॥

१०७४. तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता ।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ २ ॥

१०७५. इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः ।
इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—कश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०७६. इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः ।
अर्कस्य योनिमासदम् ॥ १ ॥

१०७७. तं त्वा विप्रा वचोविदः परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् ।
सं त्वा मृजन्त्यायवः ॥ २ ॥

१०७८. रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्तु वरुणः कवे ।
पवमानस्य मरुतः ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

१०७९. मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥ १ ॥

१०८०. पुनानो वारे पवमानो अव्यये वृषो अचिक्रदद्वने ।
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०८१. एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् । समादित्येभिरख्यत ॥ १ ॥

१०८२. समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ। सं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥ २ ॥
१०८३. स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान्। चारुर्मित्रे वरुणे च ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

१०८४. रेवतीर्नः सधमाद इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः ।
क्षुमन्तो याभिर्मदेम ॥ १ ॥
१०८५. आ घ त्वावान् त्मना युक्त स्तोतृभ्यो धृष्णवीयानः ।
ऋणोरक्षं न चक्र्योः ॥ २ ॥
१०८६. आ यद् दुवः शतक्रतवा कामं जरितॄणाम् ।
ऋणोरक्षं न शचीभिः ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०८७. सुरूपकृत्नुमूतये सुदुघामिव गोदुहे ।
जुहूमसि द्यविद्यवि ॥ १ ॥
१०८८. उप नः सवना गहि सोमस्य सोमपाः पिब ।
गोदा इद्रेवतो मदः ॥ २ ॥
१०८९. अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् ।
मा नो अति ख्य आ गहि ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—१-३ मान्धाता यौवनाश्वः, २ उत्तरार्धस्य गोधाः ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—महापङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१०९०. उभे यदिन्द्र रोदसी आपप्राथोषाइव ।
महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनाम् ।
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ १ ॥

१०९१. दीर्घं ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मन्तुमः ।
पूर्वेण मघवन् पदा वयामजो यथा यमः ।
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ २ ॥

१०९२. अव स्म दुर्हृणायतो मर्त्तस्य तनुहि स्थिरम् ।
अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्माँ अभिदासति ।
देवी जनित्र्यजीजनद्भद्रा जनित्र्यजीजनत् ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१०९३. परि स्वानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षरत् ।
मदेषु सर्वधा असि ॥ १ ॥

१०९४. त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु प्र जातमन्धसः ।
मदेषु सर्वधा असि ॥ २ ॥

१०९५. त्वे विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत ।
मदेषु सर्वधा असि ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—१ ऋणञ्चयः, २ शक्तिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१ यवमध्या गायत्री,
२ सतोबृहतीः ॥ स्वरः—१ षड्जः, २ पञ्चमः ॥

१०९६. स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम् ।
सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥ १ ॥

१०९७. यस्य त इन्द्रः पिबाद्यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः ।
आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रमवसे महे ॥ २ ॥

(१९)

ऋषिः—पर्वतनारदौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१०९८. तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत ।
शिशुं न हव्यैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥ १ ॥

१०९९. सं वत्सइव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते ।
देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः ॥ २ ॥

११००. अयं दक्षाय साधनोऽयं शर्धाय वीतये ।
अयं देवेभ्यो मधुमत्तरः सुतः ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—मनुः सांवरणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

११०१. सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
मित्राः स्वाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥ १ ॥

११०२. ते पूतासो विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।
सूरासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते ॥ २ ॥

११०३. सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधि त्वचि ।
इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन् वसुविदः ॥ ३ ॥

(२१)

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

११०४. अया पवा पवस्वैना वसूनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व ।
ब्रध्नश्चिद्यस्य वातो न जूतिं पुरुमेधाश्चित्तकवे नरं धात् ॥ १ ॥

११०५. उत न एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे ।
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद्रणाय ॥ २ ॥

११०६. महीमे अस्य वृष नाम शूषे मांश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे ।
अस्वापयन् निगुतः स्नेहयच्चापामित्राँ अपाचितो अचेतः ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च गौपायना लौपायना वा ॥
देवता—अग्निः ॥ छन्दः—द्विपदा विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

११०७. अग्ने त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भुवो वरूथ्यः ॥ १ ॥

११०८. वसुरग्निर्वसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमो रयिं दाः ॥ २ ॥

११०९. तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ॥ ३ ॥

(२३)

ऋषिः—भुवन आप्त्यः साधनो वा भौवनः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥

छन्दः—द्विपदा त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१११०. इमा नु कं भुवना सीषधेमेन्द्रश्च विश्वे च देवाः ॥ १ ॥

११११. यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्रः सह सीषधातु ॥ २ ॥

१११२. आदित्यैरिन्द्रः सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा करत् ॥ ३ ॥

(२४)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदा विराट् ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१११३. प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय विप्राय गाथं गायत यं जुजोषते ॥ १ ॥

१११४. अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः ॥ २ ॥

१११५. उप प्रक्षे मधुमति क्षियन्तः पुष्येम रयिं धीमहे त इन्द्र ॥ ३ ॥

इति सप्तमोऽध्यायः, चतुर्थप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथाष्टमोऽध्यायः

चतुर्थप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—१-३ वृषगणो वसिष्ठः; ४-१२ असितः काश्यपो देवलो वा ॥

देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—१-३ त्रिष्टुप्; ४-१२ गायत्री ॥

स्वरः—१-३ धैवतः; ४-१२ षड्जः ॥

११११६. प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥ १ ॥

१११७. प्र हंसासस्तृपला वग्नुमच्छामादस्तं वृषगणा अयासुः ।
अङ्गोषिणं पवमानं सखायो दुर्मर्षं वाणं प्र वदन्ति साकम् ॥ २ ॥

१११८. स योजत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीडन्तं मिमते न गावः ।
परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः ॥ ३ ॥

१११९. प्र स्वानासो रथाइवार्वन्तो न श्रवस्यवः । सोमासो राये अक्रमुः ॥ ४ ॥

११२०. हिन्वानासो रथाइव दधन्विरे गभस्त्योः । भरासः कारिणामिव ॥ ५ ॥

११२१. राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते ।
यज्ञो न सप्त धातृभिः ॥ ६ ॥

११२२. परि स्वानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा । मधो अर्षन्ति धारया ॥ ७ ॥

११२३. आपानासो विवस्वतो जिन्वन्त उषसो भगम् ।
सूरा अण्वं वि तन्वते ॥ ८ ॥

११२४. अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः । वृष्णो हरस आयवः ॥ ९ ॥

११२५. समीचीनास आशत होतारः सप्तजानयः । पदमेकस्य पिप्रतः ॥ १० ॥

११२६. नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुषा सूर्यं दृशे । कवेरपत्यमा दुहे ॥ ११ ॥

११२७. अभि प्रियं दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम् । सूरः पश्यति चक्षसा ॥ १२ ॥

(२)

ऋषिः—१-९ असितः काश्यपो देवलो वा; १०-१२ भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११२८. असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः । विदाना अस्य योजना ॥ १ ॥

११२९. प्र धारा मधो अग्रियो महीरपो वि गाहते । हविर्हविःषु वन्द्यः ॥ २ ॥

११३०. प्र युजा वाचो अग्रियो वृषो अचिक्रदद्वने । सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥ ३ ॥

११३१. परि यत्काव्या कविर्नृम्णा पुनानो अर्षति । स्वर्वाजी सिषासति ॥ ४ ॥

११३२. पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति । यदीमृण्वन्ति वेधसः ॥ ५ ॥

११३३. अव्या वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति । रेभो वनुष्यते मती ॥ ६ ॥

११३४. स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति । रणा यो अस्य धर्मणा ॥ ७ ॥

११३५. आ मित्रे वरुणे भगे मधोः पवन्त ऊर्मयः ।
विदाना अस्य शक्मभिः ॥ ८ ॥

११३६. अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये ।
श्रवो वसूनि सञ्जितम् ॥ ९ ॥

११३७. आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे । पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥ १० ॥

११३८. आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम् । पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥ ११ ॥

११३९. आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा । पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥ १२ ॥

(३)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—वैश्वानरः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

११४०. मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् ।
कविं सम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥ १ ॥

११४१. त्वां विश्वे अमृत जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते ।
तव क्रतुभिरमृतत्वमायन् वैश्वानर यत्पित्रोरदीदेः ॥ २ ॥

११४२. नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त ।
वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—यजत आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११४३. प्र वो मित्राय गायत वरुणाय विपा गिरा। महिक्षत्रावृतं बृहत् ॥ १ ॥

११४४. सम्राजा या घृतयोनी मित्रश्चोभा वरुणश्च। देवा देवेषु प्रशस्ता ॥ २ ॥

११४५. ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य। महि वां क्षत्रं देवेषु ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११४६. इन्द्रा याहि चित्रभानो सुता इमे त्वायवः। अण्वीभिस्तना पूतासः ॥ १ ॥

११४७. इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः ॥ २ ॥

११४८. इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः। सुते दधिष्व नश्चनः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—भारद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११४९. तमीडिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् ।
कृष्णा कृणोति जिह्वया ॥ १ ॥

११५०. य इद्ध आविवासति सुम्नमिन्द्रस्य मर्त्यः ।
द्युम्नाय सुतरा अपः ॥ २ ॥

११५१. ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः ।
एन्द्रमग्निं च वोढवे ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—सिकतानिवावरी ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

११५२. प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति सङ्गिरम्।
मर्यइव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयामना पथा ॥ १ ॥

११५३. प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवरणेष्वक्रमुः ।
हरिं क्रीडन्तमभ्यनूषत स्तुभोऽभि धेनवः पयसेदशिश्रयुः ॥ २ ॥

११५४. आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिषमिन्दो पवस्व पवमान ऊर्मिणा।
या नो दोहते त्रिरहन्नसश्चुषी क्षुमद्वाजवन्मधुमत्सुवीर्यम् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—पुरुहन्मा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

११५५. न किष्टं कर्मणा नशद्यश्चकार सदावृधम् ।
इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वसमधृष्टं धृष्णुमोजसा ॥ १ ॥

११५६. अषाढमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन्महीरुरुज्रयः ।
सं धेनवो जायमाने अनोनवुर्द्यावः क्षामीरनोनवुः ॥ २ ॥

(९)

ऋषिः—पर्वतनारदौ शिखण्डिन्यावप्सरसौ काश्यपौ वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

११५७. सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत ।
शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥ १ ॥

११५८. समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम् ।
देवाव्यां३ मदमभि द्विशवसम् ॥ २ ॥

११५९. पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये ।
यथा मित्राय वरुणाय शन्तमम् ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—द्विपदा विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

११६०. प्र वाज्यक्षाः सहस्रधारस्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम् ॥ १ ॥

११६१. स वाज्यक्षाः सहस्ररेता अद्भिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः ॥ २ ॥

११६२. प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर्येमानो अद्रिभिः सुतः ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११६३. ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । ये वादः शर्यणावति ॥ १ ॥

११६४. य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम् । ये वा जनेषु पञ्चसु ॥ २ ॥

११६५. ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम् । स्वाना देवास इन्दवः ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११६६. आ ते वत्सो मनो यमत् परमाच्चित् सधस्थात् ।
अग्ने त्वां कामये गिरा ॥ १ ॥

११६७. पुरुत्रा हि स दृङ्ङसि दिशो विश्वा अनु प्रभुः ।
समत्सु त्वा हवामहे ॥ २ ॥

११६८. समत्स्वग्निमवसे वाजयन्तो हवामहे ।
वाजेषु चित्रराधसम् ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-२ ककुबुष्णिक्, ३ पुरउष्णिक् ॥
स्वरः—ऋषभः ॥

११६९. त्वं न इन्द्रा भर ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे ।
आ वीरं पृतनासहम् ॥ १ ॥

११७०. त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ ।
अधा ते सुम्नमीमहे ॥ २ ॥

११७१. त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्तमुप ब्रुवे सहस्कृत ।
स नो रास्व सुवीर्यम् ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

११७२. यदिन्द्र चित्र म इह नास्ति त्वादातमद्रिवः ।
राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर ॥ १ ॥

११७३. यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र द्युक्षं तदा भर ।
विद्याम तस्य ते वयमकूपारस्य दावनः ॥ २ ॥

११७४. यत्ते दिक्षु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् ।
तेन दृढा चिदद्रिव आ वाजं दर्षि सातये ॥ ३ ॥

इत्यष्टमोऽध्यायः, चतुर्थप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ नवमोऽध्यायः

पञ्चमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—प्रतर्दनो दैवोदासिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

११७५. शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति विप्रं मरुतो गणेन ।
कविर्गीर्भिः काव्येन कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥ १ ॥

११७६. ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्रनीथः पदवीः कवीनाम् ।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप् ॥ २ ॥

११७७. चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत् ।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११७८. एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य काममक्षरन् ।
वर्धन्तो अस्य वीर्यम् ॥ १ ॥

११७९. पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना ।
ते नो धत्त सुवीर्यम् ॥ २ ॥

११८०. इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय ।
देवानां योनिमासदम् ॥ ३ ॥

११८१. मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः ।
अनु विप्रा अमादिषुः ॥ ४ ॥

११८२. देवेभ्यस्त्वा मदाय कं सृजानमति मेष्यः ।
सं गोभिर्वासयामसि ॥ ५ ॥

११८३. पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः ।
परि गव्यान्यव्यत ॥ ६ ॥

११८४. मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः ।
इन्दो सखायमा विश ॥७॥
११८५. नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतं स्वर्विदम् ।
भक्षीमहि प्रजामिषम् ॥८॥
११८६. वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि ।
सहो नः सोम पृत्सु धाः ॥९॥

(३)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११८७. सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः । वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥
११८८. पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत । सुष्वाणं देववीतये ॥ २ ॥
११८९. पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः । गृणाना देववीतये ॥ ३ ॥
११९०. उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः । द्युमदिन्दो सुवीर्यम् ॥ ४ ॥
११९१. अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये । वि वारमव्यमाशवः ॥ ५ ॥
११९२. ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् । स्वाना देवास इन्दवः ॥ ६ ॥
११९३. वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभि वत्सं न मातरः । दधन्विरे गभस्त्योः ॥ ७ ॥
११९४. जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमानः कनिक्रदत् । विश्वा अप द्विषो जहि ॥ ८ ॥
११९५. अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः । योनावृतस्य सीदत ॥ ९ ॥

(४)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

११९६. सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य धारया । इन्द्राय मधुमत्तमाः ॥ १ ॥
११९७. अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न धेनवः । इन्द्रं सोमस्य पीतये ॥ २ ॥
११९८. मदच्युत्क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित् । सोमो गौरी अधि श्रितः ॥ ३ ॥
११९९. दिवो नाभा विचक्षणोऽव्यो वारे महीयते । सोमो यः सुक्रतुः कविः ॥ ४ ॥

१२००. यः सोमः कलशेष्वा अन्तः पवित्र आहितः। तमिन्दुः परि षस्वजे ॥ ५ ॥

१२०१. प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि। जिन्वन् कोशं मधुश्चुतम् ॥ ६ ॥

१२०२. नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धेनामन्तः सबर्दुघाम्। हिन्वानो मानुषा युजा ॥ ७ ॥

१२०३. आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम्। अस्मे इन्दो स्वाभुवम् ॥ ८ ॥

१२०४. अभि प्रिया दिवः कविर्विप्रः स धारया सुतः। सोमो हिन्वे परावति ॥ ९ ॥

(५)

ऋषिः—उचथ्यः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२०५. उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः। वाणस्य चोदया पविम् ॥ १ ॥

१२०६. प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः। यदव्य एषि सानवि ॥ २ ॥

१२०७. अव्या वारैः परि प्रियं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। पवमानं मधुश्चुतम् ॥ ३ ॥

१२०८. आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे। अर्कस्य योनिमासदम् ॥ ४ ॥

१२०९. स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः। एन्द्रस्य जठरं विश ॥ ५ ॥

(६)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२१०. अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा। अवाहन्नवतीर्नव ॥ १ ॥

१२११. पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शंबरम्। अध त्यं तुर्वशं यदुम् ॥ २ ॥

१२१२. परि णो अश्वमश्वविद्गोमदिन्दो हिरण्यवत्। क्षरा सहस्रिणीरिषः ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—अमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२१३. अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ १ ॥

१२१४. महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः। रास्वेन्दो वीरवद्यशः ॥ २ ॥

१२१५. न त्वा शतं च न ह्रुतो राधो दित्सन्तमा मिनन्। यत्पुनानो मखस्यसे ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—निध्रुविः काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२१६. अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः। हिन्वानो मानुषीरपः ॥ १ ॥

१२१७. अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि। अन्तरिक्षेण यातवे॥ २॥

१२१८. उत त्या हरितो रथे सूरो अयुक्त यातवे। इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्॥ ३॥

(९)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

१२१९. अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम् ।
यो मर्त्येषु निध्रुविर्ऋतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥ १॥

१२२०. प्रोथदश्वो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणाद्व्यस्थात् ।
आदस्य वातो अनु वाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति॥ २॥

१२२१. उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णोऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः ।
अच्छा द्यामरुषो धूम एषि सं दूतो अग्न ईयसे हि देवान् ॥ ३॥

(१०)

ऋषिः—सुकक्षः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१२२२. तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे। स वृषा वृषभो भुवत्॥ १॥

१२२३. इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स बले हितः। द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः॥ २॥

१२२४. गिरा वज्रो न सम्भृतः सबलो अनपच्युतः। ववक्ष उग्रो अस्तृतः॥ ३॥

(११)

ऋषिः—उचथ्यः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१२२५. अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ नय। पुनाहीन्द्राय पातवे॥ १॥

१२२६. तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोर्व्याशत। पवमानस्य मरुतः॥ २॥

१२२७. दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे। सुनोता मधुमत्तमम्॥ ३॥

(१२)

ऋषिः—कविः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

१२२८. धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः।
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुषे नदीष्वा॥ १॥

१२२९. शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वा३ः सिषासन् रथिरो गविष्टिषु।
इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः॥ २॥

१२३०. इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश।
प्र नः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया नो वाजाँ उप माहि शश्वतः ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

१२३१. यदिन्द्र प्रागपागु दग्न्यग्वा हूयसे नृभिः ।
सिमा पुरू नृषूतो अस्यानवेऽसि प्रशर्ध तुर्वशे ॥ १ ॥

१२३२. यद्वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा ।
कण्वासस्त्वा स्तोमेभिर्ब्रह्मवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

१२३३. उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।
सत्राच्या मघवान्त्सोमपीतये धिया शविष्ठ आ गमत् ॥ १ ॥

१२३४. तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसा धिषणे निष्टतक्षतुः ।
उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः ॥ २ ॥

(१५)

ऋषिः—निध्रुविः काश्यपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२३५. पवस्व देव आयुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः । वायुमा रोह धर्मणा ॥ १ ॥

१२३६. पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम् । इन्दो समुद्रमा विश ॥ २ ॥

१२३७. अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम् ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—अम्बरीषः, ऋजिश्वा च ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१२३८. अभी नो वाजसातमं रयिमर्ष शतस्पृहम् ।
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभासहम् ॥ १ ॥

१२३९. वयं ते अस्य राधसो वसोर्वसो पुरुस्पृहः ।
नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्ने ते अध्रिगो ॥ २ ॥

१२४०. परि स्य स्वानो अक्षरदिन्दुरव्ये मदच्युतः ।
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा न याति गव्ययुः ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—द्विपदा विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१२४१. पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥ १ ॥
१२४२. शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजाभ्यः ॥ २ ॥
१२४३. दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—उशनाः काव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२४४. प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् । अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ १ ॥
१२४५. कविमिव प्रशंस्यं यं देवास इति द्विता । नि मर्त्येष्वादधुः ॥ २ ॥
१२४६. त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄः पाहि शृणुही गिरः । रक्षा तोकमुत त्मना ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१२४७. एन्द्र नो गधि प्रियं सत्राजिदगोह्य । गिरिर्न विश्वतः पृथुः पतिर्दिवः ॥ १ ॥
१२४८. अभि हि सत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी । इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः ॥ २ ॥
१२४९. त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र दर्ता पुरामसि । हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—जेता माधुच्छन्दसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१२५०. पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत ।
इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ॥ १ ॥

१२५१. त्वं वलस्य गोमतोऽपावरद्रिवो बिलम् ।
त्वां देवा अबिभ्युषस्तुज्यमानास आविषुः ॥ २ ॥

१२५२. इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमैरनूषत ।
सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूयसीः ॥ ३ ॥

इति नवमोऽध्यायः, पञ्चमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ दशमोऽध्यायः

पञ्चमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—पराशरः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१२५३. अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मन् जनयन् प्रजा भुवनस्य गोपाः ।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे स्वानो अद्रिः ॥ १ ॥

१२५४. मत्सि वायुमिष्टये राधसे नो मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम ॥ २ ॥

१२५५. महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽवृणीत देवान् ।
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—शुनःशेपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२५६. एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयते । अभि द्रोणान्यासदम् ॥ १ ॥

१२५७. एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो वि गाहते । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ २ ॥

१२५८. एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः । पवमानः सिषासति ॥ ३ ॥

१२५९. एष देवो रथर्यति पवमानो दिशस्यति । आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥ ४ ॥

१२६०. एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः । हरिर्वाजाय मृज्यते ॥ ५ ॥

१२६१. एष देवो विपा कृतोऽति ह्वरांसि धावति । पवमानो अदाभ्यः ॥ ६ ॥

१२६२. एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया । पवमानः कनिक्रदत् ॥ ७ ॥

१२६३. एष दिवं व्यासरत्तिरो रजांस्यस्तृतः । पवमानः स्वध्वरः ॥ ८ ॥

१२६४. एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । हरिः पवित्रे अर्षति ॥ ९ ॥

१२६५. एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः । धारया पवते सुतः ॥ १० ॥

(३)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा॥ देवता—पवमानः सोमः॥
छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१२६६. एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्॥ १॥
१२६७. एष पुरू धियायते बृहते देवतातये। यत्रामृतास आशत ॥ २॥
१२६८. एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः प्रचक्राणं महीरिषः ॥ ३॥
१२६९. एष हितो वि नीयतेऽन्तः शुन्ध्यावता पथा। यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः॥ ४॥
१२७०. एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः। पतिः सिन्धूनां भवन्॥ ५॥
१२७१. एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते यूथ्यो३ वृषा। नृम्णा दधान ओजसा॥ ६॥
१२७२. एष वसूनि पिब्दनः परुषा ययिवाँ अति। अव शादेषु गच्छति॥ ७॥
१२७३. एतमु त्यं दश क्षिपो हरिं हिन्वन्ति यातवे। स्वायुधं मदिन्तमम्॥ ८॥

(४)

ऋषिः—राहूगणः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१२७४. एष उ स्य वृषा रथोऽव्या वारेभिरव्यत। गच्छन्वाजं सहस्रिणम्॥ १॥
१२७५. एतं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः। इन्दुमिन्द्राय पीतये॥ २॥
१२७६. एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति। गच्छं जारो न योषितम्॥ ३॥
१२७७. एष स्य मद्यो रसोऽव चष्टे दिवः शिशुः। य इन्दुर्वारमाविशत्॥ ४॥
१२७८. एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः। क्रन्दन्योनिमभि प्रियम्॥ ५॥
१२७९. एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः। याभिर्मदाय शुम्भते॥ ६॥

(५)

ऋषिः—प्रियमेधः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१२८०. एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः। अव्यं वारं वि धावति॥ १॥
१२८१. एष पवित्रे अक्षरत् सोमो देवेभ्यः सुतः। विश्वा धामान्याविशन्॥ २॥
१२८२. एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः। वृत्रहा देववीतमः॥ ३॥

१२८३. एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः। अभि द्रोणानि धावति ॥ ४ ॥

१२८४. एष सूर्यमरोचयत् पवमानो अधि द्यवि। पवित्रे मत्सरो मदः ॥ ५ ॥

१२८५. एष सूर्येण हासते संवसानो विवस्वता। पतिर्वाचो अदाभ्यः ॥ ६ ॥

(६)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२८६. एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते। पुनानो घ्नन्नप द्विषः ॥ १ ॥

१२८७. एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित् परि षिच्यते। पवित्रे दक्षसाधनः ॥ २ ॥

१२८८. एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः। सोमो वनेषु विश्ववित् ॥ ३ ॥

१२८९. एष गव्युरचिक्रदत् पवमानो हिरण्ययुः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥ ४ ॥

१२९०. एष शुष्म्यसिष्यददन्तरिक्षे वृषा हरिः। पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥ ५ ॥

१२९१. एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति। देवावीरघशंसहा ॥ ६ ॥

(७)

ऋषिः—राहूगणः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१२९२. स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति। विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ॥ १ ॥

१२९३. स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः। अभि योनिं कनिक्रदत् ॥ २ ॥

१२९४. स वाजी रोचनं दिवः पवमानो वि धावति। रक्षोहा वारमव्ययम् ॥ ३ ॥

१२९५. स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत्। जामिभिः सूर्यं सह ॥ ४ ॥

१२९६. स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविददाभ्यः। सोमो वाजमिवासरत् ॥ ५ ॥

१२९७. स देवः कविनेषितो३ऽभि द्रोणानि धावति। इन्दुरिन्द्राय मंहयन् ॥ ६ ॥

(८)

ऋषिः—पवित्रो वसिष्ठो वोभौ वा ॥ देवता—पावमान्यध्येतृस्तुतिः ॥

छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१२९८. यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना ॥ १ ॥

१२९९. पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥ २ ॥

१३००. पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः ।
ऋषिभिः संभृतो रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् ॥ ३ ॥

१३०१. पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथो अमुम् ।
कामान्त्समर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः ॥ ४ ॥

१३०२. येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा ।
तेन सहस्त्रधारेण पावमानीः पुनन्तु नः ॥ ५ ॥

१३०३. पावमानीः स्वस्त्ययनीस्ताभिर्गच्छति,नान्दनम् ।
पुण्याँश्च भक्षान् भक्षयत्यमृतत्वं च गच्छति ॥ ६ ॥

(९)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१३०४. अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे ।
चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम् ॥ १ ॥

१३०५. स मह्ना विश्वा दुरितानि साह्वानग्निः ष्टवे दम आ जातवेदाः ।
स नो रक्षिषद् दुरितादवद्यादस्मान् गृणत उत नो मघोनः ॥ २ ॥

१३०६. त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः ।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३०७. महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँइव । स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे ॥ १ ॥

१३०८. कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् । जामि ब्रुवत आयुधा ॥ २ ॥

१३०९. प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद्भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—शतं वैखानसाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३१०. पवमानस्य जिघ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत । जीरा अजिरशोचिषः ॥ १ ॥

१३११. पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः । हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥ २ ॥

१३१२. पवमान व्यश्नुहि रश्मिभिर्वाजसातमः। दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम्॥ ३॥

(१२)

ऋषिः—सप्तर्षयः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—१, २ बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती); ३ द्विपदाविराट्पङ्क्तिः॥ स्वरः—१ मध्यमः, २, ३ पञ्चमः॥

१३१३. परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वा३ऽन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥ १॥

१३१४. नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवादब्धः सुरभिन्तरः ।
सुते चित्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम् ॥ २॥

१३१५. परि स्वानश्चक्षसे देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः ॥ ३॥

(१३)

ऋषिः—वसुर्भारद्वाजः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—जगती॥ स्वरः—निषादः॥

१३१६. असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत्।
पुनानो वारमत्येष्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदत्॥ १॥

१३१७. पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे।
स्वसार आपो अभि गा उदासरन्त्सं ग्रावभिर्वसते वीते अध्वरे॥ २॥

१३१८. कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि।
अपसेधन् दुरिता सोम नो मृड घृता वसानः परि यासि निर्णिजम्॥ ३॥

(१४)

ऋषिः—नृमेधः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः॥

१३१९. श्रायन्तइव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।
वसूनि जातो जनिमान्योजसा प्रति भागं न दीधिमः ॥ १॥

१३२०. अलर्षिरातिं वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।
यो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन् ॥ २॥

(१५)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः ॥

१३२१. यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये वि द्विषो वि मृधो जहि ॥ १ ॥

१३२२. त्वं हि राधसस्पते राधसो मह: क्षयस्यासि विधर्ता ।
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ॥ २ ॥

(१६)

ऋषिः—भरद्वाजः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३२३. त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे। पवस्व मंहयद्रयिः ॥ १ ॥

१३२४. त्वं सुतो मदिन्तमो दधन्वान्मत्सरिन्तमः। इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥ २ ॥

१३२५. त्वं सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत्। द्युमन्तं शुष्ममा भर ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—मनुराप्सवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१३२६. पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा ।
आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ॥ १ ॥

१३२७. तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः ।
त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ॥ २ ॥

१३२८. आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम् ।
वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—अम्बरीष ऋजिश्वा च ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१३२९. परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
यो देवान्विश्वा इत्परि मदेन सह गच्छति ॥ १ ॥

१३३०. द्विर्यं पञ्च स्वयशसं सखायो अद्रिसंहतम् ।
प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त ऊर्मयः ॥ २ ॥

१३३१. इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे ।
नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—द्विपदा विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१३३२. पवस्व सोम महे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥ १ ॥
१३३३. प्र ते सोतारो रसं मदाय पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय ॥ २ ॥
१३३४. शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम् ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—अंमहीयुः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३३५. उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् । इन्दुं देवा अयासिषुः ॥ १ ॥
१३३६. तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव । य इन्द्रस्य हृदं सनिः ॥ २ ॥
१३३७. अर्षा नः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् । वर्धा समुद्रमुक्थ्य ॥ ३ ॥

(२१)

ऋषिः—त्रिशोकः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३३८. आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ १ ॥
१३३९. बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्त्रं पृथुः स्वरुः ।
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ २ ॥
१३४०. अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः ।
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥ ३ ॥

(२२)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१३४१. य एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे ।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अङ्ग ॥ १ ॥

१३४२. यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति ।
उग्रं तत् पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग ॥ २ ॥
१३४३. कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् ।
कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग ॥ ३ ॥

(२३)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१३४४. गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥ १ ॥
१३४५. यत्सानोः सान्वारुहो भूर्यस्पष्ट कर्त्वम् ।
तदिन्द्रो अर्थं चेतति यूथेन वृष्णिरेजति ॥ २ ॥
१३४६. युङ्क्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा ।
अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर ॥ ३ ॥

इति दशमोऽध्यायः, पञ्चमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथैकादशोऽध्यायः
षष्ठप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—१ इध्मः समिद्धो वाग्निः; २ तनूनपात्; ३ नराशंसः; ४ इडः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३४७. सुषमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते । होतः पावक यक्षि च ॥ १ ॥
१३४८. मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्या कृणुह्यूतये ॥ २ ॥
१३४९. नराशंसमिह प्रियमस्मिन्यज्ञ उप ह्वये । मधुजिह्वं हविष्कृतम् ॥ ३ ॥
१३५०. अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईडित आ वह । असि होता मनुर्हितः ॥ ४ ॥

(२)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—आदित्यः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३५१. यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा । सुवाति सविता भगः ॥ १ ॥

१३५२. सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः। ये नो अंहोऽतिपिप्रति॥ २॥

१३५३. उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये। महो राजान ईशते॥ ३॥

(३)

ऋषिः—प्रगाथः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१३५४. उत्त्वा मन्दन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः। अव ब्रह्मद्विषो जहि॥ १॥

१३५५. पदा पणीनराधसो नि बाधस्व महाँ असि। न हि त्वा कश्च न प्रति॥ २॥

१३५६. त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्। त्वं राजा जनानाम्॥ ३॥

(४)

ऋषिः—पराशरः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—त्रिष्टुप्॥ स्वरः—धैवतः॥

१३५७. आ जागृविर्विप्र ऋतं मतीनां सोमः पुनानो असदच्चमूषु।
सपन्ति यं मिथुनासो निकामा अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः॥ १॥

१३५८. स पुनान उप सूरे दधान ओभे अप्रा रोदसी वी ष आवः।
प्रिया चिद्यस्य प्रियसास ऊती सतो धनं कारिणे न प्र यंसत्॥ २॥

१३५९. स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वाँ अभि नो ज्योतिषावित्।
यत्र नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि गा अद्रिमिष्णन्॥ ३॥

(५)

ऋषिः—प्रगाथो घौरः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः
(१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः॥

१३६०. मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत।
इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरुक्था च शंसत॥ १॥

१३६१. अवक्रक्षिणं वृषभं यथा जुवं गां न चर्षणीसहम्।
विद्वेषणं संवननमुभयङ्करं मंहिष्ठमुभयाविनम्॥ २॥

(६)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः
(१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः, २ पञ्चमः॥

१३६२. उदु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथाइव॥ १॥

१३६३. कण्वाइव भृगवः सूर्याइव विश्वमिद्धीतमाशत ।
इन्द्रं स्तोमेभिर्महयन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन् ॥ २ ॥

(७)

ऋषिः—त्र्यरुणस्त्रसदस्यू ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—पिपीलिकामध्या अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१३६४. पर्यू षु प्र धन्व वाज़सातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईरसे ॥ १ ॥

१३६५. अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः ।
गोजीरया रंहमाणः पुरन्ध्या ॥ २ ॥

१३६६. अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये ।
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—अग्नयो धिष्ण्या ऐश्वराः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—द्विपदा विराट्पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१३६७. परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥ १ ॥

१३६८. एवामृताय महे क्षयाय स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः ॥ २ ॥

१३६९. इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयात् क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—हिरण्यस्तूपः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

१३७०. सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो मत्सरासः प्रसुतः साकमीरते ।
तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन ॥ १ ॥

१३७१. उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी चोदते अन्तरासनि ।
पवमानः सन्तनिः सुन्वतामिव मधुमान् द्रप्सः परि वारमर्षति ॥ २ ॥

१३७२. उक्षा मिमेति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुप यन्ति निष्कृतम् ।
अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—वशिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—विराडनुष्टुप्॥ स्वरः—गान्धारः॥

१३७३. अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्हस्तच्युतं जनयत प्रशस्तम् ।
दूरेदृशं गृहपतिमथव्युम् ॥ १ ॥

१३७४. तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश्चित् ।
दक्षाय्यो यो दम आस नित्यः ॥ २ ॥

१३७५. प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नोऽजस्त्रया सूर्म्या यविष्ठ ।
त्वां शश्वन्त उप यन्ति वाजाः ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—सार्पराज्ञी॥ देवता—सूर्यः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१३७६. आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥ १ ॥

१३७७. अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती। व्यख्यन्महिषो दिवम्॥ २ ॥

१३७८. त्रिंशद्धाम वि राजति वाक्पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः॥ ३ ॥

इत्यैकादशोऽध्यायः, षष्ठप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः॥

अथ द्वादशोऽध्यायः

षष्ठप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—१, २, ४ गोतमो राहूगणः; ३ वसिष्ठः॥ देवता—अग्निः॥

छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१३७९. उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्नये। आरे अस्मे च शृण्वते॥ १ ॥

१३८०. यः स्नीहितीषु पूर्व्यः संजग्मानासु कृष्टिषु। अरक्षद्दाशुषे गयम्॥ २ ॥

१३८१. स नो वेदो अमात्यमग्नी रक्षतु शन्तमः। उतास्मान् पात्वंहसः॥ ३ ॥

१३८२. उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहाजनि। धनञ्जयो रणेरणे॥ ४ ॥

(२)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३८३. अग्ने युङ्क्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः । अरं वहन्त्याशवः ॥ १ ॥

१३८४. अच्छा नो याह्या वहाभि प्रयांसि वीतये । आ देवान्त्सोमपीतये ॥ २ ॥

१३८५. उदग्ने भारत द्युमदजस्रेण दविद्युतत् । शोचा वि भाह्यजर ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—प्रजापतिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१३८६. प्र सुन्वानायान्धसो मर्तो न वष्ट तद्वचः ।
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥ १ ॥

१३८७. आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः ।
सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् ॥ २ ॥

१३८८. स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी ।
हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

१३८९. अभ्रातृव्यो अना त्वमनापिरिन्द्र जनुषा सनादसि ।
युधेदापित्वमिच्छसे ॥ १ ॥

१३९०. न की रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीयन्ति ते सुराश्वः ।
यदा कृणोषि नदनुं समूहस्यादित्पितेव हूयसे ॥ २ ॥

(५)

ऋषिः—मेधातिथिमेध्यातिथी काण्वौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१३९१. आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये ॥ १ ॥

१३९२. आ त्वा रथे हिरण्यये हरी मयूरशेप्या ।
शितिपृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये ॥ २ ॥

१३९३. पिबा त्वा३स्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपाइव ।
परिष्कृतस्य रसिन इयमासुतिश्चारुर्मदाय पत्यते ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—१ ऋजिश्वा; २ ऊर्ध्वसद्मा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

१३९४. आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम् । वनप्रक्षमुदप्रुतम् ॥ १ ॥
१३९५. सहस्रधारं वृषभं पयोदुहं प्रियं देवाय जन्मने ।
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत् ॥ २ ॥

(७)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१३९६. अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया । समिद्धः शुक्र आहुतः ॥ १ ॥
१३९७. गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे । सीदन्नृतस्य योनिमा ॥ २ ॥
१३९८. ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे । अग्ने यद्दीदयद्दिवि ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१३९९. अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन् मितेव सद्म पशुमन्ति होता ॥ १ ॥
१४००. भद्रा वस्त्रा समन्या३ वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन् ।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ ॥ २ ॥
१४०१. समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे ।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—तिरश्चीः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१४०२. एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साम्ना ।
शुद्धैरुक्थैर्वावृध्वांसं शुद्धैराशीर्वान् ममत्तु ॥ १ ॥

१४०३. इन्द्र शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरूतिभिः ।
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममद्धि सोम्य ॥ २ ॥

१४०४. इन्द्र शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे ।
शुद्धो वृत्राणि जिघ्नसे शुद्धो वाजं सिषाससि ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—सुतम्भर आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४०५. अग्ने स्तोमं मनामहे सिध्रमद्य दिविस्पृशः । देवस्य द्रविणस्यवः ॥ १ ॥

१४०६. अग्निर्जुषत नो गिरो होता यो मानुषेष्वा । स यक्षद् दैव्यं जनम् ॥ २ ॥

१४०७. त्वमग्ने सप्रथा असि जुष्टो होता वरेण्यः । त्वया यज्ञं वि तन्वते ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१४०८. अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामङ्गोषिणमवावशंत वाणीः ।
वना वसानो वरुणो न सिन्धुर्वि रत्नधा दयते वार्याणि ॥ १ ॥

१४०९. शूरग्रामः सर्ववीरः सहावान् जेता पवस्व सनिता धनानि ।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाढः साह्वान् पृतनासु शत्रून् ॥ २ ॥

१४१०. उरुगव्यूतिरभयानि कृण्वन्त्समीचीने आ पवस्वा पुरन्धी ।
अपः सिषासन्नुषसः स्वाऽ३र्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१४११. त्वमिन्द्र यशा अस्यृजीषी शवसस्पतिः ।
त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इत्पुर्वनुत्तश्चर्षणीधृतिः ॥ १ ॥

१४१२. तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे ।
महीव कृत्तिः शरणा त इन्द्र प्र ते सुम्ना नो अश्नवन् ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

१४१३. यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् ।
अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ॥ १ ॥

१४१४. अपां नपातं सुभगं सुदीदितिमग्निमु श्रेष्ठशोचिषम् ।
स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपामा सुम्नं यक्षते दिवि ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४१५. यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः । स यन्ता शश्वतीरिषः ॥ १ ॥

१४१६. न किरस्य सहन्त्य पर्येता कयस्य चित् । वाजो अस्ति श्रवाय्यः ॥ २ ॥

१४१७. स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्भिरस्तु तरुता । विप्रेभिरस्तु सनिता ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—नोधाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१४१८. साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः ।
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी ॥ १ ॥

१४१९. सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अद्भिः ।
मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन्त्सं गच्छते कलश उस्रियाभिः ॥ २ ॥

१४२०. उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया इन्दुर्धाराभिः सचते सुमेधाः ।
मूर्धानं गावः पयसा चमूष्वभि श्रीणन्ति वसुभिर्न निक्तैः ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१४२१. पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः ।
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३ऽस्माँ अवन्तु ते धियः ॥ १ ॥

१४२२. भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा न स्तरभिमातये ।
अस्मां चित्राभिरवतादभिष्टिभिरा नः सुम्नेषु यामय ॥ २ ॥

(१७)

ऋषिः—रेणुर्वैश्वामित्रः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

१४२३. त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रिरे सत्यामाशिरं परमे व्योमनि ।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत ॥ १ ॥

१४२४. स भक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे ।
तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः ॥ २ ॥

१४२५. ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवोऽदाभ्यासो जनुषी उभे अनु ।
येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद्राजानं मनना अगृभ्णत ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—कुत्सः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१४२६. अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानो३भि मित्रावरुणा पूयमानः ।
अभी नरं धीजवनं रथेष्ठामभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम् ॥ १ ॥

१४२७. अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः ।
अभि चन्द्रा भर्त्तवे नो हिरण्याभ्यश्वान् रथिनो देव सोम ॥ २ ॥

१४२८. अभी नो अर्ष दिव्या वसून्यभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः ।
अभि येन द्रविणमश्नवामाभ्यार्षेयं जमदग्निवन्नः ॥ ३ ॥

(१९)

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१, २ अनुष्टुप्; ३ बृहती ॥
स्वरः—१, २ गान्धारः; ३ मध्यमः ॥

१४२९. यज्जायथा अपूर्व्य मघवन् वृत्रहत्याय ।
तत्पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्ना उतो दिवम् ॥ १ ॥

१४३०. तत्ते यज्ञो अजायत तदर्क उत हस्कृतिः ।
तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम् ॥ २ ॥

१४३१. आमासु पक्वमैरय आ सूर्यं रोहयो दिवि ।
घर्मं न सामं तपता सुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्वणसे बृहत् ॥ ३ ॥

(२०)

ऋषिः—अगस्त्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ स्कन्धौग्रीवी बृहती; २, ३ अनुष्टुप् ॥
स्वरः—१ मध्यमः; २, ३ गान्धारः ॥

१४३२. मत्स्यपायि ते महः पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः ।
वृषा ते वृष्ण इन्दुर्वाजी सहस्रसातमः ॥ १ ॥

१४३३. आ नस्ते गन्तु मत्सरो वृषा मदो वरेण्यः ।
सहावाँ इन्द्र सानसिः पृतनाषाडमर्त्यः ॥ २ ॥

१४३४. त्वं हि शूरः सनिता चोदयो मनुषो रथम् ।
सहावान् दस्युमव्रतमोषः पात्रं न शोचिषा ॥ ३ ॥

इति द्वादशोऽध्यायः, षष्ठप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः ॥

अथ त्रयोदशोऽध्यायः

षष्ठप्रपाठकस्य तृतीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—कविर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४३५. पवस्व वृष्टिमा सु नोऽपामूर्मिं दिवस्परि । अयक्ष्मा बृहतीरिषः ॥ १ ॥

१४३६. तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन् । जन्यास उप नो गृहम् ॥ २ ॥

१४३७. घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः । अस्मभ्यं वृष्टिमा पव ॥ ३ ॥

१४३८. स न ऊर्जे व्या३व्ययं पवित्रं धाव धारया । देवासः शृणवन्हि कम् ॥ ४ ॥

१४३९. पवमानो असिष्यदद्रक्षांस्यपजङ्घनत् । प्रत्नवद्रोचयन्रुचः ॥ ५ ॥

(२)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-३ अनुष्टुप्; ४ बृहती ॥
स्वरः—१-३ गान्धारः; ४ मध्यमः ॥

१४४०. प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर ।
अरङ्गमाय जग्मयेऽपश्चादध्वने नरः ॥ १ ॥

१४४१. एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः सोमपातमम् ।
अमत्रेभिर्ऋजीषिणमिन्द्रं सुतेभिरिन्दुभिः ॥ २ ॥

१४४२. यदी सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूषथ ।
वेदा विश्वस्य मेधिरो धृषत्तन्तमिदेषते ॥ ३ ॥

१४४३. अस्माअस्मा इदन्धसोऽध्वर्यो प्र भरा सुतम् ।
कुवित्समस्य जेन्यस्य शर्धतोऽभिशस्तेरवस्वरत् ॥ ४ ॥

(३)

ऋषिः—असितः काश्यपो देवलो वा ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४४४. बभ्रवे नु स्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे। सोमाय गाथमर्चत ॥ १ ॥
१४४५. हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन। मधावा धावता मधु ॥ २ ॥
१४४६. नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन। इन्दुमिन्द्रे दधातन ॥ ३ ॥
१४४७. अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे। देवेभ्यो अनुकामकृत् ॥ ४ ॥
१४४८. इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे। मनश्चिन्मनसस्पतिः ॥ ५ ॥
१४४९. पवमान सुवीर्यं रयिं सोम रिरीहि णः। इन्दविन्द्रेण नो युजा ॥ ६ ॥

(४)

ऋषिः—सुकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४५०. उद् घेदभि श्रुतामघं वृषभं नर्यापसम्। अस्तारमेषि सूर्य ॥ १ ॥
१४५१. नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा। अहिं च वृत्रहावधीत् ॥ २ ॥
१४५२. स न इन्द्रः शिवः सखाश्वावद्गोमद्यवमत्। उरुधारेव दोहते ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—विभ्राट् सौर्यः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

१४५३. विभ्राड् बृहत् पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्।
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पिपर्ति बहुधा वि राजति ॥ १ ॥

१४५४. विभ्राड् बृहत्सुभृतं वाजसातमं धर्मं दिवो धरुणे सत्यमर्पितम्।
अमित्रहा वृत्रहा दस्युहन्तमं ज्योतिर्जज्ञे असुरहा सपत्नहा ॥ २ ॥

१४५५. इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरुत्तमं विश्वजिद्धनजिदुच्यते बृहत्।
विश्वभ्राड् भ्राजो महि सूर्यो दृश उरु पप्रथे सह ओजो अच्युतम्॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः॥

१४५६. इन्द्र क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।
शिक्षा णो अस्मिन् पुरुहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि ॥ १ ॥

१४५७. मा नो अज्ञाता वृजना दुराध्यो३ माशिवासोऽव क्रमुः ।
त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपोऽति शूर तरामसि ॥ २ ॥

(७)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः॥

१४५८. अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः ।
विश्वा च नो जरितॄन्त्सत्पते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः ॥ १ ॥

१४५९. प्रभङ्गी शूरो मघवा तुवीमघः सम्मिश्लो वीर्याय कम् ।
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः ॥ २ ॥

(८)

ऋषिः—वसिष्ठः॥ देवता—सरस्वान्॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१४६०. जनीयन्तो न्वग्रवः पुत्रीयन्त सुदानवः। सरस्वन्तं हवामहे॥ १ ॥

(९)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—सरस्वती॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१४६१. उत नः प्रिया प्रियासु सप्तस्वसा सुजुष्टा। सरस्वती स्तोम्या भूत्॥ १ ॥

(१०)

ऋषिः—१ विश्वामित्रः, २ मेधातिथिः, ३ शतं वैखानसाः॥ देवता—१ सविता, २ ब्रह्मणस्पतिः, ३ अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१४६२. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ १ ॥

१४६३. सोमानां स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते ।
कक्षीवन्तं य औशिजः ॥ २ ॥

१४६४. अग्न आयूँषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः ।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—यजत आत्रेयः ॥ देवता—मित्रावरुणौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४६५. ता नः शक्तं पार्थिवस्य महो रायो दिव्यस्य । महि वा क्षत्रं देवेषु ॥ १ ॥

१४६६. ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते । अद्रुहा देवौ वर्धेते ॥ २ ॥

१४६७. वृष्टिद्यावा रीत्यापेषस्पती दानुमत्याः । बृहन्तं गर्तमाशाते ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४६८. युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः । रोचन्ते रोचना दिवि ॥ १ ॥

१४६९. युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे । शोणा धृष्णू नृवाहसा ॥ २ ॥

१४७०. केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः--उशनाः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१४७१. अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि ।
त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्दुं मदाय युज्याय सोमम् ॥ १ ॥

१४७२. स ईं रथो न भुरिषाडयोजि महः पुरूणि सातये वसूनि ।
आदीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त ॥ २ ॥

१४७३. शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वानभिशस्ता दिव्या यथा विट् ।
आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सहस्राप्साः पृतनाषाड् न यज्ञः ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१ वर्धमाना गायत्री;
२, ३ गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४७४. त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः । देवेभिर्मानुषे जने ॥ १ ॥

१४७५. सं नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा महः। आ देवान्वक्षि यक्षि च ॥ २ ॥

१४७६. वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा। अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४७७. होता देवो अमर्त्यः पुरस्तादेति मायया। विदथानि प्रचोदयन् ॥ १ ॥

१४७८. वाजी वाजेषु धीयतेऽध्वरेषु प्र णीयते। विप्रो यज्ञस्य साधनः ॥ २ ॥

१४७९. धिया चक्रे वरेण्यो भूतानां गर्भमा दधे। दक्षस्य पितरं तना ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—हर्यतः प्रागाथः ॥ देवता—अग्निर्हवींषि वा ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४८०. आ सुते सिञ्चत श्रियं रोदस्योरभिश्रियम्। रसा दधीत वृषभम् ॥ १ ॥

१४८१. ते जानत स्वमोक्यां३ सं वत्सासो न मातृभिः। मिथो नसन्त जामिभिः ॥ २ ॥

१४८२. उप स्रक्वेषु बप्सतः कृण्वते धरुणं दिवि। इन्द्रे अग्ना नमः स्वः ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—बृहद्दिव आथर्वणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१४८३. तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः ।
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः ॥ १ ॥

१४८४. वावृधानः शवसा भूर्योजाः शत्रुर्दासाय भियसं दधाति ।
अव्यनच्च व्यनच्च सस्नि सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु ॥ २ ॥

१४८५. त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः ।
स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा समदः सु मधु मधुनाभि योधीः ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—गृत्समदः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ अष्टिः; २, ३ अतिशक्वरी ॥
स्वरः—१ मध्यमः; २-३ पञ्चमः ॥

१४८६. त्रिकद्रुकेषु महिषो यवाशिरं तुविशुष्मस्तृम्पत्
सोममपिबद्विष्णुना सुतं यथावशम् ।
स ईं ममाद महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं
सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥ १ ॥

१४८७. साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ
साकं वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः ।
दाता राध स्तुवते काम्यं वसु प्रचेतन सैनं
सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥ २ ॥

१४८८. अध त्विषीमाँ अभ्योजसा कृविं युधाभवदा
रोदसी अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे ।
अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत प्र चेतय सैनं
सश्चद्देवो देवं सत्य इन्दुः सत्यमिन्द्रम् ॥ ३ ॥

इति त्रयोदशोऽध्यायः, षष्ठप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ चतुर्दशोऽध्यायः

सप्तमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४८९. अभि प्र गोपतिं गिरेन्द्रमर्च यथा विदे। सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ॥ १ ॥

१४९०. आ हरयः ससृज्रिरेऽरुषीरधि बर्हिषि। यत्राभि संनवामहे ॥ २ ॥

१४९१. इन्द्राय गाव आशिरं दुदुह्रे वज्रिणे मधु। यत्सीमुपह्वरे विदत् ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—नृमेधपुरुमेधौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१४९२. आ नो विश्वासु हव्यमिन्द्रं समत्सु भूषत ।
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥ १ ॥

१४९३. त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत् ।
तुविद्युम्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शवसो महः ॥ २ ॥

(३)

ऋषिः—त्र्यरुणत्रसदस्यू ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—ऊर्ध्वा बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१४९४. प्रत्नं पीयूषं पूर्व्यं यदुक्थ्यं महो गाहाद्दिव आ निरधुक्षत ।
इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन् ॥ १ ॥

१४९५. आदीं के चित् पश्यमानास आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत ।
दिवो न वारं सविता व्यूर्णुते ॥ २ ॥

१४९६. अध यदिमे पवमान रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना ।
यूथे न निष्ठा वृषभो वि राजसि ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१४९७. इममू षु त्वमस्माकं सनिं गायत्रं नव्यांसम् । अग्ने देवेषु प्र वोचः ॥ १ ॥

१४९८. विभक्तासि चित्रभानो सिन्धोरूर्मा उपाक आ । सद्यो दाशुषे क्षरसि ॥ २ ॥

१४९९. आ नो भज परमेष्वा वाजेषु मध्यमेषु । शिक्षा वस्वो अन्तमस्य ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५००. अहमिद्धि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रह । अहं सूर्यइवाजनि ॥ १ ॥

१५०१. अहं प्रत्नेन जन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् । येनेन्द्रः शुष्ममिद्दधे ॥ २ ॥

१५०२. ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः । ममेद् वर्धस्व सुष्टुतः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—अग्निस्तापसः ॥ देवता—विश्वेदेवाः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१५०३. अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्जोषि ब्रह्म सहस्कृत ।
ये देवत्रा य आयुषु तेभिर्नो महया गिरः ॥ १ ॥

१५०४. प्र स विश्वेभिरग्निभिरग्निः स यस्य वाजिनः ।
तनये तोके अस्मदा सम्यङ् वाजैः परीवृतः ॥ २ ॥

१५०५. त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।
त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—त्र्यरुणत्रसदस्यू ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—ऊर्ध्वा बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१५०६. त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः ।
स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय ॥ १ ॥

१५०७. अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथोत्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम् ।
शर्याभिर्न भरमाणो गभस्त्योः ॥ २ ॥

१५०८. अजीजनो अमृत मर्त्याय कमृतस्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः ।
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१५०९. एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबाति सोम्यं मधु ।
प्र राधांसि चोदयते महित्वना ॥ १ ॥

१५१०. उपो हरीणां पतिं राधः पृञ्चन्तमब्रवम् ।
नूनं श्रुधि स्तुवतो अश्व्यस्य ॥ २ ॥

१५११. न ह्या३ङ्ग पुरा च न जज्ञे वीरतरस्त्वत् ।
न की राया नैवथा न भन्दना ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—प्रियमेध आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—निचृदुष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१५१२. नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम् । पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि ॥ १ ॥

(१०)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१५१३. देवो वो द्रविणोदाः पूर्णां विवष्ट्वासिचम् ।
उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते ॥ १ ॥

१५१४. तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत ।
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यमग्निर्जनाय दाशुषे ॥ २ ॥

(११)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१५१५. अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः ।
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनमग्निं नक्षन्तु नो गिरः ॥ १ ॥
१५१६. यस्माद्रेजन्त कृष्टयश्चर्कृत्यानि कृण्वतः ।
सहस्रसां मेधसाताविव त्मनाग्निं धीभिर्नमस्यत ॥ २ ॥
१५१७. प्र दैवोदासो अग्निर्देव इन्द्रो न मज्मना ।
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य शर्मणि ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—शतं वैखानसाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५१८. अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः ।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥ १ ॥
१५१९. अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
तमीमहे महागयम् ॥ २ ॥
१५२०. अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।
दधद्रयिं मयि पोषम् ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वसूयव आत्रेयाः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५२१. अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया । आ देवान् वक्षि यक्षि च ॥ १ ॥
१५२२. तं त्वा घृतस्नवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम् । देवाँ आ वीतये वह ॥ २ ॥
१५२३. वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि । अग्ने बृहन्तमध्वरे ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५२४. अवा नो अग्न ऊतिभिर्गायत्रस्य प्रभर्मणि । विश्वासु धीषु वन्द्य ॥ १ ॥
१५२५. आ नो अग्ने रयिं भर सत्रासाहं वरेण्यम् । विश्वासु पृत्सु दुष्टरम् ॥ २ ॥
१५२६. आ नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम् । मार्डीकं धेहि जीवसे ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—केतुराग्नेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५२७. अग्निं हिन्वन्तु नो धियः सप्तिमाशुमिवाजिषु। तेन जेष्म धनंधनम् ॥ १ ॥

१५२८. यया गा आकरामहै सेनयाग्ने तवोत्या। तां नो हिन्व मघत्तये ॥ २ ॥

१५२९. आग्ने स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम्। अङ्धि खं वर्तया पविम् ॥ ३ ॥

१५३०. अग्ने नक्षत्रमजरमा सूर्यं रोहयो दिवि। दधज्ज्योतिर्जनेभ्यः ॥ ४ ॥

१५३१. अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्ठः श्रेष्ठ उपस्थसत्। बोधा स्तोत्रे वयो दधत् ॥ ५ ॥

(१६)

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५३२. अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपां रेतांसि जिन्वति ॥ १ ॥

१५३३. ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वःपतिः। स्तोता स्यां तव शर्मणि ॥ २ ॥

१५३४. उदग्ने शुचयस्तव शुक्रा भ्राजन्त ईरते। तव ज्योतींष्यर्चयः ॥ ३ ॥

इति चतुर्दशोऽध्यायः, सप्तमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथ पञ्चदशोऽध्यायः

सप्तमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५३५. कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः। को ह कस्मिन्नसि श्रितः ॥ १ ॥

१५३६. त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः। सखा सखिभ्य ईड्यः ॥ २ ॥

१५३७. यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ ऋतं बृहत्। अग्ने यक्षि स्वं दमम् ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५३८. ईडेन्यो नमस्यस्तिरस्तमांसि दर्शतः। समग्निरिध्यते वृषा ॥ १ ॥

१५३९. वृषो अग्निः समिध्यतेऽश्वो न देववाहनः। तं हविष्मन्त ईडते ॥ २ ॥

१५४०. वृषणं त्वा वयं वृषन् वृषणः समिधीमहि। अग्ने दीद्यतं बृहत् ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५४१. उत्ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः । अग्ने शुक्रास ईरते ॥ १ ॥

१५४२. उप त्वा जुह्वो३ मम घृताचीर्यन्तु हर्यत । अग्ने हव्या जुषस्व नः ॥ २ ॥

१५४३. मन्द्रं होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभावसुम् । अग्निमीडे स उ श्रवत् ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१५४४. पाहि नो अग्न एकया पाह्यू३त द्वितीयया ।
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो ॥ १ ॥

१५४५. पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अराव्णः प्र स्म वाजेषु नोऽव ।
त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतातय आपिं नक्षामहे वृधे ॥ २ ॥

(५)

ऋषिः—त्रित आप्त्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१५४६. इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमाँ अदर्शि ।
चिकिद्वि भाति भासा बृहतासिक्नीमेति रुशतीमपाजन् ॥ १ ॥

१५४७. कृष्णां यदेनीमभि वर्पसाभूज्जनयन्योषां बृहतः पितुर्जाम् ।
ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन् दिवो वसुभिररतिर्वि भाति ॥ २ ॥

१५४८. भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् ।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन् रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात् ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—उशनाः काव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५४९. कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम् । वराय देव मन्यवे ॥ १ ॥

१५५०. दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो । कदु वोच इदं नमः ॥ २ ॥

१५५१. अधा त्वं हि नस्करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः । वाजद्रविणसो गिरः ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१५५२. अग्न आ याह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।
आ त्वामनक्तु प्रयता हविष्मती यजिष्ठं बर्हिरासदे ॥ १ ॥

१५५३. अच्छा हि त्वा सहसः सूनो अङ्गिरः स्रुचश्चरन्त्यध्वरे ।
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहेऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम् ॥ २ ॥

(८)

ऋषिः—सुदीतिपुरुमीढौ तयोर्वान्यतरः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१५५४. अच्छा नः शीरशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम् ।
अच्छा यज्ञासो नमसा पुरूवसुं पुरुप्रशस्तमूतये ॥ १ ॥

१५५५. अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम् ।
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्वा होता मन्द्रतमो विशि ॥ २ ॥

(९)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५५६. अदाभ्यः पुरएता विशामग्निर्मानुषीणाम्। तूर्णी रथः सदा नवः ॥ १ ॥

१५५७. अभि प्रयांसि वाहसा दाश्वाँ अश्नोति मर्त्यः। क्षयं पावकशोचिषः ॥ २ ॥

१५५८. साह्वान् विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः। अग्निस्तुविश्रवस्तमः ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

१५५९. भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः ।
भद्रा उत प्रशस्तयः ॥ १ ॥

१५६०. भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहिः ।
अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टये ॥ २ ॥

(११)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१५६१. अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो । अस्मे देहि जावेदो महि श्रवः ॥ १ ॥

१५६२. स इधानो वसुष्कविरग्निरीडेन्यो गिरा । रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि ॥ २ ॥

१५६३. क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः । स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—गोपवन आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—आनुष्टुभः प्रगाथः (१ अनुष्टुप्; २-३ गायत्री) ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-३ षड्जः ॥

१५६४. विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।
अग्निं वो दुर्यं वच स्तुषे शूषस्य मन्मभिः ॥ १ ॥

१५६५. यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम् । प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः ॥ २ ॥

१५६६. पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्युद्यता । हव्यान्यैरयद् दिवि ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यो वीतहव्यो वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

१५६७. समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम् ।
विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुम्नैरीमहे जातवेदसम् ॥ १ ॥

१५६८. त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम् ।
देवासश्च मर्त्तासश्च जागृविं विभुं विश्पतिं नमसा नि षेदिरे ॥ २ ॥

१५६९. विभूषन्नग्न उभयाँ अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे ।
यत्ते धीतिं सुमतिमावृणीमहेऽध स्मा नस्त्रिवरूथः शिवो भव ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—प्रयोगो भार्गवः; पावकोऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपतियविष्ठौ सहसः सुतौ तयोर्वान्यतरो वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५७०. उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः । वायोरनीके अस्थिरन् ॥ १ ॥

१५७१. यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस्तस्थावसन्दिनम् । आपश्चिन्नि दधा पदम् ॥ २ ॥

१५७२. पदं देवस्य मीढुषोऽनाधृष्टाभिरूतिभिः । भद्रा सूर्यइवोपदृक् ॥ ३ ॥

इति पञ्चदशोऽध्यायः, सप्तमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः ॥

अथ षोडशोऽध्यायः
सप्तमप्रपाठकस्य तृतीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१५७३. अभि त्वा पूर्वपीतये इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।
समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ॥ १ ॥

१५७४. अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णवि ।
अद्या तमस्य महिमानमायवोऽनु ष्टुवन्ति पूर्वथा ॥ २ ॥

(२)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५७५. प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः । इन्द्राग्नी इष आ वृणे ॥ १ ॥

१५७६. इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम् । साकमेकेन कर्मणा ॥ २ ॥

१५७७. इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः । ऋतस्य पथ्या३ अनु ॥ ३ ॥

१५७८. इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च । युवोरप्तूर्यं हितम् ॥ ४ ॥

(३)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१५७९. शग्ध्यू३ षु शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
भगं न हि त्वा यशसं वसुविदमनु शूर चरामसि ॥ १ ॥

१५८०. पौरो अश्वस्य पुरुकृद्गवामस्युत्सो देव हिरण्ययः ।
न किर्हि दानं परिमर्धिषत् त्वे यद्यद्यामि तदा भर ॥ २ ॥

(४)

ऋषिः—भर्गः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती)॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१५८१. त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये ।
उद्वावृषस्व मघवन् गविष्टय उदिन्द्राश्वमिष्टये ॥ १ ॥

१५८२. त्वं पुरू सहस्त्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे ।
आ पुरन्दरं चकृम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तोऽवसे ॥ २ ॥

(५)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१५८३. यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।
मधोर्न पात्रा प्रथमान्यस्मै प्र स्तोमा यन्त्वग्नये ॥ १ ॥

१५८४. अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मृज्यन्ते देवयवः ।
उभे तोके तनये दस्म विश्पते पर्षि राधो मघोनाम् ॥ २ ॥

(६)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—वरुणः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५८५. इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय । त्वामवस्युरा चके ॥ १ ॥

(७)

ऋषिः—सुकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५८६. कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन् । कया स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥

(८)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१५८७. इन्द्रमिद्देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ॥ १ ॥

१५८८. इन्द्रो मह्ना रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत् ।
इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर इन्द्रे स्वानास इन्दवः ॥ २ ॥

(९)

ऋषिः—विश्वकर्मा भौवनः ॥ देवता—विश्वकर्मा ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१५८९. विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व तन्वां३ स्वाहिते ।
मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु ॥ १ ॥

(१०)

ऋषिः—अनानतः पारुच्छेपिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१५९०. अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि
तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः ।
धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः ।
विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥ १ ॥

१५९१. प्राचीमनु प्रदिशं याति चेकितत्सं रश्मिभिर्यतते
दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः ।
अग्मन्नुक्थानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन् ।
वज्रश्च यद्भवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता ॥ २ ॥

१५९२. त्वं ह त्यत्पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि
स्व आ दम ऋतस्य धीतिभिर्दमे ।
परावतो न साम तद्यत्रा रणन्ति धीतयः ।
त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—पूषा ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५९३. उत नो गोषणिं धियमश्वसां वाजसामुत। नृवत्कृणुह्यूतये ॥ १ ॥

(१२)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५९४. शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः । विदा कामस्य वेनतः ॥ १ ॥

(१३)

ऋषिः—ऋजिश्वाः ॥ देवता—विश्वदेवाः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५९५. उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये। सुमृडीका भवन्तु नः ॥ १ ॥

(१४)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—द्यावापृथिव्यौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५९६. प्र वां महि द्यवी अभ्युपस्तुतिं भरामहे। शुची उप प्रशस्तये ॥ १ ॥

१५९७. पुनाने तन्वा मिथः स्वेन दक्षेण राजथः। ऊह्याथे सनादृतम् ॥ २ ॥

१५९८. मही मित्रस्य साधथस्तरन्ती पिप्रती ऋतम्। परि यज्ञं नि षेदथुः ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१५९९. अयमु ते समतसि कपोतइव गर्भधिम्। वचस्तच्चिन्न ओहसे ॥ १ ॥

१६००. स्तोत्रं राधानां पते गिर्वाहो वीर यस्य ते। विभूतिरस्तु सूनृता ॥ २ ॥

१६०१. ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो। समन्येषु ब्रवावहै ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—हर्यतः प्रागाथः ॥ देवता—अग्निर्हवींषि वा ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६०२. गाव उप वदावटे मही यज्ञस्य रप्सुदा। उभा कर्णा हिरण्यया ॥ १ ॥

१६०३. अभ्यारमिदद्रयो निषिक्तं पुष्करे मधु। अवटस्य विसर्जने ॥ २ ॥

१६०४. सिञ्चन्ति नमसावटमुच्चाचक्रं परिज्मानम्। नीचीनवारमक्षितम् ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६०५. मा भेम मा श्रमिष्मोग्रस्य सख्ये तव ।
महत्ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम् ॥ १ ॥

१६०६. सव्यामनु स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति ।
मध्वा सम्पृक्ताः सारघेण धेनवस्तूयमेहि द्रवा पिब ॥ २ ॥

(१८)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६०७. इमा उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोऽभि स्तोमैरनूषत ॥ १ ॥

१६०८. अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्रइव पप्रथे ।
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ॥ २ ॥

(१९)

ऋषिः—श्रुष्टिगुः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६०९. यस्यायं विश्व आर्यो दासः शेवधिपा अरिः ।
तिरश्चिदर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत् सो अज्यते रयिः ॥ १ ॥

१६१०. तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्चुतं विप्रासो अर्कमानृचुः ।
अस्मे रयिः पप्रथे वृष्ण्यं शवोऽस्मे स्वानास इन्दवः ॥ २ ॥

(२०)

ऋषिः—पर्वतनारदौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१६११. गोमन्न इन्दो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धनिव ।
शुचिं च वर्णमधि गोषु धारय ॥ १ ॥

१६१२. स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः ।
सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव ॥ २ ॥

१६१३. सनेमि त्वमस्मदा अदेवं कं चिदत्रिणम् ।
साह्वाँ इन्दो परि बाधो अप द्वयुम् ॥ ३ ॥

(२१)

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

१६१४. अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मध्वाभ्यञ्जते ।
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमप्सु गृभ्णते ॥ १ ॥

१६१५. विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धारात्यन्धो अर्षति ।
अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचमत्यो न क्रीडन्नसरद् वृषा हरिः ॥ २ ॥

१६१६. अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्पितः ।
हरिर्घृतस्नुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः ॥ ३ ॥

इति षोडशोऽध्यायः, सप्तमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ सप्तदशोऽध्यायः

अष्टमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६१७. विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः। चनो धाः सहसो यहो ॥ १ ॥

१६१८. यच्चिद्धि शश्वता तना देवंदेवं यजामहे। त्वे इद्धूयते हविः ॥ २ ॥

१६१९. प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः। प्रियाः स्वग्नयो वयम् ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६२०. इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः। अस्माकमस्तु केवलः ॥ १ ॥

१६२१. स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि। अस्मभ्यमप्रतिष्कुतः ॥ २ ॥

१६२२. वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियर्त्योजसा। ईशानो अप्रतिष्कुतः ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६२३. त्वं नश्चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
अस्य रायस्त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः ॥ १ ॥

१६२४. पर्षि तोकं तनयं पर्तृभिष्ट्वमदब्धैरप्रयुत्वभिः ।
अग्ने हेडांसि दैव्या युयोधि नोऽदेवानि ह्वरांसि च ॥ २ ॥

(४)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१६२५. किमित्ते विष्णो परिचक्षि नाम प्र यद्ववक्षे शिपिविष्टो अस्मि।
मा वर्पो अस्मदप गूह एतद्यदन्यरूपः समिथे बभूथ ॥ १ ॥

१६२६. प्र तत्ते अद्य शिपिविष्ट हव्यमर्यः शंसामि वयुनानि विद्वान्।
तं त्वा गृणामि तवसमतव्यान् क्षयन्तमस्य रजसः पराके ॥ २ ॥

१६२७. वषट् ते विष्णवास आ कृणोमि तन्मे जुषस्व शिपिविष्ट हव्यम्।
वर्धन्तु त्वा सुष्टुतयो गिरो मे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—१ वायुः; २-३ इन्द्रवायू ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१६२८. वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु ।
आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता ॥ १ ॥

१६२९. इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिमर्हथः ।
युवां हि यन्तीन्दवो निम्नमापो न सध्र्यक् ॥ २ ॥

१६३०. वायविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती ।
नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—रेभसूनू काश्यपौ ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१६३१. अध क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहसे ।
यदी विवस्वतो धियो हरिं हिन्वन्ति यातवे ॥ १ ॥

१६३२. तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः ।
यं गाव आसभिर्दधुः पुरा नूनं च सूरयः ॥ २ ॥

१६३३. तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत ।
उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६३४. अश्वं न त्वा वारवन्तं वन्दध्या अग्निं नमोभिः । सम्राजन्तमध्वराणाम् ॥ १ ॥

१६३५. स घा नः सूनुः शवसा पृथुप्रगामा सुशेवः । मीढ्वाँ अस्माकं बभूयात् ॥ २ ॥

१६३६. स नो दूराच्चासाच्च नि मर्त्यादघायोः । पाहि सदमिद्विश्वायुः ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६३७. त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि विश्वा असि स्पृधः ।
अशस्तिहा जनिता वृत्रतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः ॥ १ ॥

१६३८. अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।
विश्वास्ते स्पृधः श्नथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि ॥ २ ॥

(९)

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६३९. यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद्भूमिं व्यवर्तयत्। चक्राण ओपशं दिवि ॥ १ ॥

१६४०. व्या३न्तरिक्षमतिरन् मदे सोमस्य रोचना। इन्द्रो यदभिनद्वलम् ॥ २ ॥

१६४१. उद्गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन्गुहा सतीः। अर्वाञ्चं नुनुदे वलम् ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६४२. त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्ष्वायतम्। आ च्यावयस्यूतये ॥ १ ॥

१६४३. युध्मं सन्तमनर्वाणं सोमपामनपच्युतम्। नरमवार्यक्रतुम् ॥ २ ॥

१६४४. शिक्षा ण इन्द्र राय आ पुरु विद्वाँ ऋचीषम। अवा नः पार्ये धने ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१६४५. तव त्यदिन्द्रियं बृहत्तव दक्षमुत क्रतुम् ।
वज्रं शिशाति धिषणा वरेण्यम् ॥ १ ॥

१६४६. तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः ।
त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे ॥ २ ॥

१६४७. त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः ।
त्वां शर्धो मदत्यनु मारुतम् ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६४८. नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः। अमैरमित्रमर्दय ॥ १ ॥

१६४९. कुवित्सु नो गविष्टयेऽग्ने संवेषिषो रयिम्। उरुकृदुरु णस्कृधि ॥ २ ॥

१६५०. मा नो अग्ने महाधने परा वर्ग्भारभृद्यथा। संवर्गं सं रयिं जय ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वत्सः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६५१. समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । समुद्रायेव सिन्धवः ॥ १ ॥

१६५२. वि चिद्वृत्रस्य दोधतः शिरो बिभेद वृष्णिना । वज्रेण शतपर्वणा ॥ २ ॥

१६५३. ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत्समवर्त्तयत् । इन्द्रश्चर्मेव रोदसी ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१ एकपदापङ्क्तिः; २-३ गायत्री ॥ स्वरः—१ पञ्चमः; २-३ षड्जः ॥

१६५४. सुमन्मा वस्वी रन्ती सूनरी ॥ १ ॥

१६५५. सरूप वृषन्ना गहीमौ भद्रौ धुर्यावभि । ताविमा उप सर्पतः ॥ २ ॥

१६५६. नीव शीर्षाणि मृढ्वं मध्य आपस्य तिष्ठति । शृङ्गेभिर्दशभिर्दिशन् ॥ ३ ॥

इति सप्तदशोऽध्यायः, अष्टमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

अथाष्टादशोऽध्यायः

अष्टमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः प्रियमेधश्चाङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६५७. पन्यंपन्यमित् सोतार आ धावत मद्याय । सोमं वीराय शूराय ॥ १ ॥

१६५८. एह हरी ब्रह्मयुजा शग्मा वक्षतः सखायम् । इन्द्रं गीर्भिर्गिर्वणसम् ॥ २ ॥

१६५९. पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्नारे अस्मत् । नि यमते शतमूतिः ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—श्रुतकक्षः सुकक्षो वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६६०. आ त्वा विशन्त्विन्दवः समुद्रमिव सिन्धवः । न त्वामिन्द्राति रिच्यते ॥ १ ॥

१६६१. विव्यक्थ महिना वृषन्भक्षं सोमस्य जागृवे । य इन्द्र जठरेषु ते ॥ २ ॥

१६६२. अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन् । अरं धामभ्य इन्दवः ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—शुनःशेप आजीगर्तिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६६३. जराबोध तद्विविड्ढि विशेविशे यज्ञियाय। स्तोमं रुद्राय दृशीकम् ॥ १ ॥

१६६४. स नो महाँ अनिमानो धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः। धिये वाजाय हिन्वतु ॥ २ ॥

१६६५. स रेवाँइव विश्पतिर्दैव्यः केतुः शृणोतु नः। उक्थैरग्निर्बृहद्भानुः ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—शंयुर्बार्हस्पत्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६६६. तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने। शं यद् गवे न शाकिने ॥ १ ॥

१६६७. न घा वसुर्नि यमते दानं वाजस्य गोमतः। यत् सीमुपश्रवद्गिरः ॥ २ ॥

१६६८. कुवित्सस्य प्र हि व्रजं गोमन्तं दस्युहा गमत्। शचीभिरप नो वरत् ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—मेधातिथिः ॥ देवता—विष्णुः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६६९. इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पांसुले ॥ १ ॥

१६७०. त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन् ॥ २ ॥

१६७१. विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा ॥ ३ ॥

१६७२. तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम् ॥ ४ ॥

१६७३. तद्विप्रासो विपन्युवो जागृवांसः समिन्धते। विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ ५ ॥

१६७४. अतो देवा अवन्तु नो यतो विष्णुर्विचक्रमे। पृथिव्या अधि सानवि ॥ ६ ॥

(६)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥

स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६७५. मो षु त्वा वाघतश्च नारे अस्मन्नि रीरमन् ।

आरात्ताद्वा सधमादं न आ गहीह वा सन्नुप श्रुधि ॥ १ ॥

१६७६. इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते ।

इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पादमा दधुः ॥ २ ॥

(७)

ऋषिः—आयुः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६७७. अस्तावि मन्म पूर्व्यं ब्रह्मेन्द्राय वोचत ।
पूर्वीर्ऋतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत ॥ १ ॥

१६७८. समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम् ।
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः ॥ २ ॥

(८)

ऋषिः—अम्बरीष ऋजिश्वा च ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१६७९. इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे ।
नरे च दक्षिणावते वीराय सदनासदे ॥ १ ॥

१६८०. तं सखायः पुरूरुचं वयं यूयं च सूरयः ।
अश्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम् ॥ २ ॥

१६८१. परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
यो देवान्विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६८२. कस्तमिन्द्र त्वा वसवा मर्त्यो दधर्षति ।
श्रद्धा हि ते मघवन् पार्ये दिवि वाजी वाजं सिषासति ॥ १ ॥

१६८३. मघोनः स्म वृत्रहत्येषु चोदय ये ददति प्रिया वसु ।
तव प्रणीती हर्यश्व सूरिभिर्विश्वा तरेम दुरिता ॥ २ ॥

(१०)

ऋषिः—विश्वमना वैयश्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१६८४. एदु मधोर्मदिन्तरं सिञ्चाध्वर्यो अन्धसः ।
एवा हि वीर स्तवते सदावृधः ॥ १ ॥

१६८५. इन्द्र स्थातर्हरीणां न किष्टे पूर्व्यस्तुतिम् ।
उदानंश शवसा न भन्दना ॥ २ ॥

१६८६. तं वो वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः ।
अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम् ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

१६८७. तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे । देवत्रा हव्यमूहिषे ॥ १ ॥

१६८८. विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषमग्निमीडिष्व यन्तुरम् ।
अस्य मेधस्य सोम्यस्य सोभरे प्रेमध्वराय पूर्व्यम् ॥ २ ॥

(१२)

ऋषिः—सप्तर्षयः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६८९. आ सोम स्वानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया ।
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दध्रिषे ॥ १ ॥

१६९०. स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीढ्वान्त्सप्तिर्न वाजयुः ।
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रेभिर्ऋक्वभिः ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—कलिः प्रागाथः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१६९१. वयमेनमिदा ह्योऽपीपेमेह वज्रिणम् ।
तस्मा उ अद्य सवने सुतं भरा नूनं भूषत श्रुते ॥ १ ॥

१६९२. वृकश्चिदस्य वारण उरामथिरा वयुनेषु भूषति ।
सेमं न स्तोमं जुजुषाण आ गहीन्द्र प्र चित्रया धिया ॥ २ ॥

(१४)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्राग्नी ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१६९३. इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः । तद्वां चेति प्र वीर्यम् ॥ १ ॥

१६९४. इन्द्राग्नी अपसस्पर्युप प्र यन्ति धीतयः। ऋतस्य पथ्या३ अनु॥ २॥

१६९५. इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च। युवोरप्तूर्यं हितम्॥ ३॥

(१५)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः॥ देवता—इन्द्रः॥ छन्दः—बृहती॥ स्वरः—मध्यमः॥

१६९६. क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद्वयो दधे ।
अयं यः पुरो विभिनत्योजसा मन्दानः शिप्र्यन्धसः ॥ १॥

१६९७. दाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।
न किष्ट्वा नि यमदा सुते गमो महाँश्चरस्योजसा ॥ २॥

१६९८. य उग्रः सन्ननिष्टृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः ।
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्धवं नेन्द्रो योषत्या गमत् ॥ ३॥

(१६)

ऋषिः—निध्रुविः काश्यपः॥ देवता—पवमानः सोमः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१६९९. पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः। अभि विश्वानि काव्या॥ १॥

१७००. पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत। पृथिव्या अधि सानवि॥ २॥

१७०१. पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः। घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः॥ ३॥

(१७)

ऋषिः—विश्वामित्रः॥ देवता—इन्द्राग्नी॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१७०२. तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापराजिता। इन्द्राग्नी वाजसातमा॥ १॥

१७०३. प्र वामर्चन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः। इन्द्राग्नी इष आ वृणे॥ २॥

१७०४. इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम्। साकमकेन कर्मणा॥ ३॥

(१८)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः॥ देवता—अग्निः॥ छन्दः—गायत्री॥ स्वरः—षड्जः॥

१७०५. उप त्वा रणवसन्दृशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत। अग्ने ससृज्महे गिरः॥ १॥

१७०६. उप च्छायामिव घृणेरगन्म शर्म ते वयम्। अग्ने हिरण्यसन्दृशः॥ २॥

१७०७. य उग्रइव शर्यहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः। अग्ने पुरो रुरोजिथ॥ ३॥

(१९)

ऋषिः—भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७०८. ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्। अजस्रं घर्ममीमहे ॥ १ ॥

१७०९. य इदं प्रतिपप्रथे यज्ञस्य स्वरुत्तिरन्। ऋतूनुत्सृजते वशी ॥ २ ॥

१७१०. अग्निः प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य। सम्राडेको विराजति ॥ ३ ॥

इत्यष्टादशोऽध्यायः, अष्टमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः ॥

अथैकोनविंशोऽध्यायः

अष्टमप्रपाठकस्य तृतीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—विरूप आङ्गिरसः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७११. अग्निः प्रत्नेन जन्मना शुम्भानस्तन्वां३ स्वाम्। कविर्विप्रेण वावृधे ॥ १ ॥

१७१२. ऊर्जो नपातमा हुवेऽग्निं पावकशोचिषम्। अस्मिन् यज्ञे स्वध्वरे ॥ २ ॥

१७१३. स नो मित्रमहस्त्वमग्ने शुक्रेण शोचिषा। देवैरा सत्सि बर्हिषि ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७१४. उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः। नुदस्व याः परिस्पृधः ॥ १ ॥

१७१५. अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते। स्तवा अबिभ्युषा हृदा ॥ २ ॥

१७१६. अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या। रुज यस्त्वा पृतन्यति ॥ ३ ॥

१७१७. तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम्। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ॥ ४ ॥

(३)

ऋषिः—विश्वामित्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बृहती ॥ स्वरः—मध्यमः ॥

१७१८. आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः ।
मा त्वा के चिन्नि येमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥ १ ॥

१७१९. वृत्रखादो वलं रुजः पुरां दर्मो अपामजः ।
स्थाता रथस्य हर्योरभिस्वर इन्द्रो दृढा चिदारुजः ॥ २ ॥

१७२०. गम्भीराँ उदधीँरिव क्रतुं पुष्यसि गाइव ।
प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा ह्रदं कुल्याइवाशत ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—देवातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः
(१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१७२१. यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।
आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब ॥ १ ॥

१७२२. मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्दवो राधोदेयाय सुन्वते ।
आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद्दधिषे सहः ॥ २ ॥

(५)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती,
२ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१७२३. त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः ॥ १ ॥

१७२४. मा ते राधांसि मा त ऊतयो वसोऽस्मान् कदा चना दभन् ।
विश्वा च न उपमिमीहि मानुष वसूनि चर्षणिभ्य आ ॥ २ ॥

(६)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७२५. प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः । दिवो अदर्शि दुहिता ॥ १ ॥

१७२६. अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी । सखा भूदश्विनोरुषाः ॥ २ ॥

१७२७. उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि । उतोषो वस्व ईशिषे ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—गायत्री ॥
स्वरः—षड्जः ॥

१७२८. एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः । स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥ १ ॥

१७२९. या दस्रा सिन्धुमातरा मनोतरा रयीणाम् । धिया देवा वसुविदा ॥ २ ॥

१७३०. वच्यन्ते वां ककुहासो जूर्णायामधि विष्टपि । यद्वां रथो विभिष्पतात् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१७३१. उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति ।
येन तोकं च तनयं च धामहे ॥ १ ॥

१७३२. उषो अद्येह गोमत्यश्वावति विभावरि ।
रेवदस्मे व्युच्छ सूनृतावति ॥ २ ॥

१७३३. युङ्क्ष्वा हि वाजिनीवत्यश्वाँ अद्यारुणाँ उषः ।
अथा नो विश्वा सौभगान्या वह ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—उष्णिक् ॥ स्वरः—ऋषभः ॥

१७३४. अश्विना वर्तिरस्मदा गोमद् दस्रा हिरण्यवत् ।
अर्वाग्रथं समनसा नि यच्छतम् ॥ १ ॥

१७३५. एह देवा मयोभुवा दस्रा हिरण्यवर्त्तनी ।
उषर्बुधो वहन्तु सोमपीतये ॥ २ ॥

१७३६. यावित्था श्लोकमा दिवो ज्योतिर्जनाय चक्रथुः ।
आ न ऊर्जं वहतमश्विना युवम् ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—वसुश्रुत आत्रेयः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१७३७. अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः ।
अस्तमर्वन्त आशवोऽस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ १ ॥

१७३८. अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः ।
अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यमिषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ २ ॥

१७३९. सो अग्निर्यो वसुर्गृणे सं यमायन्ति धेनवः ।
समर्वन्तो रघुद्रुवः सं सुजातासः सूरय इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—सत्यश्रवा आत्रेयः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१७४०. महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती ।
यथा चिन्नो अबोधयः सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ १ ॥

१७४१. या सुनीथे शौचद्रथे व्यौच्छो दुहितर्दिवः ।
सा व्युच्छ सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ २ ॥

१७४२. सा नो अद्याभरद्वसुर्व्युच्छा दुहितर्दिवः ।
यो व्यौच्छः सहीयसि सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—अवस्युरात्रेयः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—पङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१७४३. प्रति प्रियतमं रथं वृषणं वसुवाहनम् ।
स्तोता वामश्विनावृषि स्तोमेभिर्भूषति प्रति माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ १ ॥

१७४४. अत्यायातमश्विना तिरो विश्वा अहं सना ।
दस्रा हिरण्यवर्त्तनी सुषुम्णा सिन्धुवाहसा माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ २ ॥

१७४५. आ नो रत्नानि बिभ्रतावश्विना गच्छतं युवम् ।
रुद्रा हिरण्यवर्तनी जुषाणा वाजिनीवसू माध्वी मम श्रुतं हवम् ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—बुधगविष्ठिरावात्रेयौ ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१७४६. अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् ।
यह्वाइव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सस्रते नाकमच्छ ॥ १ ॥

१७४७. अबोधि होता यजथाय देवानूर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात् ।
समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान् देवस्तमसो निरमोचि ॥ २ ॥

१७४८. यदीं गणस्य रशनामजीगः शुचिरङ्क्ते शुचिभिर्गोभिरग्निः ।
आद्दक्षिणा युज्यते वाजयन्त्युत्तानामूर्ध्वो अधयज्जुहूभिः ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—कुत्स आङ्गिरसः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१७४९. इदं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ट विभ्वा ।
यथा प्रसूता सवितुः सवायैवा रात्र्युषसे योनिमारैक् ॥ १ ॥

१७५०. रुशद्वत्सा रुशती श्वेत्यागादारैगु कृष्णा सदनान्यस्याः ।
समानबन्धू अमृते अनूची द्यावा वर्णं चरत आमिनाने ॥ २ ॥

१७५१. समानो अध्वा स्वस्रोरनन्तस्तमन्यान्या चरतो देवशिष्टे ।
न मेथेते न तस्थतुः सुमेके नक्तोषासा समनसा विरूपे ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—अत्रिः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१७५२. आ भात्यग्निरुषसामनीकमुद्विप्राणां देवया वाचो अस्थुः ।
अर्वाञ्चा नूनं रथ्येह यातं पीपिवांसमश्विना घर्ममच्छ ॥ १ ॥

१७५३. न संस्कृतं प्र मिमीतो गमिष्ठान्ति नूनमश्विनोपस्तुतेह ।
दिवाभिपित्वेऽवसागमिष्ठा प्रत्यवर्त्तिं दाशुषे शम्भविष्ठा ॥ २ ॥

१७५४. उता यातं संगवे प्रातरह्नो मध्यन्दिन उदिता सूर्यस्य ।
दिवा नक्तमवसा शन्तमेन नेदानीं पीतिरश्विना ततान ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—गोतमो राहूगणः ॥ देवता—उषाः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

१७५५. एता उ त्या उषसः केतुमक्रत पूर्वे अर्धे रजसो भानुमञ्जते ।
निष्कृण्वाना आयुधानीव धृष्णवः प्रति गावोऽरुषीर्यन्ति मातरः ॥ १ ॥

१७५६. उदपप्तन्नरुणा भानवो वृथा स्वायुजो अरुषीर्गा अयुक्षत ।
अक्रन्नुषासो वयुनानि पूर्वथा रुशन्तं भानुमरुषीरशिश्रयुः ॥ २ ॥

१७५७. अर्चन्ति नारीरपसो न विष्टिभिः समानेन योजनेना परावतः ।
इषं वहन्तीः सुकृते सुदानवे विश्वेदह यजमानाय सुन्वते ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—दीर्घतमा औचथ्यः ॥ देवता—अश्विनौ ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

१७५८.. अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो व्यू३षाश्चन्द्रा मह्यावो अर्चिषा।
आयुक्षातामश्विना यातवे रथं प्रासावीद्देवः सविता जगत् पृथक् ॥ १ ॥

१७५९. यद्युञ्जाथे वृषणमश्विना रथं घृतेन नो मधुना क्षत्रमुक्षतम्।
अस्माकं ब्रह्म पृतनासु जिन्वतं वयं धना शूरसाता भजेमहि ॥ २ ॥

१७६०. अर्वाङ् त्रिचक्रो मधुवाहनो रथो जीराश्वो अश्विनोर्यातु सुष्टुतः।
त्रिबन्धुरो मघवा विश्वसौभगः शं न आ वक्षद् द्विपदे चतुष्पदे ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—अवत्सारः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७६१.. प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः। अच्छा वाजं सहस्त्रिणम् ॥ १ ॥

१७६२. अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति। हरिस्तुञ्जान आयुधा ॥ २ ॥

१७६३. स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः। श्येनो न वंसु षीदति ॥ ३ ॥

१७६४. स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि। पुनान इन्दवा भर ॥ ४ ॥

इत्येकोनविंशोऽध्यायः, अष्टमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

अथ विंशोऽध्यायः

नवमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः

(१)

ऋषिः—नृमेधः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७६५. प्रास्य धारा अक्षरन् वृष्णः सुतस्यौजसः। देवाँ अनु प्रभूषतः ॥ १ ॥

१७६६. सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा। ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम् ॥ २ ॥

१७६७. सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो। वर्धा समुद्रमुक्थ्य ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—द्विपदा गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७६८. एष ब्रह्मा य ऋत्विय इन्द्रो नाम श्रुतो गृणे ॥ १ ॥

१७६९. त्वामिच्छवसस्पते यन्ति गिरो न संयतः ॥ २ ॥

१७७०. वि स्रुतयो यथा पथ इन्द्र त्वद् यन्तु रातयः ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—प्रियमेधः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—आनुष्टुभः प्रगाथः (१ अनुष्टुप्, २-३ गायत्री) ॥ स्वरः—१ गान्धारः; २-३ षड्जः ॥

१७७१. आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि ।
तुविकूर्मिमृतीषहमिन्द्रं शविष्ठ सत्पतिम् ॥ १ ॥

१७७२. तुविशुष्म तुविक्रतो शचीवो विश्वया मते । आ पप्राथ महित्वना ॥ २ ॥

१७७३. यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः । हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—दीर्घतमा औचथ्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—उष्णिक् (१ विराट्, २ भुरिक्, ३ निचृत्) ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१७७४. आ यः पुरं नार्मिणीमदीदेदत्यः कविर्नभन्यो३ नार्वा ।
सूरो न रुरुक्वाञ्छतात्मा ॥ १ ॥

१७७५. अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात् ।
होता यजिष्ठो अपां सधस्थे ॥ २ ॥

१७७६. अयं स होता यो द्विजन्मा विश्वा दधे वार्याणि श्रवस्या ।
मर्तो यो अस्मै सुतुको ददाश ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—वामदेवः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—पदपङ्क्तिः ॥ स्वरः—पञ्चमः ॥

१७७७. अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्रं हृदिस्पृशम् ।
ऋध्यामा त ओहैः ॥ १ ॥

१७७८. अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः ।
रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ ॥ २ ॥

१७७९. एभिर्नो अर्कैर्भवा नो अर्वाङ् स्वा३र्ण ज्योतिः ।
अग्ने विश्वेभिः सुमना अनीकैः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः ॥ देवता—अग्निरश्विनावुषाश्च ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१७८०. अग्ने विवस्वदुषसश्चित्रं राधो अमर्त्य ।
आ दाशुषे जातवेदो वहा त्वमद्या देवाँ उषर्बुधः ॥ १ ॥

१७८१. जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनोऽग्ने रथीरध्वराणाम् ।
सजूरश्विभ्यामुषसा सुवीर्यमस्मे धेहि श्रवो बृहत् ॥ २ ॥

(७)

ऋषिः—बृहदुक्थो वामदेव्यः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१७८२. विधुं दद्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार ।
देवस्य पश्य काव्यं महित्वाद्या ममार स ह्यः समान ॥ १ ॥

१७८३. शाक्मना शाको अरुणः सुपर्ण आ यो महः शूरः सनादनीडः ।
यच्चिकेत सत्यमित्तन्न मोघं वसु स्पार्हमुत जेतोत दाता ॥ २ ॥

१७८४. ऐभिर्ददे वृष्ण्या पौंस्यानि येभिरौक्षद् वृत्रहत्याय वज्री ।
ये कर्मणः क्रियमाणस्य मह्न ऋतेकर्ममुदजायन्त देवाः ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—बिन्दुः पूतदक्षो वा ॥ देवता—मरुतः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७८५. अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः । उत स्वराजो अश्विना ॥ १ ॥

१७८६. पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पूतस्य वरुणः । त्रिषधस्थस्य जावतः ॥ २ ॥

१७८७. उतो न्वस्य जोषमा इन्द्रः सुतस्य गोमतः । प्रातर्होतेव मत्सति ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—जमदग्निर्भार्गवः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१७८८. बण्महाँ असि सूर्य बडादित्य महाँ असि ।
महस्ते सतो महिमा पनिष्टम मह्ना देव महाँ असि ॥ १ ॥

१७८९. बट् सूर्य श्रवसा महाँ असि सत्रा देव महाँ असि ।
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम् ॥ २ ॥

(१०)

ऋषिः—सुकक्षः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१७९०. उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते। उप नो हरिभिः सुतम् ॥ १ ॥

१७९१. द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः। उप नो हरिभिः सुतम् ॥ २ ॥

१७९२. त्वं हि वृत्रहन्नेषां पाता सोमानामसि। उप नो हरिभिः सुतम् ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—भुरिगनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१७९३. प्र वो महे महेवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् ।
विशः पूर्वीः प्र चर चर्षणिप्राः ॥ १ ॥

१७९४. उरुव्यचसे महिने सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः ।
तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः ॥ २ ॥

१७९५. इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे सहध्यै ।
हर्यश्वाय बर्हया समापीन् ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—बार्हतः प्रगाथः (१ बृहती, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ मध्यमः; २ पञ्चमः ॥

१७९६. यदिन्द्र यावतस्त्वमेतावदहमीशीय ।
स्तोतारमिद्दधिषे रदावसो न पापत्वाय रंसिषम् ॥ १ ॥

१७९७. शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद् विदे ।
न हि त्वदन्यन्मघवन्न आप्यं वस्यो अस्ति पिता च न ॥ २ ॥

(१३)

ऋषिः—वसिष्ठः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—विराडनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१७९८. श्रुधी हवं विपिपानस्याद्रेर्बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम् ।
कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा ॥ १ ॥

१७९९. न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान् ।
सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि ॥ २ ॥

१८००. भूरि हि ते सवना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित् ।
मारे अस्मन्मघवं ज्योक्कः ॥ ३ ॥

(१४)

ऋषिः—सुदाः पैजवनः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—शक्वरी ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१८०१. प्रो ष्वस्मै पुरोरथमिन्द्राय शूषमर्चत ।
अभीके चिदु लोककृत् सङ्गे समत्सु वृत्रहा ।
अस्माकं बोधि चोदिता नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ १ ॥

१८०२. त्वं सिन्धूँरवासृजोऽधराचो अहन्नहिम् ।
अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुष्यसि वार्यम् ।
तं त्वा परि ष्वजामहे नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ २ ॥

१८०३. वि षु विश्वा अरातयोऽर्यो नशन्त नो धियः ।
अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति ।
या ते रातिर्ददिर्वसु नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ॥ ३ ॥

(१५)

ऋषिः—मेधातिथिः काण्वः, प्रियमेधश्चाङ्गिरसः ॥ देवता—इन्द्रः ॥
छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८०४. रेवाँ इद्रेवत स्तोता स्यात्त्वावतो मघोनः । प्रेदु हरिवः सुतस्य ॥ १ ॥

१८०५. उक्थं च न शस्यमानं नागो रयिरा चिकेत । न गायत्रं गीयमानम् ॥ २ ॥

१८०६. मा न इन्द्र पीयत्नवे मा शर्धते परा दाः । शिक्षा शचीवः शचीभिः ॥ ३ ॥

(१६)

ऋषिः—नीपातिथिः काण्वः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—अनुष्टुप् ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१८०७. एन्द्र याहि हरिभिरुप कण्वस्य सुष्टुतिम् ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ १ ॥

१८०८. अत्रा वि नेमिरेषामुरां न धूनुते वृकः ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ २ ॥

१८०९. आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण वक्षतु ।
दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो ॥ ३ ॥

(१७)

ऋषिः—जमदग्निर्भार्गवः ॥ देवता—पवमानः सोमः ॥ छन्दः—द्विपदागायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८१०. पवस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः ॥ १ ॥

१८११. ते सुतासो विपश्चितः शुक्रा वायुमसृक्षत ॥ २ ॥

१८१२. असृग्रं देववीतये वाजयन्तो रथाइव ॥ ३ ॥

(१८)

ऋषिः—परुच्छेपो दैवोदासिः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—अत्यष्टिः ॥ स्वरः—गान्धारः ॥

१८१३. अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः
सूनुं सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम् ।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा
घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजुह्वानस्य सर्पिषः ॥ १ ॥

१८१४. यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां
विप्र मन्मभिर्विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः ।
परिज्मानमिव द्यां होतारं चर्षणीनाम् ।
शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विशः प्रावन्तु जूतये विशः ॥ २ ॥

१८१५. स हि पुरू चिदोजसा विरुक्मता
दीद्यानो भवति द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः ।
वीडु चिद्यस्य समृतौ श्रुवद्वनेव यत्स्थिरम् ।
निष्षहमाणो यमते नायते धन्वासहा नायते ॥ ३ ॥

इति नवमप्रपाठकस्य प्रथमोऽर्धः ॥

नवमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—अग्निः पावकः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—१-२ विष्टारपङ्क्तिः; ३-५ सतोबृहती; ६ उपरिष्टाज्ज्योतिस्त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—१-५ पञ्चमः; ६ धैवतः ॥

१८१६. अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो ।
बृहद्भानो शवसा वाजमुक्थ्यां३ दधासि दाशुषे कवे ॥ १ ॥
१८१७. पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियर्षि भानुना ।
पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि रोदसी उभे ॥ २ ॥
१८१८. ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर्मन्दस्व धीतिभिर्हितः ।
त्वे इषः सं दधुर्भूरिवर्पसश्चित्रोतयो वामजाताः ॥ ३ ॥
१८१९. इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिरस्मे रायो अमर्त्य ।
स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि दर्शतं क्रतुम् ॥ ४ ॥
१८२०. इष्कर्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः ।
रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसिं रयिम् ॥ ५ ॥
१८२१. ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतमग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः ।
श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा ॥ ६ ॥

(२)

ऋषिः—सोभरिः काण्वः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—काकुभः प्रगाथः (१ ककुबुष्णिक्, २ सतोबृहती) ॥ स्वरः—१ ऋषभः; २ पञ्चमः ॥

१८२२. प्र सो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाजकर्मभिः ।
यस्य त्वं सख्यमाविथ ॥ १ ॥
१८२३. तव द्रप्सो नीलवान् वाश ऋत्विय इन्धानः सिष्णवा ददे ।
त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि ॥ २ ॥

(३)

ऋषिः—अरुणो वैतहव्यः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—जगती ॥ स्वरः—निषादः ॥

१८२४. तमोषधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः ।
तमित्समानं वनिनश्च वीरुधोऽन्तर्वतीश्च सुवते च विश्वहा ॥ १ ॥

(४)

ऋषिः—अग्निश्चाक्षुषः प्रजापतिर्वा ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८२५. अग्निरिन्द्राय पवते दिवि शुक्रो वि राजति। महिषीव वि जायते ॥ १ ॥

(५)

ऋषिः—अवत्सारः काश्यपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१८२६. यो जागार तमृचः कामयन्ते यो जागार तमु सामानि यन्ति ।
यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥ १ ॥

(६)

ऋषिः—अवत्सारः काश्यपः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१८२७. अग्निर्जागार तमृचः कामयन्तेऽग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति।
अग्निर्जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः ॥ १ ॥

(७)

ऋषिः—मृगः ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८२८. नमः सखिभ्यः पूर्वसद्भ्यो नमः साकंनिषेभ्यः। युञ्जे वाचं शतपदीम् ॥ १ ॥

१८२९. युञ्जे वाचं शतपदीं गाये सहस्त्रवर्तनि। गायत्रं त्रैष्टुभं जगत् ॥ २ ॥

१८३०. गायत्रं त्रैष्टुभं जगद् विश्वा रूपाणि सम्भृता। देवा ओकांसि चक्रिरे ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—अवत्सारो वत्सप्रीर्वा ॥ देवता—अग्निः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८३१. अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरिन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्रः। सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः ॥ १ ॥

१८३२. पुनरूर्जा नि वर्तस्व पुनरग्न इषायुषा। पुनर्नः पाह्यंहसः ॥ २ ॥

१८३३. सह रय्या नि वर्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया। विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८३४. यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत्। स्तोता मे गोसखा स्यात् ॥ १ ॥

१८३५. शिक्षेयमस्मै दित्सेयं शचीपते मनीषिणे। यदहं गोपतिः स्याम् ॥ २ ॥

१८३६. धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते। गामश्वं पिप्युषी दुहे ॥ ३ ॥

(१०)

ऋषिः—त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः सिन्धुद्वीपो वाम्बरीषः ॥ देवता—आपः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८३७. आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे ॥ १ ॥

१८३८. यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः ॥ २ ॥

१८३९. तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥ ३ ॥

(११)

ऋषिः—उलो वातायनः ॥ देवता—वायुः ॥ छन्दः—गायत्री ॥ स्वरः—षड्जः ॥

१८४०. वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे। प्र न आयूँषि तारिषत् ॥ १ ॥

१८४१. उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा। स नो जीवातवे कृधि ॥ २ ॥

१८४२. यददो वात ते गृहे३मृतं निहितं गुहा। तस्य नो धेहि जीवसे ॥ ३ ॥

(१२)

ऋषिः—सुपर्णः ॥ देवता—सूर्यः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१८४३. अभि वाजी विश्वरूपो जनित्रं हिरण्ययं बिभ्रदत्कं सुपर्णः ।
सूर्यस्य भानुमृतुथा वसानः परि स्वयं मेधमृज्रो जजान ॥ १ ॥

१८४४. अप्सु रेतः शिश्रिये विश्वरूपं तेजः पृथिव्यामधि यत् सम्बभूव।
अन्तरिक्षे स्वं महिमानं मिमानः कनिक्रन्ति वृष्णो अश्वस्य रेतः ॥ २ ॥

१८४५. अयं सहस्रा परि युक्ता वसानः सूर्यस्य भानुं यज्ञो दाधार ।
सहस्रदाः शतदा भूरिदावा धर्ता दिवो भुवनस्य विश्पतिः ॥ ३ ॥

(१३)

ऋषिः—वेनः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१८४६. नाके सुपर्णमुप यत्पतन्तं हृदा वेनन्तो अभ्यचक्षत त्वा ।
हिरण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुरण्युम् ॥ १ ॥

१८४७. ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थात् प्रत्यङ् चित्रा बिभ्रदस्यायुधानि।
वसानो अत्कं सुरभिं दृशे कं स्वा३र्ण नाम जनत प्रियाणि ॥ २ ॥

१८४८. द्रप्सः समुद्रमभि यज्जिगाति पश्यन् गृध्रस्य चक्षसा विधर्मन् ।
भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानस्तृतीये चक्रे रजसि प्रियाणि ॥ ३ ॥

इति विंशोऽध्यायः, नवमप्रपाठकस्य द्वितीयोऽर्धः ॥

अथैकविंशोऽध्यायः

नवमप्रपाठकस्य तृतीयोऽर्धः

(१)

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१८४९. आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।
सङ्क्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः ॥ १ ॥

१८५०. सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना।
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा ॥ २ ॥

१८५१. स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सं स्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन।
सं सृष्टजित् सोमपा बाहुशर्ध्यू३ग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥

(२)

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—१ बृहस्पतिः; २-३ इन्द्रः ॥
छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१८५२. बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्राँ अपबाधमानः ।
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम् ॥ १ ॥

१८५३. बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।
अभिवीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित् ॥ २ ॥

१८५४. गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा ।
इमं सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम् ॥ ३ ॥

(३)

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१८५५. अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्यो३ऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु ॥ १ ॥

१८५६. इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम् ॥ २ ॥

१८५७. इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्ध उग्रम् ।
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात् ॥ ३ ॥

(४)

ऋषिः—अप्रतिरथ ऐन्द्रः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—त्रिष्टुप् ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१८५८. उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत् सत्वनां मामकानां मनांसि ।
उद् वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः ॥ १ ॥

१८५९. अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ उ देवा अवता हवेषु ॥ २ ॥

१८६०. असौ या सेना मरुतः परेषामभ्येति न ओजसा स्पर्धमाना ।
तां गूहत तमसापव्रतेन यथैतेषामन्यो अन्यं न जानात् ॥ ३ ॥

(५)

ऋषिः—१-२ अप्रतिरथ ऐन्द्रः; ३ पायुर्भारद्वाजः ॥ देवता—१ अप्वा; २ इन्द्रो मरुतो वा; ३ इषवः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २-३ अनुष्टुप् ॥ स्वरः—१ धैवतः; २-३ गान्धारः ॥

१८६१. अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि ।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम् ॥ १ ॥

१८६२. प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्म यच्छतु ।
उग्रा वः सन्तु बाहवोऽनाधृष्या यथासथ ॥ २ ॥

१८६३. अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मसंशिते ।
गच्छामित्रान् प्र पद्यस्व मामीषां कं च नोच्छिषः ॥ ३ ॥

(६)

ऋषिः—पायुर्भारद्वाजः ॥ देवता—१-२ इन्द्रः; ३ संग्रामाशिषः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ अनुष्टुप्; ३ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ धैवतः; २ गान्धारः; ३ पञ्चमः ॥

१८६४. कङ्काः सुपर्णा अनु यन्त्वेनान् गृध्राणामन्नमसावस्तु सेना ।
मैषां मोच्यघहारश्च नेन्द्र वयांस्येनाननुसंयन्तु सर्वान् ॥ १ ॥

१८६५. अमित्रसेनां मघवन्नस्माञ्छत्रुयतीमभि ।
उभौ तामिन्द्र वृत्रहन्नग्निश्च दहतं प्रति ॥ २ ॥

१८६६. यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाइव ।
तत्र नो ब्रह्मणस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु ॥ ३ ॥

(७)

ऋषिः—शासो भारद्वाजः ॥ देवता—इन्द्रः ॥ छन्दः—१-२ अनुष्टुप्; ३ विराड् जगती ॥
स्वरः—१-२ गान्धारः; ३ निषादः ॥

१८६७. वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज ।
वि मन्युमिन्द्र वृत्रहन्नमित्रस्याभिदासतः ॥ १ ॥

१८६८. वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।
यो अस्माँ अभिदासत्यधरं गमया तमः ॥ २ ॥

१८६९. इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ युवानावनाधृष्यौ सुप्रतीकावसह्यौ ।
तौ युञ्जीत प्रथमौ योग आगते याभ्यां जितमसुराणां सहो महत् ॥ ३ ॥

(८)

ऋषिः—शासो भारद्वाजः ॥ देवता—संग्रामाशिषः ॥ छन्दः—१ त्रिष्टुप्; २ अनुष्टुप्;
३ पङ्क्तिः ॥ स्वरः—१ धैवतः; २ गान्धारः; ३ पञ्चमः ॥

१८७०. मर्माणि ते वर्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् ।
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु ॥ १ ॥

१८७१. अन्धा अमित्रा भवताशीर्षाणोऽहयइव ।
तेषां वो अग्निनुन्नानामिन्द्रो हन्तु वरंवरम् ॥ २ ॥

१८७२. यो नः स्वोऽरणो यश्च निष्ठ्यो जिघांसति ।
देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरं शर्म वर्म ममान्तरम् ॥ ३ ॥

(९)

ऋषिः—१ जय ऐन्द्रः; २-३ गोतमो राहूगणः ॥ देवता—१ इन्द्रः; २-३ विश्वेदेवाः ॥
छन्दः—१-२ त्रिष्टुप्; ३ विराट्स्थाना त्रिष्टुप् ॥ ॥ स्वरः—धैवतः ॥

१८७३. मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः ।
सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व ॥ १ ॥

१८७४. भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ २ ॥

१८७५. स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ३ ॥

इत्येकविंशोऽध्यायः, नवमप्रपाठकश्च समाप्तः ॥

इत्युत्तरार्चिकः ॥

इति सामवेदसंहिता ॥

सामवेदमन्त्रानुक्रमणिका

अ

य

—०—



